अंक-79-80
मार्च-2016

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

सहयोग-₹40/-

'भोजपुरी भाषा-समाज' आ लोक-संस्कृति पर विशेष

भाषा समाज पर डा० प्रमोद कुमार तिवारी, डा० अमरनाथ शर्मा के आलेख, बरमेश्वर सिंह के ललित व्यंग्य, बतरस में फागुन-स्व० भोलानाथ गहमरी, पं० चंद्रशेखर मिश्र, प्रेमशीला शुक्ल। डा० रामदेव शुक्ल, डा० रमाशंकर श्रीवास्तव, तुषारकान्त, ब्रजमोहन राय देहाती, जनकदेव जनक के कहानी। प्रकाश उदय, विनोद द्विवेदी, राजगुप्त के कथा-कथक्कड़ी। अक्षय कु० पांडेय, ज्योतिष जोशी, मनोज भावुक, गुलरेज शहजाद, आनन्द संधिदूत, शिवपूजनलाल विद्यार्थी, हीरालाल 'हीरा', शशिप्रेमदेव आदि के गीत गजल। काव्य परम्परा में जगन्नाथ, महेश्वर तिवारी, मधुर नज्मी, भगवती प्र० द्विवेदी, वशिष्ठ अनूप, आसिफ रोहतासवी, विजेन्द्र अनिल आदि के साथ किताब चर्चा, समीक्षा, साहित्यिक गतिविधि आदि स्तंभ।

''पाती –आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात), राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ) कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपध्याय (कुंवरसिंह वि० वि०, आरा), अजय कुमार (आरा), रामयश अविकल (आरा) एवं डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर)।

भोजपुरी-साहित्य के
पठनीय सृजन/प्रकाशन

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

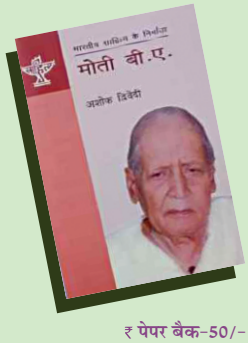

₹ पेपर बैक-50/-

भोजपुरी के नया
पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

जिनिगी के जुआ

(कहानी संकलन)

मुखौटा

(भोजपुरी नाटक)
कन्हैया पाण्डेय

पाती प्रकाशन, टेगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019 पर किताब उपलब्ध बा!
Mobile: +91-8373955162, 9919426249, Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

---

Home | About | पत्रिका आ किताब | पुरनका अँजोरिया | भोजपुरी लिंक | सभकर राय

भोजपुरिका (www.bhojpurika.com)

मनोरंजन | फिल्म | सरोकार | देश आ समाज | खबर | साहित्य | भाषा | स्तम्भ | ब्लॉग

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक: 79-80 | www.bhojpuripaati.com | (तिमाही) मार्च 2016

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

उप-संपादक
विष्णुदेव तिवारी

सह-संपादक
हीरा लाल 'हीरा', सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी

कंपोजिग/ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, अरूण निखंजन

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण चित्र
(गंगा तट, वाराणसी)

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com

संपादन-कार्यालयः-
टेगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001 एवं
एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-19
मो0- 08004375093, 91-9919426249, 91-8373955162

एक अंक पर सहयोग-40/-
सालाना सहयोग-200/-
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

हमार पन्ना –
- **अपना मूल के जनला–समझला के माने**/3–4
- **सबका खातिर**/4

भोजपुरी समाज –
- **'हमपूजक' भोजपुरियन के सेवा भाव**/डा0 प्रमोद कु0 तिवारी/8–10

हस्तक्षेप/भाषा विचार
- **मातृभाषा के महत्व में नेहरू के छवि**/डा0 अमरनाथ शर्मा/11–13

सामयिकी –
- **कुछ सीखऽ ए बबुआ**/मिथिलेश कुमार सिंह/14

ललित-व्यंग्य –
- **भोजपुरी काव्य में नूतन अलंकार योजना**/बरमेश्वर सिंह/35–37

गजल-परम्परा –
- आनन्द संधिदूत, महेश्वर तिवारी, जगन्नाथ, अशोक द्विवेदी/6
- भगवती प्र0 द्विवेदी, मधुर नज्मी, आसिफ रोहतासवी,
- विजेन्द्र अनिल, डा0 वशिष्ठ अनूप/7

कविता/गीत/गजल–
- अक्षय कुमार पांडेय/5 • आनन्द सन्धिदूत/15
- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/16 • हीरालाल 'हीरा'/16
- शिवजी पांडेय रसराज/22 • अशोक कुमार तिवारी/46
- शशिप्रेमदेव/28, • नवचन्द्र तिवारी/28, • मनोज भावुक/33,
- गुलरेज शहजाद/33, • अशोक द्विवेदी/34, • ज्योतिष जोशी/34
- शिवपूजनलाल विद्यार्थी/55

कहानी
- **माँगि आ कोखि**/रामदेव शुक्ल/17–20
- **कबले रहबू**/रमाशंकर श्रीवास्तव/21–22
- **पराया घर के बेटी**/जनकदेव जनक/23–25
- **सौ के नोट**/तुषारकान्त उपाध्याय/26–27
- **बसेरा**/ब्रजमोहन राय देहाती/41–45

ललित बतरस में फागुन
- फागुन बाद न जोहे–में (स्व0) भोलानाथ गहमरी आ पं0 चन्द्रशेखर मिश्र/32
- श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल/60 • होरी रे रसिया/कवर पेज–3

लघुकथा –
- **साँप**/कन्हैया पाण्डेय/20 • **भाषा आ भंडारा**/राजगुप्त/46

इयाद –
- **भोजपुरी के 'आरोही' चौ0 कन्हैया प्र0 सिंह**/शिवपूजनलालविद्यार्थी/38

कथा-कथक्कड़ी –
- **छागल आ पागल**/विनोद द्विवेदी/25 • **भँजेठी**/प्रकाश उदय/40
- **लोकमत**/राजगुप्त/39

गतिविधि/समाचार
- **पूर्वोतर भारत प्रतिनिधि लेखक सम्मेलन**/29–30
- **पटना पुस्तक मेला में ब्रजभूषण मिश्र के किताब–विमोचन**/31
- **लोकमर्मज्ञ पं0 गणेश चौबे क स्मृति समारोह**/31

किताब-चर्चा/
- अशोक द्विवेदी के उपन्यास 'बनचरी'/अजय कुमार/47–48

समीक्षा/पाठकीय–
- मानवीय मूल्यन के सहचरी बनचरी/कन्हैया सिंह सदय/49–50
- कन्हैया पांडेय के रचना–संसार/अशोक द्विवेदी/51–52
- पौराणिक पृष्ठभूमि के नवरचना 'बनचरी'/बरमेश्वर सिंह/52–54
- जनपदीय जीवन के कथासंग्रह 'गुलेल'/डा0 सान्त्वना/54–55
- मरमबेधक कहानी संग्रह 'भंडारघर'/कृष्ण कुमार/56
- 'बनचरी' उपन्यास पढ़ला का बाद/डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव/57–58
- लालित्य भरल 'घमावन'/विजयशंकर पाण्डेय/58–59
- भाव–भगति के भजन/फतेहचंद्र बेचैन/59–60

अपना मूल के जनला समझला के माने

गँवई लोक में पलल–बढ़ल मनई, अगर तनिको संवेदनशील होई आ हृदय –संबाद के मरम बूझे वाला होई, त अपना लोक के स्वर का नेह–नाता आ हिरऊ –भाव के समझ लेई। आज काकी का मुँहें एगो जानल–सुनल पुरान गीत सुनत खा हम एगो दोसरे लोक में पहुँच गउंवीं। हमार आँखि भींजि गउवे आ हम भितरे–भीतर का जाने कौना स्मृति–चित्र के इयाद से तड़फड़ाए लगुवीं। काकी का चलि गइला का बादो ओह गीत का भाव–लय के गूँज–अनुगूँज हमरा भीतर बनल रहुवे आ हम कसमसात रहुवीं। बेटी क बाप भइला आ ओके बियाहला–दान कइला का बाद जवन अनुभव–बोध हमके भइल बा, ऊ जइसे छछाते परतच्छ हो उठुवे। ई सगरी बिकलता ओह वाचिक–संबादे से भइल रहुवे, जवना क माध्यम काकी के सुनवलका गीत रहुवे। पता ना लोकराग के एह गीतन क कवन 'पीर' बा, कवन करूना आ मार्मिक संवेदन शक्ति बा, जहवाँ बुद्धि के ना, हृदय क चलेला, ज्ञान क ना, प्रेम क चलेला। कठकरेजे आदमी ए गीतन का मार्मिक–खिंचाव से बाँच सकेला। संबन्धन क अइसन गाढ़ आ तरल अनुभूति, साइत सोझे हृदय से हृदय खातिर फूटल होहें सऽ।

वाचिक संबाद खाली बोलले–बतियवला से ना होला, चेहरा के भाव–भंगिमा, उतार–चढ़ाव आ क्रिया–व्यवहारो से प्रगट होला। मुँह बिजुकावल, मुँह बनावल भा मुँह फेरल, आँख मटकावल, तरेरल आ मटकियावल जइसन शब्द एही मूक–गहिर संबाद खातिर बनल होई। दरअसल सँग–सँग रहत दिन मास बरिस बीतेला त लोग एक दुसरा का देह के भाषा, ओकरा चाल ढाल आ भंगिमा से परिचित होला आ फेर बे बतवले, बे कहले ओकरा भाव के बूझि लेला भा कयास लगा लेला। आपुसी संग –साथ में पनपल ईहे मौन –बतकही भा संबाद गँवई लोक के परस्पर जोरले–बन्हले रहे। सँग सँग हँसत–रोवत, गावत–बजावत, लड़त–झगरत, काम–धंधा करत ई हृदय–संबाद लोककथा भा लोकगीतन के मरम बूझे में मदद करत रहे। आगा चल के, ई तरक्की के लालसा शहरी भाग–दउर आ पइसा कमइला के चाह–छाँह आ हिरिस मे खतमे होत चलि गइल। अब गीतिया त बा बाकिर ओकरा भाव–भूमि प लोग उतरते नइखे। अब का लडकिन के दादा–दादी, ईया–फूआ वाला गँवई लोक से जोरलो कठिन बा। साइत–संजोग मिलतो बा त ऊ ओह सांस्कृतिक–चेतना का आत्मीयता से कहाँ जुड़ पावत बा ? अब महानगर का इस्कूलन में पढ़े आ ब्यस्त–बाझल मम्मी–डैडी का कलजुगिया संस्कार

वाला लइकन के फेंड़ पौधा, फसल आ साग सब्जी का उपराजन से कवनो लगावे–छुआव नइखे। नाता रिश्ता के मामूली पहिचान त बा, बाकिर ऊ आत्मीय –भाव आ संवेदन के छुवाइये नइखे। हिया का मौन संबाद के अनुभूति–प्रतीति कहाँ से होई ? ऊ ग्रहणशीलता आ भावभूमि के स्तर जवन लोक–स्वर के मरम बूझे आ ओमे डूबि के मन का ओह हूक हुलास आ पीर–कसक के पकड़े, ऊ त लोक में रचले–बसले नू होई। शहर आ आधुनिकता का इन्द्रजाल में रोजी–रोटी, पइसा पद आ तरक्की के ललसा आ हिरिस धीरे–धीरे हमहन के छोट करत हमहन का आवे वाला पीढ़ी के, अपना लोक आ संस्कृति से दूर कइले जाता। पता ना आगा का होई? का दो ई बँचबो करी कि ना?

अपना पसंद–नापसंद के खुसी–नराजगी का सँकरा खोह में समात, लोक से कटत लोग, ओकरा भाषा आ भावभूमियो से कटल जा रहल बा। लोक के स्वर जवना लोकगीतन में संचित बा ओकरा संरक्षन आ बटोरला क बात होता, कतना लोग ओके बटोर सइहार के किताब आ सीडी बनावत बा। बाकि ओकर होई का ? हमहन क अगिली पीढ़ी ओके कतना महत्व दीही, ई सवाल बेचैन करत बा। एह गीतन के सुन के भाव विभोर आ विकल होखे वाली हमहन क पीढी ना रही तब? पुत्र कामना खातिर आ कामना फलित भइला का बाद गवाये वाला सोहर होखे भा सगुन क संझा–पराती, बियाह क गीत होखे भा 'चिरई' बनल बेटी क गीत ''नीबिया क फेड़ जनि कटवइहऽ मोरे बाबा हो, नीमिया चिरइया क बसेर ..'' में छिपल मरमभेदी अनुरोध, लोक–स्वर के अनुभव–संसार आ संबेदन–पीर का भाव भूमि पर उतरल आसान ना होई। ना 'दूध क नेकी' आ मोल माँगे वाला गीत के अन्तर्वेदना अनुभव होई ना जँतसारी के श्रम सीकर से भींजल बिरह–वेदना आ जीवन–संघर्ष

के ब्यथा क साछात्कार। बेटी त नीम का चिरई अस बसेर क के दुसरा देश, दुसरा घरे चल जाई आ 'दूध का नेकी' क जिम्मा भाई पर डाल जाई, भितरी से कतनो अहकी–डहकी बाकि बाबू जी के समझावत जाई कि 'बाबा, माई के खेयाल रखिहऽ !' आ बेटा, ऊहो एक दिन 'गौरी बियाहन' निकली त नया संबंध का उल्लास आभास में ओह 'अनमोल' दूध के मोल भुला जाई। कुछ दिन बितते बियहुती सँग रोजी–रोजिगार में लाग जाई भा नोकरी पर परदेस चल जाई। माई–बाबू अकेल रहि जइहें, बेटी क कहलका इयाद करत ..'सून होइहें अँगना –दुआर !' जीवन–चक्र आ संस्कारन वाला भाव संबाद क हिया से अनुभूति प्रतीति, आवे वाली पीढ़ी के कहाँ से होई ? लडकिइँयें से कारटून आ मूवी देखे वाला लइका–लइकी, 'सास बहू और वो' देख के सयान होत बाड़े सऽ। सन्डे के महतारी बाप सँगे 'माल', आ 'बिग मार्केट' में शापिंग–मनोरंजन अपना लोकस्वर वाली भाषा संस्कृति से कतना दूर।

धीरहीं धीरे, बाकि तेजी से ओरात पुरनका भाव–सुभाव, आत्मीयता आ पारस्परिकता नयकी पीढ़ी के, अपना लोक संस्कृति, संस्कारन आ भाषा–भाव से बिलग कइले जा तिया। कुछ लोग जे तनी–मनी सटल–डटल बा, ओह सब में हिया के मौन संबाद के आत्मीयता क ऊ बहत रहे वाली चेतन लहर नइखे। का गाँव जवार के नवकी पीढ़ी, का आपन गँवई लोक छोड़ के परदेस जाये वाला शहरी माई–बाप ! का ओह लोगन क ई जिमवारी नइखे कि कि अपना माई–बाप आ बाबा–आजी वाला अपना मूल (ओरिजिन) से अपना सन्तानो के जोड़ो ? का नया पीढ़ी के अपना मूल से, अपना लोक आ भाषा–संस्कृति आ संघर्ष–गाथा के जाने–समझे के अधिकार नइखे ? का ऊ अपना मूल आ ओसे जुड़ल पहिचान से वंचित रहिहें सऽ? सोचीं सभे, जल्दी सोचीं ..कहीं देर मत हो जाव !! अइसन जिन होखे कि रउरे लइकवा, रउरे सभ के चीन्हे से इनकार कऽ देव, चीन्हियो जाव त, ओकरा भीतर ऊ भाव–संवेदन आ आदर ना उपजे, जवना क ललसा हमन के रहेला। एही से कहत बानी, कहीं देर ना हो जाव। अपना लोक, ओकरा संस्कृति आ बात–व्यौहार से, अपना आवे वाली पीढ़ी के संस्कारित करीं। ••

सबका खातिर

पहिले ,बहुत पहिले हमनी का साथ साथ रहत, अपना मनुष्यता खातिर अन्हार से, अनेत आ अधर्म से लड़नी जा ।फेरु आपुस मे रहत, अन्याय, विषमता आ गैरबरोबरी से लड़े आइल। वर्चस्व क लड़ाइयो देखनी, सहनी जा। धीरे–धीरे गुलामी आ दमन का खिलाफ अपना अस्तित्व का स्वतंत्रता क लड़ाई। समाज बनल, बढ़ल आ अँजोर का साथ नया नया रस्ता भेंटाइल। नित नया लड़ाई लड़े आ जीते क रपटा परल। निराशा का घटाटोप में से बाहर निकले क आस –विश्वास उपजल।

समय, अपना सँगे बदलाव आ नयापन लेके आवेला ।समाजो ओकरा अनुसार अपना के काट छाँट क के छोट–बड़ करत ,अपना इकाइयन के साजे सँवारे के अवसर देला। अगुवा बनल लोगन क जिमवारी बेसी होला, सबके साथ चलावे के –खास कर कमजोरो के ले चले आ ओके बढ़े पनपे के अवसर देत, समय का साथ आगा बढावे के, बाकिर अगुवा एगो त होला ना। अतना बड़हन देश ,एतना विशाल भू भाग में फइलल हजार जीवन संस्कृतियन आ कुनबा, कबीला, जात –पात, मजहब क नेतवो त ढेर होइहन। आपुस के भाव बिचार, तौर तरीका आ सोच बिचार के भिन्नता होइबे करेला ।हमहन क अगुवा लोगन क आपन निजी महत्वाकांक्षा क जोर अलगा बा ।बल, बेंवत, सत्ता, सुख–सुविधा पर वर्चस्व के लड़ाई में समाजो के टूटे, बिगड़े आ बने के परिस्थिति त केतने बेर आइल आ ओसे पनपल कतने असंगति –अन्तर्विरोधो पैदा भइल बाकि लोगन का भितरी बाँचल मनुष्यता का त्याग –तप आ कोशिश से ओहू विकट हाल–, बेहाल में आगा खातिर राह बनल ।

समाज के ऊँच नीच, जात–पाँत, मजहब आ भाषा के – ओकरा जरूरत आ सम्मान का साथ जोरल आ सन्तुलन बइठावे क कोशिश आज ले कम ना भइल। आजुओ होते बा, बाकिर असंतोष कम ना भइल। आपसी प्रेम बढ़ला का बजाय, हम आ हमार का खींचा तानी में अउर घटते जा रहल बा। मनुष्यता के तेजी से होत क्षरण आ, पहिले क जोगवल मूल्यन के ध्वंस से आपुस का आपुसीपन क खटास आज बहुत कछ बिगाड़ रहल बा। आपन ताकत, आपन जमीनदारी, आपन ठीकदारी आ जमात खातिर मरि कटि गइला से केहू का कुछ स्थायी भेंटाये वाला नइखे। समय आ गइल बा कि 'मनुष्यता' खातिर एकवटल लोग आपन ठेहा अतना बरियार करो कि टूटि के छिटाइल माला क गुरिया बिनाइ जाव। मलवा के फेर से गूँथे में, प्रेम आ भाईचारा क मजबूत डोरा चाही। ऊ तब तइयार होई जब हमनी मे, सबका खातिर सोचे आ अनुभव करे क भाव आ जिमेवारी आई । ••

अशोक द्विवेदी

अक्षय कुमार पाण्डेय के दू गो गीत

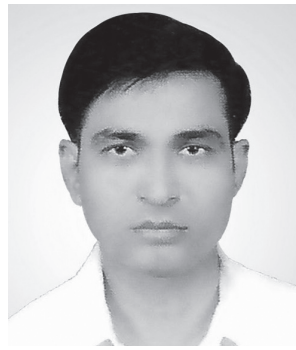

¼1½ clUr

pepe peds ykxy ihrj
lkuk tblu Hkkbl &
le>· vc clUr vkby g·A

iq#ok ls iN;k >xjr ck
nqigj lkq> Qthjs]
ikFkj ds jljh jxjr ck
gqfl & gqfl /khjs&/khjs]
mrj xby ikuh bukj ds
mdps ykxy dkbl]
le>· vc clUr vkby g·A

u;k jax ys tkxy ftfuxh
tkxy liu u;u es]
ih;j irbl >jy Hkkjy
vc u;k dYiuk eu es]
dkUgh ij ds djtk ekSle
djh Qqj Hkkjikbl]
le>· vc clUr vkby g·A

lku fdfju cu lku fpjb;k
vkleku ls mrjy]
/kjrh lty lqgkfxu ykxs
ekVh ds fnu cgqjy]
eqjpkby gjck fugky ck
xkos xhr fugkbl]
le>· vc clUr vkby g·A

lhrygj es gYds j[ky
fulqfnu vkx ft;k ds]
chr xby ckmj fnu fBBqjr
lqjt gqly BBkds]
ck;kq gkFk djs ykxy
nk;kq ls gkFkkikbl]
le>· vc clUr vkby g·A

¼2½ cqvk & lqvk

cqvk lqvk ds firtMk [kkyr
lksp jgy ckMhA

[kky ds gqls u [kky ds jkos
bl dblu ftfuxh]
vkleku uk /kjrh vkiu
vkQr es ck th]
ckgj & Hkhrj tey vUgkj
[kjksp jgy ckMhA

ikq[k iljyl tc mNkg
rc vtxqr ?kko feyy]
vkf[ku ds liuk ds uk
drgh Bgjko feyy]
dBqokby viuk vrhr ds
dksp jgy ckMhA

cdy unh mnkl ?kkV
Fkkdy ty/kkj yxs]
f[kMdh ls ymds tsruk
gfj;jh cqdkj yxs]
yiVk vl yiVby nq[k ds
uksp jgy ckMhA

xk0 ik0 jorhiqj¼jtthr egYyk½@
xkthiqj ¼m0 i0½

परम्परा

भोजपुरी गजल पर पहिल विशेषांक 'पाती' (1994-95) के कुछ रचना आज अपना पाठकन के सामने एह खातिर दिहल जाता कि हमहन का ,अपना समय-समाज आ जिनगी के रेघरियावत ओह रचना-परंपरा के भाव-भाखा आ सिरजन-सामरथ से रू ब रू होईं जा। बीस बाइस बरिस पहिले हमहन के भाखा समाज, सरकार-शासन के जवन दशा रहे ओहू के पुनरावलोकन, भोजपुरी का एह गजलन में जरूर करे के मिल जाई। एह गजलन में अपना समय -समाज के गवाही बा। इहे ना बलुक ई भोजपुरी -गजल क भाव-भाषा -सामरथ के उजागर करत बाड़ी स !! आज बीसन साल बाद, भोजपुरी के ई रचना आपलोगन के परोसे के कारन बा...समझीं, बूझीं आ मोल लगाईं परंपरा के -----

(एक) आनन्द सन्धिदूत (मिर्जापुर)

Vko &Vko jkr Hkj dbyu l· dmok A
Hkkj lxhrdkj Hkbyu l· dmok A

mTtj uk Hkbyu l inoh& çfr"Bk e
dfn&dn druk ugbyu l· dmok A

ekj d f'kdkj Hkby]ty Hkby lXxk d
gj [kkyh Mkf< ij Hkjbyu l· dmok A

Jkrk e BkM jg fuj/ku vl dk;y
X;ku] dyk yfV&yV [kbyu l· dmok A

vuBoy nHk Hkjy]vblu vuxoyl
dmo dk tkr e gjbyu l· dmok A

(दू) जगन्नाथ (पटना)

bUlku dk uQjr d] egCcr d ckr ck A
gejk xty e le; dk gjdr d ckr ck A

pjpk ck] touk ckr d]nljk d chp vkt
gej l Hkby douk] xQyr d ckr ck A

ckMu m t Hkh] mudk rdnhj d g [ky
ckuh t ge Å gejk] fdLer d ckr ck A

jkoy dgh] xkoy dgh] t Hkh dgh gekj
jmj r lx &lkFk d lkgcr d ckr ckA

ikN dgc fd drj xtjy xty d lkFk
b ckr ,xk yegj Qjlr d ckr ck A

(तीन) माहेश्वर तिवारी (मुरादाबाद)

jr dk ?kj e gdkly eNjh A
ftUnxh Hkby fi;kly eNjh A

vcdh] fudyy le æ eFku l
ih xby lxjk gykgy eNjh A

th jgfy ck] bg dgk de ck
?kj dk ikuh l fudkly eNjh A

vkfx lqxy r] unh y Qbyy
nf[k d ck Hkby fcdy eNjh A

(चार) अशोक द्विवेदी (बलिया)

>yd y [klh &chp] mnklh dck&dck A
gk tky lpkb d fpUgklh dck dck A

v[kjyk ged ekb d vf[k;u d mMy lk/k
ckc th d n'kokj gjklh dck&dck A

pYgh e Hkjy vkfx] r djkgh e Hkjy jk[k
pmdk l mHkfj vkoy [kklh dck&dck A

vc phuh fdjklu i Å gm tkj uk gkyk
jfr; e gky p li fudklh dck&dck A

eg tkfc d lc tk jgy ckV c tkj&gkV
xjnu ij ck ljdkjh xMklh dck&dckA

vbyk ij mudk ykxyk xmok d ykx d
tbl [kcj v[kckj e cklh dck&dckA

ftuxh fljk xby lur min l v* Hkklu
vkoy vc r lu d mcklh dck&dck A

(पाँच) भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना)

dfg ds vke] ccwj jkikby A
Vguh &Vguh dkV lekby A

ck peMk ds dke u/kkby
dqdqj ds j[kokj j[kkby A

vkiu ykFk dkfUg ij fygys
fQjyh Mxj Mxj fNfN;kby A

tc tc NNuy] iV nq[kkby
tjy&?kko ij uu njkby A

edMtky es eu v>qjkby
gqj ft;s & eqos ds vkby A

(छह) मधुर नज्मी (आजमगढ़)

vc r ykxos dVk &fiVk tkbA
tku dqN ck] bgs yqVk tkbl A

jmjk dq#lh d ck> <koyk es
ns'k ds uD'kos fcyk tkbl A

vc r nq[k ds igkM ge dkVc
lie d xbrk Hkys egkl tkbl A

yMc gtkj cfjl] ej ej ds
ftufx;k pkgs bl fljk tkbl A

Q# pedh ilsuk ds ekrh
lkuk jkmj /kby fNVk tkbl A

(सात) आसिफ रोहतासवी (पटना)

lquyh fd jmjk xkqo es lkou&Qqgkj ck A
gejk floku ?kke ck] ngdr dqokj ck A

ekle ls r gekj douk cqj uk jgs
vkUgh es vktq ekj bl [kkrk mtkj ckA

n[kh u] ys ds gkFk es bl rhj vk /ku"k
juHkfe es ,d cqj fQj vtqu ypkj ck A

jl'ke ds Mkj tsds ge ckUgs pyy jgh
ns[kh fd mudk gkFk es ikty dVkj ck A

jkmj nqvkj NkM ds] HkVdh dgk&dgk
jmos dgh fd jmjk flok] ds gekj ckA

(आठ) विजेन्द्र अनिल (आरा)

ge dchj ds ckuh] gejk ikuh dgk feyhA
Vkis es cbBy ckuh] jt/kkuh dgk feyh A

lki vmj lh<h ds [kyk gk[kr ck bgok
ns'k Hkby ekVh vc] lkuk&pkuh dgk feyhA

Hkby vUgfj;k vmj l?ku] tkfUgu ls dk gkbl
çe vmj eerk ls luy dgkuh dgk feyhA

flgklu ij xqMj ejys lkis cbBy ck
?kyy gok es tgj]pufj;k /kkuh dgk feyhA

pØchgq uk VVy] vfHkeUu Qs: ftcg Hkby
vtqu tcys uk tfxgs] dqjckuh dgk feyhA

(नौ) डा0 वशिष्ठ अनूप (वाराणसी)

jfg;k uk vqxkj fcNoys d dj· ckrA
tks gks lds r vkfx cqroys d dj· ckrA

vkls dgs d vkf[k es vPNk u yxsyk
vkls Hkjy vf[k;u ds gloys d dj· ckrA

rqgÅ u lfr ibc· viuk ?kj es pqu ls
?kj rq u iMkslh d] tjoys d dj· ckrA

yMgh ds ck r· Hk[k ls] vU;k; ls yM tk
nfu;k ls tkj&tqYe eVoys d dj· ckrA

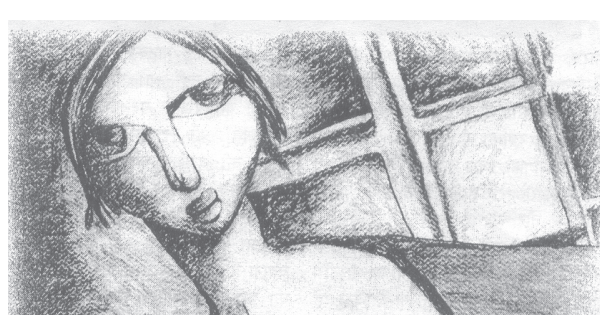

••

'हम' पूजक भोजपुरियन के सेवा भाव

प्रमोद कुमार तिवारी

हमनी के ई बतावत कबो ना थाकेलीं कि भोजपुरी एगो अइसन भाषा हऽ जवना में 'मैं' हइए ना हऽ, एहमें खाली 'हम' होला। मैं आ हम में सबसे बड़ अंतर तऽ इहे होला नू कि 'मैं' खाली अपना बारे में सोचेला, जबकि 'हम' सबकर चिन्ता करेला। अगर एह बात के आज के भोजपुरिया समाज पर लागू कइल जाव आ अपना आप से ई सवाल पूछल जाव कि एह समाज के लोग के'हम' के केतना फिकिर बा?

कवनो समाज में 'हम' के केतना भाव आ मात्रा बा एकरा के जाने के कुछ आसान उपाय बा।

1. समाज में केतना भेद भाव आ एक दूसरा के लेके पूर्वग्रह के मात्रा केतना बा?

2. समाज में सार्वजनिक सुविधा स्कूल, पुस्तकालय, दवाखाना, कुँआ, पोखर, चौपाल, खेल के मैदान, सार्वजनिक भवन आदि के कइसन व्यवस्था बा?

3. धार्मिक स्थल में कतना खुलापन, साफ सफाई आ दूसर व्यवस्था बा? यानी अमीर, गरीब, छोट बड़ हर जाति के मरद–मेहरारू के पूजा करे, खाए पीए, उठे, बइठे, रहे आदि के कइसन सुविधा बा?

4. समुदाय के कमजोर वर्ग यानी बच्चा, बुजुर्ग, स्त्री खातिर समाज का खास व्यवस्था कइले बा?

5. जिनगी के प्रमुख संस्कार जनम, बियाह, मरनी आदि में केतना एकजुटता, केतना सरलता (रूपिया–पइसा से ले के व्यवस्था तक में) भा केतना जटिलता बा?

6. आ सब बात के एक बात, समाज के ताकतवर आ सफल लोग के अपना गांव–घर आ समाज खातिर केतना योगदान बा?

अब आईं तनी तुलना क लीहल जाव!

एही भारत में एगो सिक्ख समाज बा, पंजाब के। एकर बात हम एहसे कर रहल बानीं कि सिक्ख लोग के मूल ग्रंथ गुरुग्रंथ साहिब में भोजपुरिया कबीर से लेके रैदास तक के बात भरल बा आ सिक्ख लोग एह संतन के बानी से सीख लेबेला। एह समाज के लोग रउआ के भीख मांगत ना लउकी, खाली अपने ना कवनो समाज के लोग उनुका भीरी भा उनुका क्षेत्र में चल जाई त ओकरा के खाए, पीए सूते के व्यवस्था गुरुद्वारा में हो जाई। ईहे ना कई बार अइसन मौका आइल बा जब देस–विदेस में बसल लोग अपना समाज के बेहतरी खातिर खाली रूपिये पइसा से ना बलुक मेहनत क के भरपूर योगदान देले बा। बहुत दिन नइखे भइल जब उनुका पवित्र सरोवर में गंदगी हो गइल रहे त अमेरिका कनाडा तक ले सिक्ख लोग

जुट गइल आ कीच तक काछ के दू दिन में ओकरा के चमका दिहलस। आज पूरा दुनिया में सरदारजी लोग लउकत बाड़े त ओकर सबसे बड़ कारण ईहे बा कि सब लोग एक दूसरा के 'हम' मानेले आ ऊपर पहुंचल लोग समाज के नीचेवालाअपनालोग के बाँह थाम लेबेला। ऊ चाहे टैक्सी चलावे भा चाय बेचे, बाकिर कुछ न कुछ व्यवस्था कर लेबेले।

एगो दुसरका समाज के उदाहरण लीं, एह घरी हम गुजरात में रह रहल बानीं। इहाँ रोजे हमरा के पटेल समाज, जोशी समाज आदि के बारे में सुने के मिलत रहेला। पटेल समाज के मतलब पूरा गुजरात के पटेल समाज ना। अलग–अलग जवार के सैकड़न गो अइसन समाज बा! गुजरात के प्रमुख त्योहार गरबा के समय, बहुत बड़ स्तर पऽ गरबा नाच के आयोजन होला! दूर दूर से गायक–वादक लोग आवेले। खूब बड़का बड़का स्पीकर लागेला, एकदम दिन कऽ देबेवाला लाइट से ले के 9 दिन तक खाए–पीए के आ नाचेवाला–वाली लोग के पुरस्कार तक के व्यवस्था कइल जाला। टिकट लगा के भा पास के जोगाड़ कऽ के लोग अइसन नामी गरबा नाच आयोजन के देखे जाले बाकिर हमार पड़ोसी एकाध दिन छोड़ के कबो अइसन आयोजन में ना जाले! एक दिन हमरा से कहले कि एक बेर हमनी के समाज के जलसा में चलीं! ऊ हमरा के लेके एगो लइकिन के हास्टल में पहुंचले, हॉस्टल के छत प बहुते साधारण ढंग से एगो टेप बजा के लइकी लोग गरबा करत रहे! एह हॉस्टल में उनुका गांव आ आसपास के गाँव के लइकी लोग रह के पढ़ाई करेली। गांव से सैकड़न किलोमीटर दूर, पइसा रूपिया के चिंता से मुक्त रह के लइकी लोग के काम खाली पढ़ाई करे के बा। उनुका बाबू माई के जेतना जुरेला, दे देला ना त ओह समाज के समर्थ लोग बाकी खरचा उठावेले। ई अउर कुछ ना ह एह समाज के 'हम' के भावना ह। 'अमूल, जइसन सहकारिता के अद्भुत आंदोलन अइसहीं ना बन जाला, पहिलहीं से ओकरा खातिर एगो 'हम' के जमीन तइयार रहेला।

एह सब के तुलना तनी भोजपुरिया समाज से कइल जाव! अपवाद हर जगह होले बाकिर कतना जिला मुख्यालय, ब्लॉक में, कतना गांव में रउआ अइसन पुस्तकालय, स्कूल, हॉस्टल भा दवाखाना देखले बानीं, जवना के लोग अपना खरचा से चलावेले। कतना अइसन लोग से मिलल बानीं जे कहत होखे कि छोड़ीं

सरकार के, कब ले ओकर मुंह जोहल जाई? चलीं हमनिए के मिल के ई काम निबटा देत बानीं जा। भोजपुरिया इलाका आई.ए.एस, डॉक्टर, इंजीनियर से ले के नेता लोग खातिर विख्यात रहल बा। गुजरात के आधा ले बेसी बड़का अधिकारी लोग यूपी बिहार के बा। देश विदेश में भोजपुरिया डॉक्टर, इंजीनियर भरल बाड़े। राजेन्द्र बाबू, लाल बहादुर शास्त्री से ले के जयप्रकाश नारायण तक तमाम लोग राष्ट्रीय स्तर पऽ अपना समाज–सेवा भाव के स्थापित कइले बाकिर ई समाज ओह आदर्श के केतना पकड़लस? समुदायिक सेवा के कऽ गो आंदोलन एह इलाका में चलल? छत्तीसगढ़ आ राजस्थान में सफल अधिकारी लोग अपना समुदाय के लइकन खातिर गांव में कोचिंग चलावेले, समय निकाल के ट्रेनिंग देबेले, नीमन किताब खरीद के देबेले जवना के सुंदर परिणाम मिलेला। पूरा भारत में एसटी प्रोफेसर आ आइएएस खोजब तऽ अधवा से जादा मीणा लोग भेंटाई। एगो गांव में 30–40 गो अधिकारी मिल जाले। एतना गरीबी, बेरोजगारी, लाचारी भोजपुरिया इलाका में भरल बा, इहां कऽ गो गांव में अइसन सर्वहितकारी सेंटर चल रहल बा?

पूरा दुनिया पहिले से जादे संपन्न आ तमाम तकनीकी सुविधा के मामला में बेहतर भइल बिया। तमाम देश के लोग अपना करीबी समाज के बेहतरी खातिर सामुदायिक स्तर पऽ काम करे में लागल बा। लोगबाग समूह–समाज–समुदाय–क्लब–दल आदि बना के कुछ अइसन कर रहल बा कि केहू अतना न पछुआ जाव कि ओकरा से मिले बतियावे में संकोच होखे लागे।

खास तौर से दू गो चीज बहुते महत्व के हऽ जवना पऽ पूरा दुनिया के लोग ध्यान देला। स्कूल आ अस्पताल। स्कूल नयका पीढ़ी के पूरा भविष्य के नेंव राखेला आ अस्पताल के चक्कर में तऽलखपतियो के खाकपति बनत देरी ना लागे। पहिले ई दूनो पहुंच में रहे। आधा स्कूल के काम घर–गांव के बड़ बुजुर्ग सम्हार लेत रहले आ जड़ी बूटी से ले के वैद्य जी के दवाइयो आधा ले बेसी रोग के सम्हार लेत रहे, बाकिर नया जमाना में बहुत कुछ बदल गइल बा। शिक्षा के अइसन गलाकाट दुकानदारी बा कि बिना पइसा के कुछुओ भेंटाइल दुलुम बा आ जब खेत खरीहान खातिर जगह मुश्किल हो गइल बा आ एक एक इंची जमीन खातिर मार हो रहल बा तऽ 'सेंहुड़ आ बिसकनरा' कहां भेंटाए वाला बा। अइसन में समाज आ गांव के पिछड़ल वंचित लोग (खाली जाति के आधार पऽ ना) खातिर कवन राह बचत बा?

असल में एगो नया समाज के अब जरूरत बा। जब जीए के पूरा ढंगे बदल गइल, समूह आ गांव के पूरा रंगे बदल गइल तऽ अब सामाजिक कामों के कुछ नया रूप देबे के पड़ी। हमनी के जीवन में जइसन नया बदलाव आइल बा, ओकरा में कुछ अउर बदलाव करे के जरूरत बा। कवि अरुण कमल के शब्द में कहीं तऽ 'खतम हो चुकल बा पुरान, आ नाया आइल अबहीं बाकी बा।' पहिले गांव अपना आप में स्वतंत्र इकाई होत रहे आ लोग घर, परिवार के साथे साथे अपना समाजो के चिंता करत रहे। चार गो आश्रम में से दू गो 40–50 साल ले खतम हो जात रहे। वानप्रस्थ आ संन्यास आश्रम तऽ घर के माया से दूर हो के समाज कल्याण के बात करे खातिर बनल रहे। आज तऽ हालत ई बा कि गोड़ कब्र में लटकल बा बाकिर मन माया में अझुराइल बा। कबीर से ले के तमाम संत लोग रोज एक बार इयाद दिला देत रहे कि 'चोला माटी के राम, एकर का भरोसा, चोला माटी के' बाकिर आज हर घंटा रउआ के बिजी राखेवाला एगो नया मशीन आ जात बिया। कबो खतम ना होखेवाला एगो नया सिरियल शुरू हो जात बा। समाज के का कहल जाव दुआरो पऽ बइठे के फुर्सत नइखे बाँचत। पहिले समाज के एगो व्यवस्था रहे, तमाम तरह के अतिवाद के बादो एगो खास तरह के समरसता रहे। गांव में केहू के बियाह होखे तऽ खाना बनावे के काम से ले के खटिया, बिछावन तक के व्यवस्था बिना हर्रा फिटकरी लगले हो जात रहे। रिश्तेदारी के लोग पइसा भले न दे बाकी चाउर दाल से ले के दही तक के व्यवस्था सम्हार लेत रहे। अब सबकुछ आर्डर देला से हो जाला, हो सकेला कि कुछ लोग रूपिया पइसा भी दे दे बाकिर जवन समूह भावना घरे घरे से बर्तन जुटावे में काम करत रहे ओकर भरपाई ना भइल। तनी सा मुस्किया के नीमन बेडसीट देबेवाली भउजी से ले के टुटही खटिया देबेवाला देखजरन काका तक के बात के रस के कवन विकल्प तइयार भइल बा? तरकारी काटत, खाना बनावत घरी जवन गवनई आ दुखम सुखम होत रहे ओकरा बदला में आज का मिलल बा? एह पूरा प्रक्रिया में जवन आंखी के लाज बनत रहे, जवन रिश्ता बिकसत रहे, जवना से कवनो खेत भा सड़क पऽ अकेल लइकी लउकला पऽ पहिला विचार मन में ई आवे कि फलनवा काका के रिश्तेदार हई, ओकरा जगह पऽ आज नया का आइल बा? हमनी के मोबाइल, टीवी से ले के कार जहाज तक के सुविधा पा लेनी जा, बाकिर ई सब पावे के चक्कर में जवन छूटत गइल ओकरा के संजोवे के कोशिश ना भइल। एकरा

खातिर आज के समय आ पूरा समाज जिम्मेदार बा, हम मानत बानीं बाकिर लोग एकर विकल्प ढूंढ रहल बाड़े। एह हालात के सुधारे खातिर भोजपुरिया समाज का कर रहल बा, कुछ लोग के तऽ आगे आवहीं के पड़ी। हमनी अइसन लोग से उमेद ना राख सकेनी जे एक बेर के रोटी के जोगाड़ में परेशान बा भा दवाई के पइसा ना होखला के कारण ओझा सोखा के लगे जाए खातिर मजबूर बा।

इहाँ साधन संपन्न लोगन के आ ताकतवर लोग के आगे बढ़ के बीड़ा उठावे के पड़ी। पहिले गांव में रमलीला भा रसलीला आवत रहे तऽ ऊ लोग के खर्चा खातिर पूरा गांव बीड़ा ना उठावत रहे। कुछ गीनल चुनल लोग ओहू घरी जिम्मेदारी लेत रहे आ पूरा गांव ओकर रस लेत रहे। आज अइसन काहें ना हो सके? काँहे सब मिल के सहजोग ना कर सके? तब ई हम भाव कहाँ बा?

हम बहुते छोट आदमी हईं, भाषा आ साहित्य के छात्र हईं एह से एगो उदाहरण एही क्षेत्र से ले रहल बानीं।

रोज सुनत रहेनीं कि भोजपुरिया लोग के संख्या 18 करोड़ भा 20 करोड़ बा। बाकिर भोजपुरी में एक्को अइसन प्रकाशन संस्थान नइखे जवन स्तरीय किताब के छापे आ वितरित करे के नीमन व्यवस्था कऽ सके। पांडेय कपिल जी कुछ शुरू कइनी बाकिर 100 किताब तक संख्या ना चहुंप पावल। भोजपुरी अकादेमी के करनी–धरनी, भगवाने मालिक बा। कई गो विश्वविद्यालय में भोजपुरी सिलेबस में बा, एकर एगो बाजार बा बाकिर ढंग के प्रकाशन नइखे। परिणाम ई होला कि या त अपना पइसा से कहीं से छपवावेले लोग भा भाषा बदल के हिन्दी के राह पकड़ेले। एही के दूसरा रूप पत्रिका सब में लउकेला। जादातर पत्रिका खरीददार के भरोसे ना, संपादक के जिद आ आपन जियान, के भरोसे चल रहल बाड़ी स। का 18 करोड़ वाली भाषा के लगे 5 हजार अइसन खरीददार ना मिल सकेले जे 25–50 खरच के एगो पत्रिका ले ले। मान लेहीं रउआ खुद नइखीं पढ़ल चाहत, खरीद के रख लीहीं। हो सकेला केहू अउर ओकरा के पढ़े। आजकाल इंटरनेट आ वेब पत्रिका के जमाना आ गइल बा। भेजे में पइसा ना लगे बाकिर स्तरीय सामग्री तइयार करे में, लिखवावे में, संपादित करे में तऽ मेहनत आ समय लागेला नू? एकरा बदला में लेखक संपादक के काहें ना कुछ मिले के चाहीं। रउआ नीमन लेख कहानी भा कविता लिखेवाला के मानदेय दे के देखीं, बढ़िया रचना के लाइन लाग जाई आ कूड़ा करकट अपने किनारे हो जाई। केतना बदनसीब बा भोजपुरिया समाज जवन ढंग के एगो पत्रिका के नियमित निकाले खातिर   साधन ना मुहैया करा सके। केतना गरीब बा भोजपुरिया समाज जवना के लगे 10 गो अइसन दिलदार अमीर नइखे जे कह सके कि हम भोजपुरिया भाषा आ संस्कृति के बेहतरी खातिर काम करेवाली संस्था के खरचा उठाइब, रउआ बस स्तरीय काम करीं। कतना कमजोर बा ई समुदाय कि मिलजुल के भी एगो ढंग के अइसन पुस्तकालय नइखे बना पावत जहां अब ले प्रकाशित भोजपुरी के हर रचना उपलब्ध हो जाए। समाज जवाबदेही तय कऽ के अइसन काम करा सकेला बाकिर ओकरा खातिर कुछ लोग के कमर कसे के पड़ी, आपन मैं छोड़े के पड़ी। खाली बड़का–बड़का बात में ना व्यवहार में। हमार एगो परिचित छोटी गो प्रयोग कइले। अपना गांव में अखबार, रोजगार समाचार आ प्रतियोगिता दर्पण आदि के व्यवस्था कऽ दिहले। ऊ दिल्ली में रहेले बाकिर पइसा दिहला के साथे इहो सुनिश्चित कइले कि रोज अखबार गाँवें चंहुपो। मात्र दू साल में ओह गांव के तीन गो लइकन के सरकारी नौकरी में चयन हो गइल। पहिले लोग के पते ना चलत रहे कि कब कहां के फारम भरे के बा। जबले सूचना पहुंचे डेट खतम हो जात रहे। इहे ना रोज समाचार पढ़ला से चेतना आइल, सरकारी सुविधा के बारे में पता चलल आ ब्लॉक के जवन अफसर बुड़बक बना देत रहे ओकरा के मजबूतर हो के सुविधा देबे के पड़ल। जब एक आदमी के सकारात्मक सोच आ हजार पांच सौ खरच कइला से एतना बड़ बदलाव आ सकत बा तऽ पूरा समाज के लोग खड़ा हो जाई तऽ केतना बड़ बदलाव आई। मराठी भाषी एगो हिन्दी के कवि रहले मुक्तिबोध। ऊ लिखले कि

'ज्यादा–ज्यादा लिया, दिया बहुत बहुत कम
मर गया देश, जीवित रह गए हम'

का हमनियो के अपना आप से ई सवाल कबो पूछेनी जा कि 'हम' के बात पऽ कॉपीराइट राखेवाला भोजपुरिया समाज के प्रतिनिधि के रूप में हमनी के केतना देले आ लवटवले बानीं जा? लेबे के काम तऽ खूब कइनीं जा बाकिर देहनीं जा केतना? आ अब ना तऽ कब? ●●

iःekn dःekj frokjh ¼fgUnh foHkkx½
xqtjkr dsUnzh; fo'ofo|ky;]
lsDVj&29] xka/khuxj] xqtjkr&382030

मातृ भाषा के महत्व में नेहरू के छवि-ध्वन्स

डा0 अमरनाथ शर्मा

पाती के सम्पादक डा0 अशोक द्विवेदी जी के हमार प्रणाम। 2016 का एह नया साल के रउआ, पाती का सभ पाठक लोगन आ रचनाकार विशेष रूप से डा0 जयकान्त सिंह जय जी के शुभकामना। पछिला अंक में ''मातृभाषा पर जय जीके एगो लेख हम पढ़लीं।

मातृभाषा में हमरो तनी रूचि रहेला। हम कवनो विद्वान ना हईं ना शिक्षाशास्त्री। एगो अइसने आदमी हँईं जेकरा खातिर साधारणो शब्दवा असाधारणे बा। बाकिर हमरा बुझाला कि मातृ भाषा के जानकारी ना रहला से आदमी के अन्दर भाव के विकास बढ़िया से ना हो पावेला, उ रट्टू तोता होके रहि जाला। आज के मान्टेसरी आ कान्वेन्ट स्कूल के पीढ़ी के साथे इहे हो रहल बा। आदमी अंगरेजी सहित कवनो विदेशी भाषा अपना मातृ भाषा के सापेक्ष सीखि पावेला। मातृभाषाके प्रतिउपेक्षा के भाव त घरे दाम बढ़ला से त महतारीये से बाप में आ गइल बा, ओकरा बुझात बा कि लइकवा अंगरेजी जान जाई तसबकुछ जान जाई। बाजारवाद जरूरे फूल फल रहल बा। स्कूल चलावल आजु सबसे सुरक्षित धंधा होइ गइल बा। आ इहे बात बात बा कि हम 'पाती'–78 में छपल जय जी का ए लेख के बड़ा धधाइले पढ़े शुरू कइनी कि मातृ भाषा के जवन महत्व प्राथमिक शिक्षा आ ओकरा साथे आदमी के पूरा शिक्षा आ संस्कार पर बाटे, एह बारे में डाक्टर साहब कुछ टेक्निकल बात बतउले होखब। बाकिर हमरा हिस्सा के हुलास हवा हो गइल काहें कि मातृ भाषा के महत्व के नाम पर, बतकही राजभाषा, ओकरा कानूनी प्रावधान आ ओहीके माथे माथे नेहरू के छवि विध्वंस के प्रयास एह लेख में होत हमरा लागल।

डा0 जयकान्त सिंह नेहरू जी का प्रति पूर्वाग्रह ना रखितीं तऽ ई ना लिखतीं ''आ जे दिन भर अंगरेजिए में ओकात रहे आ सुतलो में अंगरेजिये में बिसनात रहे। मतलब, उ देह से त भारतीय रहे, बाकिर दिल–दिमाग से खांटी अंगरेज रहे।''

जहां तक 'ओकात रहे' शब्द बा, ई कुछ जुगुप्सा जगावे वाला बा। डॉ0 साहब नियर विद्वान आदमीके खुदो के बेक्तित्व के हिसाब से हमरा बुझाता कि ई मेल नइखे खात। इहॉ के तनी सा ध्यान दिहले रहतीं त आपन ई पूरा घिरणा कउनो बढ़िया शब्द में परगट क दिहले रहितीं। अइसहूँ हिन्दुस्तानी साहित्य में अइसन घिरणा के त शायदे कवनो स्थान होखी। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् साहित्य के अन्तिम लक्ष्य रहल बा। अब जवन चीज सत्ये रही, ओकरा के शिव आ सुन्दर त रहहीं के बा। तवनो पर एह सत्यो के अपना इहां बान्हल बा कि खाली सत्ते भइला से काम ना चली, ओके प्रियो सत्यो के अपना इहां बान्हल बा कि खाली सत्ते भइला से काम ना चली, ओके प्रियो होखे के चाही। डॉ0 साहेब नियर विद्वान आदमी जब अइसे कइले बा त हमरा तनी अखरल बा। इहां की तरकस में त एक से एक तीर होखी, बाकि तनी भोथर तीर इहां से चलि गइल बा।

1937 के एगो अपना लेख में नेहरू जी लिखत बाड़न, ''एक जीवित भाषा एक धड़कती हुई महत्वपूर्ण चीज है जो हमेशा बदलती रहती है, हमेशा विकसित होती रहती है और उन लोगों की तस्वीर दिखाती है जो इसे बोलते या लिखते हैं।'' नेहरू आगे लिखले बाड़न कि, ''हमारी महान प्रान्तीय भाषायें महज कोई बोली या वर्नाकुलर नहीं है, जैसा कि नादान किस्म के लोग कभी–कभी कहते हैं। ये हमारी प्रचीन भाषायें हैं जिनकी एक समृद्ध विरासत है। ये लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है और जो आम जनता और यहां के उच्च वर्ग के जीवन से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। यह एक स्थापित सत्य है कि आम जनता शैक्षणिक और सांस्कृतिक रूप से तभी विकास कर सकती है जब उसे अपनी भाषा में शिक्षा दी जाय।'' (पृष्ठ 226, भारत गांधी के बाद)

अब इहां जयकांत जी अपना लेख में आगे लिखत बानी, ''उनकरे खुटचाली रहे कि संविधान के धारा 343–1 में त जनता के खुश करेला हिन्दी के ओकर अधिकार दिहल गइल, बाकिर गॅवे से हिन्दी के प्रभावहीन कके अंगरेजियत लादे खातिर, ओही संविधान में धारा 343–2 आ 343–3 के बेवस्था करके बरदान के अभिशाप में बदल दीहल गइल आ देश के विविध मातृ भाषा, प्रान्तीय भाषा के विकास के संगे–संगे सबका सम्यक् समन्वय से सिरजल देश के सम्पर्क भाषा, हिन्दी के राज काज के भाषा अउर राष्ट्र भाषा बनावे वाला गांधीके सपना सपने रह गइल।''

एह पूरा पैराग्राफ आ पूरा लेखवो में अइसन बार–बार झाँकि रहल बा जइसे कि पूरा देश हिन्दिये चाहत रहे, अउर नेहरू आ गांधी में हिन्दी के लेके कवनो मतभेद रहे। नेहरू, गांधी से भाषा के बारे में कवनो धोखा कइले बाड़न। त पहिला बात त ई कि नेहरू, या गांधी एह हिन्दी के पक्षधर ना रहलन। ई लोग 'हिन्दुस्तानी' के पक्षधर रहलन जेवन देवनागरी लिपि आ उर्दू वाली लिपि दूनों में लिखल जा सकत रहे।

नेहरू नियर गॉधियो जी सोचत रहलन कि

हिन्दुस्तानी भाषा उत्तर और दक्षिण के जोड़े के काम कर सकेले आ ई भाषा हिन्दू–मुसलमान का बीच पुल के काम कर सकी। एहसे अंग्रेजी के बजाय हिन्दुस्तानी के राष्ट् भाषा बनावे के चाही। उन्होंने लिखा कि, ''उर्दू लहजे का इस्तेमाल मुसलमानों द्वारा लेखन में किया जाता है। हिन्दी लहजे का इस्तेमाल संस्कृत पण्डितों द्वारा किया जाता है जबकि हिन्दुस्तानी दोनों का ही मीठा मिश्रण है।'' (पृष्ठ 149, भारत गांधी के बाद)

'हिन्दी' त राजभाषा संविधान सभा में महज एक वोट से पुरूषोत्तम दास टण्डन के कारण भइल। पुरूषोत्तम दास टण्डन जवना अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य परिषद के उपाध्यक्ष रहलन ओह परिषद से एही कारण गांधी जी 1945 में इस्तीफा दे देहले रहलन। टण्डन जी मनावे क कोसिस कइलन लेकिन गांधी जी कहलन कि ''मैं दो घोडों की सवारी कैसे कर सकता हूँ? मेरी बात को कौन समझेगा, जब मै कहूँगा कि राष्ट्भाषा बराबर हिन्दी और राष्ट्भाषा बराबर हिन्दी जोड़ उर्दू बराबर हिन्दुस्तानी।'' (पृष्ठ 149, भारत गांधी के बाद)

हिन्दी के राजभाषा बनवला के संविधान सभा में केतना विरोध भइल रहे एकर एगो झलक टी0टी0 कृष्णमाचारी के एक टिप्पणी बा जवन बा त बडहन बाकिर एतने से भरपूर समझल जा सकेला ''महाशय, मैं दक्षिण के लोगों की तरफ से एक चेतावनी देना चाहता हूँ क्योकि दक्षिण में अभी भी ऐसे तत्व हैं जो मुल्क से अलगाव की ख्वाहिश रखते हैं, और इस काम में संयुक्त प्रान्त के मेरे माननीय दोस्त अपने हिन्दी साम्राज्यवाद के विचार से कोई मदद नहीं कर पायेगे। महाशय, अब यह यू0पी0 के मेरे दोस्त के डपर है कि वह पूरा हिन्दुस्तान चाहते है या सिर्फ हिन्दीभाषी हिन्दुस्तान। यह चुनाव बिल्कुल उनका है।'' पृष्ठ 150, भारत गांधी के बाद

जहां तक गांधी आ नेहरू के हिन्दुस्तानी के बात बा, डा0 जय जी प्रधानमंत्री मोदी जी के भोपाल साहित्य सम्मेलन में दिहल भाषण पर ध्यान देई जवन साहित्य पर एगो अद्भुते सम्मेलन रहल ह। जब प्रधानमंत्री जी कहत बानी कि कश्मीरी भाषा के कहावत तमिल भाषा के कहावत बंगला के शब्द आदि से हिन्दी के बढ़ावल जा सकेला त उहांका एही खुटचलिये के भाषा बोलत बानी जवन हिन्दुस्तानी जबान ह।

जहां ले संविधान में अंगरेजी के बात बा उ नेहरू के आपन निर्णय रहे कि, पूरा संविधान सभा के। का ई निरणय नेहरू जी अकेलहीं लेले रहलन। आ जवन भइल रहे, जब भइल रहे उ त 1965 तक ले खातिर रहे। लाल बहादूर शास्त्री जेकरा प्रति इ संघ परिवार कबो–कबो बड़ा आदर देखावेला, 1965 में, जब नेहरू जी, अब ई त निश्चित नइखे कि स्वर्ग में रहलन कि नरक में बाकिर एह धरती पर त नाहिंए रहलन, शास्त्री जी के सरकार के एगो अतिउत्साही अधिकारी इ सर्कुलर जारी कई दिहलस कि 26 जनवरी 1965 से हिन्दी केन्द्र सरकार के मुख्य आधिकारिक भाषा बन जाई जबकि अंगरेजी एगो अतिरिक्त आधिकारिक भाषा के रूप में जारी रही तब एह सरकुलर के खिलाफ तमिलनाडु में भयानक विरोध भइल, आगजनी भइल आ आत्मदाहो भइल।

''विडम्बना यह थी कि यह सर्क्युलर 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस पर जारी किया गया, जब नई दिल्ली में एक भव्य परेडके दौरान दक्षिण भारत के सर्वपल्ली राधाकृष्णन को देश के राष्ट्पति के रूप में 31 तोपों की सलामी दी गयी। दूसरी तरफ उनके गृह राज्य तमिलनाडु में हिन्दी को लेकर हंगामा मचा हुआ था और पुलिस को हिन्दी विरोधी प्रदर्शनकारियों पर आँसू गैस और लाठी चार्ज का इस्तेमाल करना पड़ रहा था। मद्रास में एक नवयुवक ने हिन्दी का विरोध करते हुए आग भी लगा ली। तब तक इस तरह का विरोध सिर्फ दक्षिण वियतनाम में देखने में आता था।'' (पृष्ठ 185,एक जिंदगी काफी नहीं)

शास्त्री मंत्रिमण्डल के सदस्य एस0 सुब्रमणियम, ओ0बी0 अलगेसज एह मुद्दा पर इस्तीफा दे दिहलन आ अंत में स्थिति के संम्हारे खातिर शास्त्री जी के रेडियो प्रसारण क के ई कहे के पड़ल कि– ''नेहरू के आश्वासन के शब्दों और भावनाओं का बिना किसी शर्त या संकोच के पालन किया जायेगा। (पृष्ठ 186, एक जिंदगी काफी नहीं)

त एह समय त नेहरू जी ना रहलन। आ दक्षिण भारत के उ लोगवा जे हिन्दी के विरोध करत रहे, हिन्दुस्तानी रहलन की ना रहलन। एही तरे एह लेख में इहां का गांधी जी के एह कथन के कि ''दुनिया से कह द लोग कि गांधी अंगरेजी भूल गइल'' एह रूप में रखले बानी जइसे कि ई बात गांधी जी मातृ भाषा का कवनो संदर्भ में कहले होखीं।

ई लाइन गांधी जी 14 अगस्त 1947 के कहले बानी जब बी0बी0सी0 के संवाददाता भारत के स्वतंत्रता दिवस पर उहां के संदेश मांगत रहे आ उहां के विभाजन से उदास कुछ कहलना चाहत रहनी। ''हकीकत तो यह थी कि गांधी जी का मन बहुत खिन्न था। जब देश के प्रमुख अखबार हिन्दुस्तान टाइम्स के संवाददाता ने गांधी जी से स्वतंत्रता दिवस पर कोई संदेश देने

को कहा तो गांधी जी ने जवाब दिया– 'वे अंदर से खालीपन महसूस करते है।' ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन बी0बी0सी0 ने उनके सचिव से आग्रह किया कि वे महात्मा का एक संदेश दिलवाने में मदद करें, जो पूरी दुनिया की निगाहों में हकीकत में हिन्दुस्तान की नुमाइन्दगी करते हैं। गांधी जी ने कहा कि बेहतर होगा कि वे लोग जवाहर लाल नेहरू से बात करें। बी0बी0सी0 वाले नहीं माने और उन्होंने फिर से अपने पत्रकार को ये कहने के लिए भेजा कि इस संदेश को दुनिया की कई भाषाओं में अनूदित किया जायेगा और पूरी दुनिया के लोग इसे सुनेंगे। बी0बी0सी0 अपने प्रस्ताव को आकर्षक बनाकर पेश कर रही थी। गांधी पर इस प्रस्ताव का कोई असर नहीं पड़ा, उन्होने कहा कि ''उनसे कह दो कि गांधी अंग्रेजी नहीं जानता।''

जहां तक इहां के लिखत बानी ''उ देह से त भारतीय रहे बाकिर दिल दिमाग से खांटी अंगरेज रहे। ''रहे'' जहां तक भोजपुरियो में अपना से छोटे के आ चाहे एकदम से तुच्छ आदमी के ही कहल जाला। अब जवन आदमी एह देश के प्रधानमंत्री रहल बा ओकरा संदर्भ में तनी अइसना शब्द से बचल गइल रहल ह।

ईहो देखल बेजाँइ ना होई कि एह अंगरेज के बारे में खुद भगत सिंह जुलाई 1928 के अपना एगो लेख में का कहले बाड़न–''इस समय पंजाब को मानसिक भोजन की सख्त जरूरत है और यह पण्डित जवाहर लाल नेहरू से ही मिल सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उनके अन्धे पैरोकार बन जाना चाहिए। लेकिन जहॉ तक विचारों का संबंध है, वहॉ तक इस समय पंजाबी नौजवानों को उनके साथ लगना चाहिए, ताकि वे इन्कलाब के वास्तविक अर्थ, हिन्दुस्तान में इन्कलाब की आवश्यकता, दुनिया में इन्कलाब का स्थान क्या है, आदि के बारे में जान सकें। सोच–विचार के साथ नौजवान अपने विचारों को स्थिर करें ताकि निराशा, मायूसी और पराजय के समय में भी भटकाव के शिकार न रहें और अकेले खड़े होकर दुनिया से मुकाबले में डटे रह सकें । इसी तरह जनता इन्कलाब के ध्येय को पूरा कर सकेगी।'' (पृष्ठ 324, भगत सिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज)

एह लेख में खुदे डाक्टरो साहब विविधता में एकता के बात आ ओह हिन्दुस्तानी के भी बात क जात बानी जेवना के नेहरू जी भी करत रहलन ह। जइसे ''भारत बहुभाषी देश ह। हर क्षेत्र आ प्रान्त के आपन मातृ भाषा होले जवन अपना भाषा भाषी का संस्कार, विचार आ ज्ञान–विज्ञान सबके पोषण करेले।'' आ चाहे जब इहां का मातृ भाषा आ भाषा के मामला के संवेदनशीलता के बात करत बानी आ चाहे ई कहत बानी कि ''गांधी जी के मृत्यु के बाद उनका विचार के दरकिनार करत 14 सितम्बर 1949 के देश के संविधान सभा पूर्वी दिल्ली आ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बोली मतलब खड़ी बोली के हिन्दी बतावत भारत के राजभाषा घोषित कर दिहलस। तब से हिन्दी देश के सम्पर्क भाषा के रूप विकसित ना हो सकल आ फिर सीमित क्षेत्र के बोली खड़ी बोली के राजभाषा भा राष्ट् भाषा घोषित भइला के देश के दक्षिण आ पूर्वी भाग में हिन्दी का एह स्वरूप के लेके विरोध शुरू हो गइल। कुछ–कुछ विरोध के उत्तर आ मध्यों भारत में तब शुरू हो गइल जब उत्ततर आ मध्य भारत का तमाम मातृभाषा सबके स्वाभाविक अधिकार के छीनके हिन्दी के उत्तर भारत के मातृभाषा आ सउँसे उत्तर भारत के हिन्दी पट्‌टी घोषित कर दीहल गइल'', त इहां का नेहरू से कवनो अलगा थोड़े कहत बानी। रेखा छोट करेके तरीका एगो ईहो होला कि बड़ आसे रेखा खींच दीहल जाय।

जहां तक हमार बात बा, त हम शहीदे आजम भगत सिंह का एह बात से अपना के जोड़त कि उनकर अन्धा पैरोकार ना बनि जाइल जाव कहत बानी कि आलोचना होखे के चाहीं। अइसन नइखें कि जवना आदमी के लगभग 50 साल के सार्वजनिक जीवन बा, जे एह देश के श्वास–प्रश्वास तक के प्रभावित कइले बा ओकर अइसन कटु आलोचना कइल जाव।

lnHk% 1- Hkkjr xk/kh d cknा& रामचन्द्र गुहा, अनुवाद सुशान्त झा, संस्करण हिन्दी का प्रथम संस्करण, पेंगुइन बुक्स इण्डिया, यात्रा बुक्स, 2012

2- ,d gh ftUnxh dkQh ugh& कुलदीप नैय्यर, अनुवादक युगांक धीर राजकमल पेपर बैक्स पहली आवृत्ति, 2013

3- lLdfr d pkj v/;k;& रामधारी सिंह 'दिनकर' संस्करण लोकभारती प्रकाशन, तीसरा संस्करण 20210

4- Hkxr flg vkj mud lkfFk;k d lEi.k nLrkot&सम्पादक सत्यम्। राहुल फाउण्डेशन लखनउ पहला पुर्नमुद्रण जनवरी 2010

egkohj dkykuh ¼ub½] ifj[kjk] cfy;k&277001

कछु सीख ऽ ... ए बबुआ!

मिथिलेश कुमार सिंह

भारत के समृद्ध प्रदेशन के जब गिनती कइल जात रहल ह त, ओमे पंजाब अउरी हरियाणा के नाम सबसे ऊपर गिनाई। ना जाने ई दूनो प्रदेशन के लोगन के कवन बेमारी हो गइल कि सम्पन्नता और खुशहाली त छोडीं, सुखो–चैन गँवा देले बाड़न लो। पंजाब के बात कइल जाय त, ओइजा भिंडरावाला के रूप में एगो अइसन राक्षस भइल, जवन सिक्ख भाई जइसन इमानदार, देशभक्त अउरी मेहनती कौम के देशद्रोही के रूप में बदनाम बनावे में कवनो कसर ना छोड़लस। अलग खालिस्तान के मांग में ई नवहन के अस भरमवलस कि ओकर परिणाम 'आपरेशन ब्लू स्टार' के रूप में सामने आइल त गैर–सिक्खन पर एकर अत्याचार के प्रतिक्रिया 84 के दंगा के रूप में लउकल, जेमें हजारों निर्दोष आ मासूम सिक्ख भैया बहिनीं के जान गइल, अत्याचार सहे के ऊ सब लोग मजबूर भइलन। खैर, ऊ दौर धीरे–धीरे बीतल। पंजाब के लोग ए समय नशा–पताई के जाल में बर्बादी के ओर फेरु अग्रसर दिखाई देत हउअन.... सोचे के बात बा कि आखिर एगो मेहनती अउरी देशभक्त कहाये वाला समुदाय ए तरे के सामाजिक समस्या में काहें उलझ जात बा!

पंजाब के बाद हरियाणा में समस्या त अउरी बरियार हो गइल बिया। ओइजा जाट समुदाय के दबंगई अब अपराधिक असामाजिक हो चलल बा। आरक्षण आंदोलन के नाम पर ए बेरी ओइजा जेवन खूनी तांडव भइल बा, उ कई लोगन आ अउरी दुसरा समुदाय के मन में गहिरा आक्रोश भर देले बा। पूरा देशवा में एही गुंडई के चर्चा बा कि भइया दूसरा लोग के खून बहावल, उनकर माई–बहिनीं के इज्जत बिगाड़ल अपने हँसत बाजार के लूटल, सरकारी बस के फूंक दिहल, रेल के पटरी उखारल, राजधानी दिल्ली के निवासियन के पिए ला पानी देबे वाली नहर के तूर–फूर दिहल वा। आखिर केवन मानवी–आंदोलन का परिभाषा में आई? हरियाणा के मुरथल में त कई माई–बहिनीं के संगे कई बदमाश और बिगड़ैल जाट लोगन द्वारा गैंग–रेप के बात सामने आईल बा, जेकर जांच चलत बा, लेकिन कई को ट्रक ड्राइवर अउरी दूसर लोग ए खतरनाक काण्ड के टीवी पर बयान देत सोझा अइले। कई लोग कहत बाड़न कि कांग्रेस के कई लोग ए पूरा मामला के भड़कवले बाड़न त कई ओर से भाजपा के खट्टर सरकार पर अँगुरी उठत बा, लेकिन सोचे के प्रश्न बा कि समाज के लोग आखिर मूरख काहें बन जा तारन? आखिर आपन लइकन के ऊ जाट–भाई लोग काहें ना समझावत बाड़न, थपरियावत बाड़न कि 'आरे ससुरा! कवनो फालतू काम मत करीहऽ स ! सोचे के इहो बात बा कि बात–बेबात प्रेमी प्रेमिका के गरदन काट देबे वाला खाप–पंचायत आखिर एमें काहें नइखे सामने आवत? ई पूरा काण्ड से हरियाणा के छवि आ समृद्धि के बर्बाद होखे के संकट खाड़ हो गईल बा... सामाजिक रूप से पूरा बँटा गइल बा ई प्रदेश त अंदर–अंदर सब केहु के भीतर आग सुनुगता। एमें केतनों गाल केहु बजावे लेकिन, साँच इहे बा कि जाट समुदाय के दबंगई एबेरी खुल के अपना आपराधिक रूप में लउकल बा। जांच होखे के सिफारिश भईल बा और देखे वाली बात बा कि ए लूटमार के अपराधी कब पकडात बाड़न? राष्ट्रीय संपत्ति से खिलवाड़ करे वाला लोग के पुलिस कब पकड़ के कूहतिया? आखिर, जेकरा संगे अन्याय भईल बा ओके न्याय काहें ना मिले के चाहीं? ऊपर के पंजाब और हरियाणा से सिक्ख और जाट लोगन के उदाहरण के अलावा दोसर प्रदेश के कई समुदायो के लोग अंग्रेजी के सुपीरियरिटी काम्प्लेक्स से पीड़ित बाड़न और जब न तब उ लोग आपन दबंगई देखावे से परहेज ना करेलन! राजस्थान में गुज्जर समुदाय के लोगो जब न तब ट्रेन के पटरी उखारे लागेला, जैसे ओकरा निचवा आरक्षण दबाइल बा... अउरी ओके खोनी के आरक्षण निकल जाई ... गुजरातो में पटेल लोगन बरियार उत्पात मचवले रहल हन स, लेकिन ई सरकार कड़ाई से पेश आइल हियऽ और हार्दिक राम के उठा के बन कइले बिया जेल में अइसहीं हरियाणा के जाट–उत्पातियन के संगे होखे के चाहीं! उत्तर प्रदेश अउरी बिहारो में ई समस्या कम गहिर नइखे। एइजा त बबुआन लो, पंडीजी लो और अउरी अहीर से लेके नोनिया और हरिजन लो आपस में एक दूसरा के देख के रोजे कुहुँकेला लोग... कबो गाँव में बबुआन लोग के द्वारा अत्याचार करे के समाचार सुनाला त थाना में चल जाईं त झूठ–साँच केस में कई जगह ऊ लोगन के फँसल बहुत आम बात बा। बाभन लो आजुओ, कवनो हरिजन भाई के छूअल पानी पिए में संकोची बन जाला लोग त सोचे पर मजबूर हो जाए के परेला कि ई देश हजारों साल ले कहीं एही खातिर त गुलाम ना रहे न? आखिर, जाट, बनिया, नोनिया, बाबू साहब लोग, पंडीजी लो, दलित, पिछड़ा आदि आदि समुदाय एक दूसरा से एतना नफरत काहें करे ला? ई एक दूसरा के सोचे के चाहीं और हरियाणा में जवन कहर एगो समुदाय दोसरका पर कइले बा, ओसे सीखे के चाहीं। समाज के बड़–बुजुर्ग लोग अगर कवनो गलती हो गइल बा त ओकरा के सुलझावे खाती विनम्रता से सामने आवस लो त अपना पक्ष के गलत और बदमिजाज नवहन के डॉटस थपरियावस लो! ओकनीं के कान पकड़ के उठा–बैठक करे के कहस लोग अपराध अगर गंभीर होखे त ओके कानून द्वारा फांसी पर लटकावे के खुदे मांग करस लोग। देखल महत्वपूर्ण बा कि हरियाणा के बड़–बुजुर्ग जाट ए मामला में केवना डहर पर चलत बा लोग। काहें कि ओहन लोग के खिलाफ दोसर पीड़ित वर्ग में जबरदस्त आक्रोश बा, जेवन फाट जाव, ओकरा से पहिलहीं कछु सीखऽ जा ... ए बबुआ! ●●

■ fefFky;'k d|ekj fl|g] mRre uxj] ub fnYyh-

आनन्द सन्धिदूत के कविता

(एक) भात

भात एकादसी के खाइल बरिजल
भात, परजाति में खाइल बरिजल
भात राति खा खाइल बरिजल
भात एलर्जी में खाइल बरिजल
भात एतना मोलायम तवनो पर एतना धारदार !!

(दू) महानता क अरथ

हऊ जहाँ देले लउकत बा, ढेर दिन ना लागी
ई शहर ओहिजा ले चल जाई
फेर ई शहर बहुत बड़ हो जाई——नगर से महानगर
नगरपालिका से महापालिका
बाकि सवाल ई बा कि
का अदिमियो हो जाई मानव से महामानव ?

(तीन) मित्र के तलाश

मस, माछी मच्छर से लेके शेर तक
सब तऽ काटहीं दउरत बा
केकरा से कइल जाव दुख–सुख के
दू गो बात !

(चार) समझ

शेर हँसबो करेला त
बन्दूक तन जाले
जनलऽ अनन्द !!

(पाँच) अवतार

यू0पी0, बिहार का कनई में
लड़त –लड़त
एक दिन ,जब भगवान सूअर नियर
सउना गइलन तब
उनकर बराह–अवतार भइल ।

(छव) हुकूमत

मुरुख बा
त हुकूमत बा ।

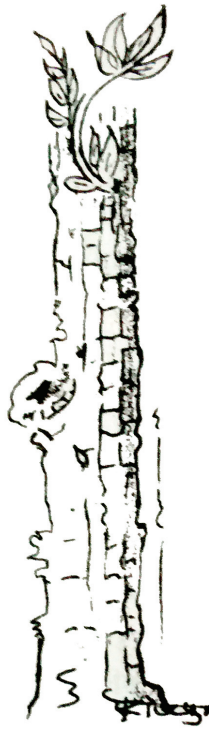

(सात) कवि

खूँटी पर टँगल कमीज
उतारते कई गो मच्छर बे–घर हो गइलन स
कुल् त चुपचाप उठि गइलन सऽ बाकि
एगो मच्छर पाछा से गुनगुनात उठल
साइत ऊ अपना कबीला के
कवि रहे, अपना आशियाना क गीत
गवला बिन ओसे ना रहाइल !!

(आठ) बल

न धन क बल ,न शरीर के बल
न अउर कवनो बल
सबसे बड़ बल होला निरबल!
हे बाबा सत् नराएन ,
काहें निरबले के मिलेला
तहार बल ?

(नौ) हास्य-षडयंत्र

जहँवें देखीं तहवें हास्य
जहवें देखीं तहवें ब्यंग
हई देखऽ ना,
समय, हर चिझुइये
हँसी में उड़वले जाता।

(दस) अरूनोदय

चिड़ा धीरे से कुछ बोलल आ
चिरई खिलखिला के हँस पड़लि
एह तरे अन्हार के लजवावल गइल
आ सुरूज के उगावल गइल!

inkjFkyky d xyh] oklyhxt] fetkiqj, ¼;0 ih0½

सब्जबाग आ मनई

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

'kCnu dk j'keh tky es
v>qjkby Hkdky eubZ
c> uk ioyl eje
lCtckx ds
vk?kjh r Å Hkje dk LoxZ es
iqojr jgs A

vkf[kj]dgs okyk dk
myVckalh ls thm vQuk;s ykxy
xrs &xrs tFkkjFk v>qjk;s ykxy
lkp Å uk jgs]tou Å c>r jgs
lkp bZ jgs fd ,g u;k fefjx jr es
dNÅ uk l>r jgs A
vU/kk/kqU/k vkokt kgh es
fQfdj vk liuk ds chp d nqjh
lcls uk r; gks[kk A

lCtckx d vlfy;r /khjs&/khjs
[kqyr jgs
mgkq r ts tgkq jgs
cl yqVr jgs
tsdjk ekdk uk feyy Å e#okby
vkiu dje dVr jgs
lCtckx tblu dqN uk ymdr jgs A

'kCnu dk j'keh tky es
v>qjkby eubZ
vfHk;ks Hkdqokby dcks budj
dcks mudj eqg rkdr jgs !

lh&39] lsDVj&3] fpjatho fcgkj] xkft;kckn ¼m0iz0½

गदहा के बदला में धोबिया धुनाला

हीरालाल ‘‘हीरा’’

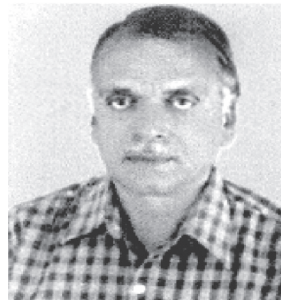

Fkuos dk lks>k xBfj;k fNukyk
ihj c<s vo: tc
gkfde HkqVkyk !

vcjk d ?kjuh yxys Hkm tkbZ
tcjk dk itjk r dgs u tkbZ
lejFk d voxquokZ] xqu cfu tkyk A

vf[k;k d iqrjh fcjkos vf[k;k ds
fpjbZ ds vMk] fl[kkos Nfj;k ds
ekdk ij ifgys] vfdfy;s gjkyk A

ef[k;s d djrc c[kku gks; lxjk
ipu dk crk mrku pys vUgjk
xngk d nkxl] ckfd /kkfc;s /kqukyk A

xkaoh es yfjdk uk] dqdjs [kyko
lkuk ds NkM ykx dkbyk ij /kko
firjs d pded es] ^ghjk* gjkykA

Hkkjrh; LVsV cSad] flVh czkp] cfy;k&277001

कहानी

माँगि आ कोखि

रामदेव शुक्ल

'अकाट गरीबी में जाँगर फटकत जनम बिता देबू कि तनि एसा मन बदलि के अमीर हो जइबू? सोचि समुझि ल, अपने मालिक से बतिया लऽ, हमके बिहने बता दीहऽ।'

कहि के मौसी चलि गइली। कुसुम लगली अपने मन में बाति के मथे। मौसी कहतियॉ कि आन के बेटा अपनी कोखि से जनमावे खातिर हमरा आन मरद की साथे सूते के नाहीं परी। अस्पताल में जाके सूति जाए के परी। ओइजा डाक्टर हमरी कोखि में ओह मरद के बीज रोपि दीहें। नव महिन्ना तक हमरे खइले पियले के सब खरचबरच उहे लोग उठाई । कवनो बेमारी होई त ओकर दवइयो उहे लोग कराई। सब जतन कइले कि बाद जब लइका जनमि जाई तब ओके उ लोग ले जाई जवने लोग से हमहन से कवनो चिन्हापरची नइखे। मौसी ईहो कहि रहलि बा कि लइका जनमवलेके जवन पीरा बत्था होला, उहो हमरा नाहीं होखे पाई। डॉक्टर लोग पेट खोलि के लइका निकारि लीहें। एक अठवारा में हमार घाव सूखि जाई आ हम अपने घरे लवटि के मउज से रहे लगबि। चारि लाख रूपया हमहन के पहिलहीं मिलि जाई आ बकियवा चार लाख अस्पताल से निकलते मिलि जाई। जवन जिनगी आठ सैकड़ा के मोहाल बा ओके आठ लाख मिलि जाई त सब दुख दलिद्दर भागि जाई। कुसुम दिन भरि ईहे कुलि सोचत, समुझत, गुनत मथत, मनही मन लजात सकुचात, गुदुरावन उठले पर मुस्कियात बिता दिहली। बुझइबेनहीं कइल कि कब सॉझि भइल कब अन्हार भइल आ कब शहर से हारल थकल दरसन आके उनके सोझा खाड़ हो गइले। उनकर चेहरा बतावत रहल कि एहू बेर उनके नोकरी नहीं मिलल। जल्दी से पानी ले आके उनके थम्हवली। दरसन मुँह हाथ धोवलें, तबले एक गिलास रस घोरि के ले अइली। रस पी के बइठले तब बिस्कुट आ चाय लेके आ गइली। दरसन पुछलें–बिस्कुट कहाँ किनलू हऽ। कुसुम मुसुकी मारिके बतवली कि मौसी आइल रहलि हऽ। उहे ले आइलि। चाय पियत दरसन अचके चिहा गइलें। पुछलें–'तहार लिलार त एइसन चमकि रहल बा जइसे मौसी कवनो गाड़ल धन ले आके तहके सँउपि गइली। हँऽ।

कुसुम लजा गइली। सोचिए ना पावें कि कइसे बताई? मूड़ी गाड़ि के धरती निहारे लगली। चाय पीके फेरू पुछलें त धधा के उनके अँकवारी में भरि के कसि लिहली। दरसन के दिनभर के थकान आ निराशा कम होखे लागल। जब कुछ देर बाद बाँहि के कसावट ढील कइके कुसुम के मुँह दूनू हथेली में भरि के ऑखि के सोझा कइलें त एक बेर फेरू चिहा गइले। उनकर दूनू ऑखि से लोर बहत रहल। कुछु देरले पोल्हवले, सुहुरवलें, तब जाके कुसुम के लेकार फूटल आ कवनो लेखा लजात लजात मौसी के कुल्हि बात बता दिहली।

सुनि के दरसन त काठ हो गइलें। कुसुम उनके मुँह देखि के अदकि गइली। लगली समुझावे कि काहें जीव थोर करत बानी? कवनो सचहूँ हम मौसी के बाति माने के कहले बानीं? आरे, हमन के जइसे बानीं, ओइसे रहि के जूझते बानी जा। राउर पढ़ल लिखल बेकार नाहीं जाई। कहियो न कहियो काम काज भेंटइबे करी।' दरसन कुछ बोललें नाहीं। उठि के टहरे लगलें। कुसुम कुछ देर उनके टहरत देखत रहली। उठि के रसोई बनावे लगली। रसोई का बनइती, आलू के चोखा आ रोटी बनाके ले अइली। दरसन कहलें– अपनो ले आवऽ साथे खाइल जाव। साथे खाए के बात दरसन तब कहेलें, जब ढेर पियार उमड़े ला। अपनों थरिया परोसि के ले अइली। खात पियत मन कुछ बदले लागल। दरसन कहलें– ऊ कवन मरद हऽ? कुसुम कहली–मौसीकहत रहली हऽ कि मेहरारू सथवें आइल बाडें स। होटल में ठहरल बा लोग। मौसा ओही होटल में काम करेलें। अँगरेज लोग आस्टेलिया से आइल बा। मेहरारू के कोखि के कोखि लइका जनमावे लायक नइखे। ओमें कवनो खामी बा। उ लोग मउसा से पूछल कि कवनो एइसन जवान लइकी बतावें जेकर बियाह भइल होखे। मरद मेहरी राजी हो जइहे त आठ लाख रूपया देई लोग। चारि लाख पहिले चारि लाख बादि में। मौसा घरे आके मउसी से बतवलें। मौसी कहले रहुवे कि उ सोचलसि कि आपन कुसुमिए काहें न तेयार हो जा? ई हे सोचि के आइल रहुवे। बाकिर बिहने आई तऽ हम बता देबि कि हम तेयार नइखीं।

राति दूनू परानी कि ऑखिए में बीतल। पछिले पहर उघाँई लगलि त कुछु अबेर के उठले पर दूनू जने एक दुसरे के सोझे नाहीं ताकत रहलें। कुसुम चाय पियत समय पुछली कि आजु कहीं जाए के होखे त सबरेवें रसोई बना दीं। दरसन कहलें–नाहीं, आजु धरहीं रहे के बा। कुसुम अपने मन के समुझावे लगली कि लालच पाप के बाप कहाला। हमरा एह राहि पर जाए के नइखे। दरसन आपन कागद पत्तर उलटत पलटत रहलें।

तिजहरिया मौसी के अवाई भइल। आहट पाके कुसुम केवाड़ी खोले चलली त दरसन कहले–सोझे

इनकार जानि करिहऽ। तनि हमहूँ मौसी से बतिआइबि। कुसुम केवाड़ी खोलि के मौसी के बोलवली/भित्तर ढुकत मौसी उनकी ऑखि में ताकि के जानल चहली कि का भइल। कुसुम बहँटिया दिहली आ उनके चाय पानी के फिकिर में परली। दरसन मौसी के पैलग्गी कके उनकी लगहीं बईठि गइलें। कहले–'तनि हमहूँ के बताईं का माजरा बा।' मौसी सब हाल छितिरा छितिरा के बता दिहली। अपनी ओर से ईहो कहि दिहली कि कुसुम हमरी लग्गे रहिहें। गॉव जवार कसबा में केहू का कुछ पता नाही चली। अस्ट्रेलिया से आइल साहबे–मेम आपन लइका लेके हवाई जहाज से फुर्र हो जइहें। तहन पॉच इहां चैन के बंसी बजइहऽ।

जाए के तेयार भइली मौसी त दरसन कहलें–'ठीक बा। कुसुम के हम समुझाइबि। ई राउर बात मनिहें। मौसी अपनी कुसुमी के सुबुद्धि के कामना करत बिदा भइली।

सब कुछ ओही लेखा भइल, जइसन होखे के चाहीं। समय पर आपरेशन भइल। लइका आस्ट्रेलिया गइल। कुसुम अगोरत रहली कि घाव सूखि जाव त कुछु दिन बिता के घरे लवटें। एक्के गो तकलीफ रहे कि उनकी छाती में दूध उतरे लागल रहे। मौसी से कहली। मौसी डाक्टर से पुछली। डाक्टर कहले कि अबहिन गारि के निकालि दीहल करें। चार दिन बादि हम दवाई देबि त दूध उतरल बन्द हो जाई। दरसन आपन नवका रोजगार जमावे के जोगाड़ में जुटि गइल रहलें। अपने घर के एह लेखा बनवावे लगलें कि सामने चारि ठे दोकानि निकलि जाँसँ आ केराया पर उठा दीहल जाव। एह नव दस महिन्ना में उनकर बढ़ंती देखि के लोग चिहाए लागल त सब के जबाब मिले कि सरकार पढ़ल लिखल जवानन के पुरहर लोन दे रहल बा। कुछ घर घुमनी ईहो चरचा चलावें कि कुसुम कहॉ परा गइली? दरसन बता देंकि शहर में मौसी किहाँ रहि के कंपूटर सिखि रहल बाड़ी। साल भरि के ट्रेनिंग लिहले कि बाद एइजा आके लइकिन के कंपूटर सिखइहें। औरो बहुत तरह के काम काज पढवइया लइकिन के सिखवे के पलान बनि रहल बा। दरसन के एह परचार से लइकी एतना खुश रहे लगलिन सऽकि घरघुमनी लोग के मुँहवे बन्हा गइल।

तिसरका दिने डॉक्टर के गाडी मौसीके कुवाटर पर हाजिर भइल। तुरंते मौसी के बोलावा रहल। मौसी गइली त डॉक्टर साहेब कि समने आस्ट्रेलिया वाला साहेब मेम साहेब खिरखिनी एइसन लइका के चुपवले में जुटल रहले। डॉक्टर साहब मौसी से बतवले कि लइका बाहर के कवनो दुध पियते नइखे। रातिदिन रिरियात रहता।रोवलहू के टूब नइखे। ओइजा के डाक्टर लोग के कहाव रहे कि महतारिए के दूध पची। साहेब मौसी कौ हाथ में दू लाख रूप्या के गड्डी थमाके हाथ जोरि लिहलें। उनकी ओर से डाक्टर साहब मौसी के बतवलें कि कुसुम एह लइका के आपन दूध पियावें तब्बे एकर जान बची। मौसी कि सथवें लइकवा के लिहले मेमवो आ गइलि। कुसुम के छाती मुँहें में लिहले के बाद लइकवा चुपा गइल। एहर कुसुम के ऑखि से लोर बहे लागल ओर लइकवा के महतारियो सुसुके लगलि। मौसियो मोहा गइली।

कुछुए देर बाद लइकवा पीके अघा गइल आ गहिर नींद में पहुंचि गइल। मेम ओके उठा के अपनी छाती से लगावल चहली। जइसे जरत लुत्ती से छुवा गइल होखे ओह लेख लइका चिचियाए लागल। मौसी ओके लेके आके फेरू कुसुम की कोरा में दे दिहली। तुरंते लइका उॅघा गइल। पहिले साहबे मेम साहेबे सोचले रहले कि दूध पियले की बाद लइका अपने होटल में राखी लोग, बाकि कुसुम के छोड़िके लइका रहबे नाहीं करे। डाक्टर सब हालि जनलें त कहलें – 'छव महीना लइका महतारी के दूध पर पालींजा त जिनगी भरि कई तरह के रोग बियाधि से बचल रहि सकेला। साहेब के धन दौलत के कमी रहल नाहीं। होटल में रहि के लइका पोसवावल ओह लोग खातिर तनिको गढ़ू ना रहे। मौसी फेरू कुसुम के समुझवली कि रतियो के लइकवा के अपनिए लगे रखलो पर अउर रूपया देबे के तेयारी बा। कुसुम अपनहूँ लइकवा के साथे रहले में अजबे तरह के सुख सवाद पावे लगली। उनके घाव भरि गइल। घूमे फिरे लगली। दरसन बीच बीच में अवते रहें। कुसुम से बता दिहलें कि उनके कंपूटर सिखले के बात सुनि के आई जानि के कि लवटि के लइकी कुल्हिनि के सिखइहें पढ़इहें सगरी बहुत खुश भइल बाड़ीसन। कुसुम कहली कि सचहूँ हम कंपूटर सीखि लेई त बहुते लाभ हो सकेला। एहर लइका के देखत रहले के साथ लिहले ओकर माईबाप लोग कुसुम कि लगहीं बनल रहे। पहिले दिन साहेब के देखिके कुसुम मौसी से कहली कि इनकी समने हम लइका के दूध कइसे पिआई।तय भइल कि साहेब ओह कमरा में तब्बे आवे जब लइका दूध पी लिहले होखे। साहेब अगिले दिन आपन कपडा के उठवले अइलें। जबले लइका दूध पियलसि, साहेब बइठका में अपने कंपूटर पर कुछ काम काज करत रहलें। मौसी पुछली–ए साहेब ई का हऽ? साहेब कहलें–एके गोद में राखि के काम करे वाला कंपूटर कहले जाला। मौसी पुछली–एके कुसुम सीखि सकेले? साहब कहलें–काहें

नाही? सीखि सकेली। मौसी कुसुम से कहली। उ पुछली–के सिखाई? मौसी कहली–दरसन से कहब, उहे कवनो के लगा दीहें।

अगला दिने साहेब ओइसने एगो कंपूटर कीनि के कुसुम खातिर लेले अइलें। मेम साहेब कुसुम के देके कहली कि उनही खातिर ई किनाइल ह। एसे सीखि लीहें। खोलि के दुचारि बात बतवली। तले साहेब कमरा में झंकलें आ देखलें कि बिछौना पर लइका अपना हाथगोड़ फेंकि फेंकि खेलि रहल बा। बगल में कुसुम मेम साहेबसे कंपूटर सीखि रहल बाड़ी। मुसुकी मारत साहेब कबो एह लोग के कबो बेटा के निहारत रहले।

डॉक्टर साहेब कुसुम के आ लइकावा के बोलवा के जॉच कइलें। दूनू जने के वजन लियाइल। कुसुम के खाना खोराक के लमहर लिस्ट बना के कहले कि जबले लइका दूध पियत रही तबले तहार खना पीना एह हिसाब से चली। कुसुम हाथ बढ़वली तबले मेम साहेब अपने हाथ में ले लिहली। सॉझ से पहिले सब समान लदले फनले एगो आदिमी आ गइल। पाछे पाछे साहेब–मेम। मौसी के समुझावल लोग कि अब से कुसुम के खानापीना एह लेखा चली। नवका समान बनवले में साहेब–मेम मदद करे लगलें। मौसी कहली–आज आपोलोग एही जा खाना खाई। बिना कवनो ना नुकुर के मानि लिहल लोग। मौसी, साहेब, मेम, कुसुम सब एक्के साथे खाइल। मौसी वाली तरकारी एक चम्मच लेके मेम चिखली आ लगली सीसीकरे। मुँह लाल हो गइल। ऑखि नाक से पानी गिरे लागल। मुँह नाक धोवली, तब्बो सिसियाते रहली। मौसी सेब काटि के हिहली। धीरे धीरे चुभुलावे लगली। साहेब त रोटी पर मक्खन लगा के उसिनल आलू खा लिहलें।

दरसन अइलें। देखते कुसुम चिहा के कहली आपके चेहरा काहे सुखि गइल? खात पियत नइखीं का? कहलें– 'खात पियत बानी, बाकि तहरे हाथ के खइले में जवन लज्जत मिलेला, ऊ त ना नू मिली।

कुसुम बना के हलुवा खियवली। खाना खोराक के नया हाल चाल बतवली। आपन कपडा देखवली। कुछ खटर पटर कइली आ बतवली कि मेम साहब रोज सिखा रहल बाड़ी।खा पी के लवटे लगलें, तले लइका के रोवाई सुनि के कुसुम ओहर लपकली। ओके गोदी में उठा के छाती ओकरे मुँह में धरवली आ ओही जा से बोललीं–तनी लइकवा के देखई का? दरसन कहले–'नाही हो। हम का करब ओके देखि के? आ कहते बहरा निकड़ि गइलें। कुसुम उनके मन के भाव समुझे लगली। लइकवा के चेहरा मोहरा लाल भभूका फरियाए लागल। ओकर ऑखि निलछहूँ लागे आ भउँहवा ललछौंह। सोचली, ठीके भइल दरसन एके नाही देखलें। उनके कलेस होइत।

एक दिन मेम साहेब कहली कि सॉझ के खाना सब लोग ओह लोगन के होटल में खाई। मौसा अइलें त सबलोग होटल से आइल बडकी गाड़ी में बईठि केहोटल पहुँचल। साहेब के कमरा में कुछ देर बइठले कि बाद बड़का हाल में चले के भइल। कुसुम कहली–'हम लइका छोड़ि के नाहीं जाईबि। ओके कोरा में लिहले गइली। सैकड़न लोग बइठल रहे। कवनो मेज की लगे चारि जने कवनो की लगे छव जने कवनो बड़हन रहल त दस बारह जने। रोशनी एतना कम रहल कि कुछ सुझते नहीं रहे। खूब धीरे धीरे बड़ा रसगर कवनो बाजा बाजत रहल। मेंज की लगे पहुंचि के बइठले पर लउकल कि हरमेज पर बीच बीच में मोमबत्ती जरावल बा। ओकरे चारू ओर ललटेन के सीसी लागल बा। बइठते में पर पलेट पर पलेट सजाए लागल। खाए पीए के समान ले आके उर्दी पहिरले बैरा लोग राखत रहल। कुसुम गोदी में लइका लिहले चुपचाप बइठल रहली। मौसी कहली कुछ खा बेटी। कुसुम कहली–मौसी हमके कमरवे में पहुंचा द। बाबू के लेटा के ओही जा खा पी लेबि।

साहेब सुनले त उहो एह लोगन के सम्हारत सहेजत अपने कमरा में अइले। पाछे पाछे बैरा खाना पानी ले अइलें। साहेब कहलें कि कुसुम एइजा खालें, मौसी हाल में चलें। कुसुमो कहली–मौसी तें चलि जो। हमरा कौनो दिक्कत नाहीं होखी। मौसी साहेब की साथे चलि गइली। कुसुम बिछौना पर लेटि के लइका पियावे लगली। जब हिक भरि दूध पी के लइका उँघा गइल त उठि के कुछ खाए लगली। दस मिनट बाद एगो ठकठक सुनि के केवाड़ी खोले उठली। खोलली त देखली कि साहेब साथे बडहन बडहन पलेट लिहले बैरा खाड़रहल। पाछे हटली। बैरा मेज पर समान सजावे लागल त कुसुम ओसे कहली–ई सब उठा ले जा। एतना के खाई। साहेब अपने हाथ से कुछ समान चम्मच से एगो पलेट में राखे लगलें। बैरा से बाकी सब समान ले जाए के कहलें। कुसुम खड़ा रहली। अगोरत रहली कि साहेब निकड़ें त बइठें। साहेब दूनू हाथे से कुसुम के कान्हें पर से घेरि के कुंर्सी पर कइठा दिहलें आ कहले–'खाइए।' कुसुम फेरू उठि गइली आ कहली–'आप जाइए यहाँ से । मैं खा लूंगी। लपकि के केवाड़ी खोलि के कड़ी नजर से ताकि के कहली–'जाइए। 'साहेब चुपचाप निकड़ि गइलें। केवाड़ी बंद क के बइठली आ लगली सोचे कि एह लेखा हमके

पकड़ि के जवने तरे दबवलसि हऽ ओसे तऽ एकरे नेति में खाम सोझे लउकि रहल बा। खैर, आपन मन बस में रही त आन के नेति कुनेति से का बिगड़ी। कुछ खाई के लइका के बगल में सुति रहली। कुछ देर बाद उहे गाड़ी एह लोगन के घरे पहुंचा दिहली स।

छव महीना में कुछुए दिन बाकी रहल। लइका बकइयां खींचे लागल। ओकरा खाड़ होखे खातिर एगो गोल गोल घूमे वाली गाड़ी आ गइलि। बिच्चे में खाड़ करा के ओकर हाथ किओर पकड़ा दिहल जाव। ओही के साथे लइका खड़ा होके डगरे लागे। कबो गाड़ी में चारू ओर लागल कपड़ा में लद्द दे बइठि जा। कबो खड़ा हो जा। अपनी ओर ताकत माई बापके देखि के किलकारी मारि के हँसे लागे। साहेब मेम सब लोग दिन भर ओही के आगे पाछे लागल रहे। साहेब कौनो हरकत फेरू नाहीं कइलें।

एक दिन का भइल कि घर से मौसी आ मेम कुछ देर खातिर बजारे चलि गइलीं। साहेब कंपूटर पर आपन काम करत रहलें। ओह लोगन के बाहर निकरते साहेब कुसुम की कमरा में आ गइलें। बेटा के कोरा उठा के चूमें लगलें। कुसुम से कहले–'यह किसका बाचा है? कुसुम कहली आपका है। साहेब कहलें–'और इसका माँ कौन है?'कुसुम कहली–मेम साहब।' साहेब कहलें–नहीं। तुम्हारा पेट से जनमा है। तुम माँ है। हमारे बेटे की माँ तुम है। तो तुम हमारा क्या हुआ? कुसुम बिना कुछ बोलले धड़ाम से केवाड़ी खोलि के बहरा निकड़ि गइली। ओही समे मौसी आ मेम आ गइलीं। कुसुम आंखी में आगी भरि के कहली–''मौसी! हे साहेबवा के समुझा दे कि ई हमार कोखि किनले रहल। हमार माँगि हमरा सवाँग के हऽ। ओकरे ओर ताकी त एकर आँख फोर देबि।' ●●

■ 'khry l|;'k] jkIrh pk|jkgk ik0 vkjkX; e|fnj] xk|j[ki|j&273003

लघुकथा

साँप

✍ कन्हैया पांडेय

लपटन सिंह मिलिट्री के रिटायर्ड हवलदार रहले। कारगिल पुंछ में दुश्मन के छक्का छोड़ावे में उनुका यूनिट के बड़ा भारी हाथ रहल। जइसे आपन देश कारगिल युद्ध में विजय पवलस, तऽ भइल लपटनों सिंह के रिटायर के कागज मिलि गइल। पूरा बक्सा–पेटी लदले अपना परिवार समेत गांवे आके घर–गृहस्थी में हाथ बंटावे लगले। उनुका ना गंवई राजनीति से मतलब रहल, ना टोल–पड़ोस से। बस! अपना काम से काम रहे।

खा–पी के लपटन सिंह एक दिन शहर अइले। उनुका मलेट्री कैन्टीन से कुछ सामान लेबे के रहे। भोरे से कैन्टीन पर लमहर लाइन लागल रहे। इहों लाइन में खाड़ होके अपना बारी के इन्तजार करे लगलन। गधबेरि खां इनकर नम्बर आइल। झटपट सामान सरिअवलें आ अपना बाइक से घर का ओर चलि दिहले। अभी कुछे दूर गइल होइह नकि एगो जवान औरत हाथ के इशारा से रोकलस गाड़ी रोकि के लपटन पूछलन–"क्या है?" गाड़ी रुकते ऊ निगिचा आगइल–"भाईसाहब। तनी हमरो के बइठवले चलीं। किरिन डूब गइल, सवारी मिलत नइखे।'' ओकरा के परेशान देखि के लपटन सिंह के दया आगइल। ऊ मूड़ी हिला के इशारा कइलन...। औरत गाड़ी पर पीछे बइठि गइल। जब लपटन सिंह गाड़ी स्टार्ट कइलन त औरत अउर सटत बोललि–"आप के कहां तक जाए के बा? "लपटन सिंह जवाब दिहलन–"मनियर तक "आ गाड़ी के स्पीड तनी अउर बढ़वलन। एकान्त राह देखि के औरत अचानक फेरू बोललि–"भाई साहब तनी गाड़ी रोकीं। "हमार चप्पल गिर गइल। लपटन ब्रेक मरलन गाड़ी रूक गइल। औरत झटपट गाड़ी से नीचे उतरल आ लपकि के लपटन सिंह के गिरेबान पकड़ि के बोललि–"जवन पाकिट में दाम बा झटपट निकालऽ, कि हम हल्ला करीं?" लपटन के काटऽ त खून ना। अवाक् रहि गइले–उनका मुंह से निकलल–"अरे... ईका...?" बस चुपचाप रूपया निकालऽ ना तऽ अब्बे हल्ला मचाइब कि ई हमार ....। लपटन कवनो उपाय ना सूझल। आस–पास सड़को किनारे केहू ना लउकत रहे। लपटन गिरेबान छोड़ा के भागे चहलन तबले युवती चिल्लाइल–"दउरऽ लो हो...ई हमार...।" आवाज सुनि के लपटन कांपे लगलन, चुप चाप पाकिट में हाथ डललन... आ सइ–सइ के तीन गो नोट निकालि के झटपट युवती की ओर बढ़ा दिहलन। 'बस... इहेबा हमरा पास।' युवती नोट अपना हाथ में लेके अपना ब्लाउज में ठूँस लिहलस। –तब तक दू आदमी दवरल, लग्गे आइल–''का हऽ जी–? के रहल हऽ ?'' 'एगो सांप रहल हऽ–रेंगत एनिए भागल हऽ।' युवती हाथ के इशारा से बतवलस। ●●

■ vkokl fodkl dkykuh] gji|j] cfy;k

कहानी

कबले रहबू

रमाशंकर श्रीवास्तव

बात जवानी के ह। घर में पतोह कहले रहली कि बाबूजी खेत में से मटर के ढेंड़ी तूर लीयाईं। आज गुदिला भात आ चोखा बनावे के विचार बा।

पतोहिया के केहू समझा देहले रहे कि जोगेसर बाबा मटर के छेमी बड़ा नीमन से तूरीलें। इ कवनो अफवाह ना रहे। जोगेसर बाबा अपना लइकांइए से जीभ के चटोर आ हाथलपक रहले। अपना खेत में ढूकस आ दोसरा के खेत में तनी बढ़ के सेर दू सेर मटर छीमी तूर लेस। उनकर खयाल रहे कि चोरी के माल खाए में ज्यादा सवाद आवेला। अभी परसउंए जियालाल पड़ोसी के मुर्गा चोरा के मजे से खा चबा गइले आ हँसते बाबा से बता गइले।

बाबा आत्म निरीक्षण कर के मने मन हँसले, 'से त इ कमवा हमू कइले बानी। ढेंड़ी तूरला के उ घटना उनकर आजतक ले भुलाइल नइखे। हरेन्द्र बो के बहिन आइल रहली। देह पर जवानी ढींढ़ार बिछकुतिया नियन धीरे–धीरे ऊपर सरकत रहे, लड़किया पूछ देहलस 'इ मोटरी में का ले जात बानी ?' जोगेसर कहले, 'आरे ले का जाएब। अपना खेत के छेमी ह।'

'एक दिन हमरो के खियायेब ना ?'

जोगेसर रात भर खटिया पर करवट फेरत रह गइले। कइसे भोर होखे, हीरा केतना मन से ढेंढ़ी मँगली ह। जवानी के जोश अइसन होला कि सब कुछ लुटा देबे के मन करेला। बेरा चढ़ आइल। हीरा पैड़ा देखत रह गइली। उनकर छवि बेर–बेर आँख के आगे नाचे लागल। मन बहक के इहो सोच लेव, 'पहुनाई के जवान बिटिया सब लाज सरम छोड़ के हमरा से ढेंड़ी मंगल हीयऽ। अउर ना त बीस बाइस दिन ओकरा अइले हो गइल होई। उ केतना हाली हमरो के देखले होई। लाज शरम से बोलत ना रहलस हियऽ।

कइसे कहीं कि लाज शरम में हमरो कुछ बोलल के कहो, ठीक से देखे के हिम्मत ना होखे। बाबा हमरा के लड़िकाइएँ में बता देहले रहनी बायली लड़की या मेहरारू के आँख गड़ा के ना देखेके। आपन मन मार के रहे के चाहीं।

जोगेसर के जवानी अभी तालाब के लहर नियर रह रह के उमड़त रहे। जब हीरा के ठीक से देखले त मन में हलचल होखे लागल। रात के ऊँघी में रह रह के हीरा पलक में सट जास। एक दिन उ किराना के दोकान पर पाचक के गोली कीने खातीर आइल रहली। दू मिनट दुविधा में पड़ल रह गइले पूछीं कि ना पूछीं। तले कंठ अपनही से फूट गइल 'केहू के पेट खराब हो गइल बा का ?'

हीरा भी शायद कुछ कहे के चाहत रहली। एहीं तरी कवनो ना कवनो बहाना लेके दुनू लोग में बातचीत होखे लागल। सोचते सोचते मन में विचार उग गइल कि पूछल जाव शिवनाथपुर में कबले रहबू ?

जोगेसर जब ना तब पड़ोसी के घर का ओर देखे लागस। मन के अजब हाल हो गइल। हीरा अठारह–उनइस साल के होइये गइल होइहें। एह घर का ओर कबो निगाहो ना गइल। आज बेर–बेर ओनहीं ताके के मन करत बा। जब से हीरा अइली ह ओह खिड़की पर हरिहर रंग के परदा लटकल रहेला।

अब उ अपना मन के दसा का कहस। मन के भीतर उठे कि कवनो ना कवनो बहाने अपना बाबू जी से कह दीं 'हमार बियाह इनकरे से कर दीं। अंगना में एक दिन डेहरी पर हाथ धइले माई हमरा बाबूजी से कहत रहे 'अब ज्यादा दिन चुप रहे के टाइम नइखे ? जोगेसर सियान भइले। पतोह बोला के घर बसावे के चाहीं।'

'तू कवना हड़बड़ी में पड़ल बाडू ? बेटा कवनो मछरी ना ह जे रखले रखले सड़ जाई।'

'भला बानी जी, कबो मन में सोहिला नइखे उठत, जे हमरो अंगना में एक पोता माँओं बनके खेलल करो।'

'अच्छा कपार मत खा। आज शिवरात के मेला चले के तइयारी करऽ। भगवान तोहार इच्छा पूरा करबे करिहें।

अभी चारो दिन ना बीतल कि पड़ोसी के दुअरा पर रिक्शा आके खड़ा हो गइल। पहिया के कौनों तार टूट गइल रहे। ओही के ईंटा से मार मार के तार सीध करत रहे। तले जोगेसर के ध्यान ओने गइल। रिक्शावाला से पूछले।

'बड़ा सवेरे सवेरे आ गइल ! केहू जाए वाला बा का ?'

'हं मालिक ए घरी एकबजिया गाड़ी टाइम से आ जात बिया।'

'के जायेवाला बा ?'

'आरे एक जानी बिटिया आइल बाड़ी। उहे अपना गाँवे जइहें।'

जोगेसर के मन गिर गइल। भेंटो भइल त हीरा बतवली ना कि उनका गाँवे लौटे के बा। ओह दिन पुछले रहनीं एहीजा कबले रहबू ? उ कुछ कहे के

चाहत रहली कि उनकर मामा चल अइले। उ चुप लगा गइली।

केहू तरी दू अढ़ाई महीना बीतल। ई दू महीना भारी बेचैनी में कटल। जोगेसर धोबी से धोवा के आपन कुर्ता धोती पेन्हले। घर में जाके देर तकले आपन रूप देहदसा देखत रह गइले। महतारी आके पूछ गइली आज कहीं जइबे का बाबू ? आज पंडित जी के तहार टीपन देखावे खातिर बोलवले बानी। हो सकेला कुछ तहरो से पूछस।

जोगेसर झुंझुअइले 'एही पूछताछ में त दू साल लगा दिहल लोग। जबले हम खुदे हीरा लगे ना जाएब तबले बात कवनो किनारे ना लागी। जोगेसर महतारी के बात पर ध्यान ना देहले आ बस पकड़ के सुल्तानपुर चल गइले।

सोचले हमरा के देखते हीरा चिहा जइहें। मिलते पूछ देब 'अइसन केहू से आँख ना फेरल जाला। हम आपन बातों पूरा न कह पवनीं कि तू तुरते चल अइलू।'

रास्ता में ईंटा से ठोकर लागल। ढिमलाए से बचले। जतरा नीमन नइखें बुझात। रास्ता में के ठेस लागल शुभ साइत ना ह। माई कहले रहे कि ओह दिनके आपन जतरा टार देबे के चाहीं।

हीरा देखते पहचान गहली। उनकर बाबूजी अन्दर से निकल के अइले 'जोगेसर आपन परिचय देहले।'

'बइठल जाव, तनी नास्ता–पानी होखे। रउआ हमरा ससुरारी के आदमी बानी। ठीक से खातीरदारी ना होई तो एमे हमरो त बदनामी होई। असल में हम का बताईं। हमनी का राते से तनी बेचैनी में बानी सन। डॉक्टर के इन्तजार करत बानी सन।

'केहू बीमार बा का ?'

'आरे उहे हमरा घर में एगो चितकबरी बिलाई बिया। ओकरा पेट में दरद बा। केतना दवा दियाइल सुनते नइखे। अच्छा, आपन हाल कहल जाव। हमरे घरे आइल बानी आकि केहू औरी के यहाँ जाएके बा ? हमार बेटी के विदाई के दिन रोपाइल। उनकर ससुरारी के लोग काल्ह आवेवाला बा। बियाह त दू साल पहिल ही हो गइल रहे। अब गवना होई।'

जोगेसर के आगे तश्तरी में चाय मिठाई रखाइल। उदास मन से कहले 'जी ना हम अब चलेब। अउरी काम बा। फेर मिलब।

जंगला पर के हरिहर पर्दा हिलल। जोगेसर के बुझाइल जे उनकर दुनिया हिल गइल। जब हम हीरा से पूछनी कबले रहबू ? त हंस के रह गइली।

रास्ता में सोचत घरे लवटले। मालूम भइल की पुरोहित जी टीपन देख के गइले। एकावन रुपया दछिना दियाइल बाकी गणना ना बइठल। जोगेसर के टीपन में राहू बाधा। डालत बा।

खटिया के पाटी पर बइठते जोगेसर के मन में आइल कि एह पाटी के तूरतार के आग लगा दीं।

Vkoj 1@601] cojyh ikdZ vikVZeSV]
lsDVj 22@2 }kjdk] ubZ fnYyh&110077

'साँझ आ विहान'

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

कबो लगे साँझ आ, बिहान कबो जिनिगी ।
कबो लगे रसमय, बिरान कबो जिनिगी ।।

दूबिया के कोर पर, शबनम बनि झलके,
बुढ़िया के अँखियन से, लोर बनि ढरके,
मड़ई के चूवत, ओरियान लगे जिनिगी।
कबो लगे साँझ.......................।।

पतझर के अवते, बगइचो उदासल,
गरमी से झुलसल, पोखरिया पियासल,
फुनुगी, पर लटकल परान लगे जिनिगी।
कबो लगे साँझ.......................।।

फटही लुगरिया में, छत्तिस गो पेवनवाँ,
छत्तिसों के अलग– अलग बटुवे विधनवाँ,
पहिले से परिचित, अन्जान लगे जिनिगी।।
कबो लगे साँझ.........................।

खेतवा में फुटे जब, पियर– पियर डिभिया,
हवा–पानी– घाम पाइ, हरियराय जिभिया,
बरिसन के बटुरल, अरमान लगे जिनिगी।
कबो लगे साँझ.........................।।

xzke& iksLV& ejhVkj] cfy;k ¼m0iz0½

कहानी

पराया घर के बेटी

जनकदेव जनक

संजू के शादी के दू बरीस बीत गइल रहे। अब उ एगो लइका के माई बन गइल रही। ओकरा बादों उनकरा घर में शांति ना रहे। हरमेशा सास–पतोह में झगड़ा होते रहे. उ इहे सोचत रहस कि कवन अइसन काम करस, जेकरा से उनुकर सास राधा आ ननद मुन्नी खुश हो सकस. सबसे बड़ दुख उनुका तब होखे जब राधा से कुछों पूछला पर जबाव देस कि मुन्नी बबुनी चाहे जमाई बाबू से पूछ ल, उहे लोग तोहरा के ठीक से समुझा दिही कि का करे के बा कि नइखे करे के।

एक दिन संजू घर के कपड़ा धोवत रही. ओकरा में उनका मरदो संजय के कपड़ा रहे। साबुन घिसला से खिया के छोट हो गइल रहे। तब उ अपना पड़ोसी जमुना से एगो साबुन मंगवा लिहली, बाकिर जमुना से साबुन लेत उनकर ननद मुन्नी देख लिहली। ई घटना उनका खातिर महंगा पड़ल। मुन्नी अपना माई के कान फूंकदिहली। ई बात सुनते राधा बोल पड़ली,'' अरे मुनिया, घर के सभे लोग मर गइल रहल का रे कि तोर भऊजी जमुनवा से साबुन मंगवा लेलस हिअऽ। संजय के डयूटी से आवे दे तब एकर सहकल निकालत बानी..अबहीं से एकर पांव चौखट से पार होखे लागल त पता न बाद में का करी..? ''

रोज रोज के झगड़ा आ खोभसन से संजू के देह दुबरा के आधा हो गइल। चिंता आ फिकिर से उनुकर दिमाग हरमेशा गर्म रहे लागल। बार–बार एके बात दिमाग में आवे कि घर में कमाये वाला उनकरे पति संजय बाड़ेंन, ओकरा बादों एह घर में उनकर कवनों मान सम्मान नइखे। काहें ना अपना मरद पर आपन अधिकार जता के दबाव बढ़ाईं। हर माह उनुकर तन्खाह के पइसा हथिया लिंही, तब सास–ननद के नकेल कसल जा सकेला।

संजू के मरद संजय भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के पूर्वी झरिया क्षेत्र में एकाउंटेंट रहले। माई बाबू के काफी दुलरूआ। हर माह ऊ आपन तन्खाह अपना माई के हाथ में देस। बाकिर एह माह त संजू उनुकरा पाकिट से तन्खाह निकल लेले रही। जब संजय के मालूम भइल त उनकर हाल सांप छुछुंदर लेखा हो गइल। माई उनुकर बार– बार पइसा मांगस। दू चार दिन बहाना मरले, बाकिर कब तकले? ऊ अपना माई के देखते कन्नी काट के निकल जास। एक तरफ माई के ममता रहे त दुसरा तरफ मेहरारू के पियार। घर में बढ़त तनाव से उनुका ऑफिसो में काम करे में मन ना लागे।

एक सप्ताह बाद संजू अपना मरद संजय के 20 हजार रुपया देत कहली,'' ई रुपिया घर खरच खातिर ह, माई के दे दिही। बाकी रुपिया हमरा लगे रही. ''

''ठीक बा रुपिया राखऽ, बाकिर बेहिसाब खरच मत करिहऽ!''

'' जहवां खरच होता उहवां त बोलते नइखीं, उलटे हमरे पर चाँप चढ़ावत बानीं,काहे ?'' संजू सहजभाव से कहली

''एह घर में के फिजूल खरच करत बाटे?'' एकाएक आक्रोशित होत संजय बोल पड़ले।

''चिल्लाई'' मत, दिमाग पर काबू राखीं. हम पूछत बानी कि जमाई बाबू के घर दुआर बा कि ना, दू बरीस से एह घर में सरनारथी नियर काहे राखल गइल बानी? बेहिसाब खरच त ओही लोग पर होता। बोलीं, चुप काहे बानीं?''

संजू के बात में दम रहे। एह से संजय अपना मेहरारू के सामने टीक ना पवले। चुप चाप हाथ में रुपिया लिहले उ बथानी गइलें। उहां उनुकर माई ना रहली। एह से रुपिया अपना बहिन मुन्नी के दे दिहलें।

अब घर में जमाई बाबू राहुल आ मुन्नी के लेके झगड़ा होखे लागल। कबहूं ननद–भऊजाई लड़ पड़स त कबहीं सास पतोह के रगड़ा शुरू हो जाव। एही बीच संजू के कीनल एगो शीशा के गलास घर के सफाई के दौरान मुन्नी से फूट गइल. एकारा बाद ननद –भउजाई में जबरदस्त नोंक झोंक भइल। संजू मुन्नी के भिखारिन कह दिहली, ई बात राधा के मालूम हो गइल। ऊ अलगे संजू पर बरस पड़ली।

' तोर अतना मजाल कि हमारा बेटी के भिखारिन बोल देले ह, उलटा सीधा हमरा बेटी के बोले वाला ते हईंस के?'' सास राधा फट पड़ली।

'' ई घर हमार ह कवनों धरमशाला ना, हमार बोली लोग के ठीक नइखे लागत त इहां से उ अपना घर चल जाव..''

''हम अपना बेटी के राखब। देखत बानी के निकालत बा ?''

'' केकरा बल पर राखेंम, ना जमाई बाबू कामत बानी ना ससुर जी, हरमेशा संजय के मुड़िये पर ठिकरा फोड़ाई का ? ''

संजू के जबाब से राधा तिलमिला उठली। उनुकर बोलती बंद हो गइल। पागल कुतिया नियर भौंकत मुन्नी के साथे बथान के तरफ भाग गइली।

ऑफिस से अइला के बाद संजय के मन घर में ना लागल। उ अपना बथान में जा के बइठ गइलें। ओहीजा माल जाल के खियावत सोचे लगलें। पता ना एह घर में केकर नजर लाग गइल बाटे? हंसत खेलत जिनगी नरक बन गइल बा। संजू के बात से जहवाँ माई परेशान बिया, ओहीजा बहनो के घर काटे दउड़ता। बाबू जी

फेरू से फेरी के काम शुरू कर देले बानी। माथा पर कपड़ा के गठरी लेले गली कूची में घुमल फिरत बानीं। का करीं कुछ समझ में नइखे आवत। ओही टाइम मुन्नी आ गइलीं। भाई के उदास चेहरा देख के बोल पड़ली, '' भइया काहे मन मरले बाड़? ऑफिस में कवनों बात भइल बा का?''

'ना मुन्नी कवनों बात नइखें,अइसही बइठल बानी।'

'' ना भइया, तू कुछ छुपावत बाड़ऽ, सांच सांच बताव। हमार किरिये ,जरूर कवनों बात बा।'' मुन्नी अपना भाई पर अधिकार जमावत पूछ बइठली।

''का कहीं कहल जात नइखें, जानते बाड़ू राहुल बाबू के लेके घर में कोहराम मचल रहता। हम चाहत बानी कुछ दिन खातिर तू लोग अपना घर चल जइत।'' अपना आत्मा के मार के संजय बहिन से ई बात जइसे बोलते रहस, तले उनुकर माई आ गइली आ लतारे लगली उनके।

'' हम ना जननी कि तू हमारा कोखी से मेहरी के गुलाम जनम लेबऽ। आरे निकालहीं के बा त बहिन के ना माई–बाबू के निकाल द, जेसे तोहरा मेहर के छाती ठंढ़ा हो जाव!''

एह घटना के बाद मुन्नी अपना मरद के साथे धनबाद में रहे लगली। बीच में जब भी मोका मिले, माई–बाबू से मिले खातिर आ जास। आपन दुखम –सुखम सुना के फेरू लवट जास। एक दिन मुन्नी अपना माई से कहली, '' धनबाद वाली जमीन हमरा मिल जाइत त ओहमें घर बना लिहतीं, भाड़ा के मकान में रहल बड़ा कठिन बा। रोज कबहीं पानी खातिर त कबहीं बिजली खातिर मकान मालकिन से चख चख होत रहत बाटे। घर बन जाई त तुहूं लोग आ के रह सकत बाड़ऽ जा।''

राधा के ई बात पसंद आइल. उ मुन्नी से कहली कि जमीन लेवे के बा त अपना बाबू जी से बोल। काहे कि उहें के नाम से जमीन बाटे। मुन्नी के बगल में बइठल उनकर बाप धीरज हामी भर दिहलें। बेटी दामाद के नामें जमीन रजिस्ट्री हो गइल।

मुन्नी के मरद राहुल लालची किस्म के आदमी रहस। ओकरा पास स्वाभिमान नाम के कवनों चीज ना रहे। धनबाद में ऊ एगो प्राइवेट कंपनी में काम करत रहस। अतना पइसा मिल जाव, जेसे दुनू परानी के जीवन बढ़िया से कट सकत रहे, बाकिर जब राधा जइसन सास घर जमाई बनावे के तइयार रही त राहुल के का एतराज? उ मुन्नी के साथे ससुराल में बैठ के गुलझाड़ा उडावत रहस आ आपन पइसा बैंक में जामा करस। ओही पइसा से जमीन मिलला के बाद घर बना लिहलें।

संजू के जब धनबाद वाली जमीन पर मुन्नी के घर बने के खबर मिलल त उ उनका पैर के नीचे से धरती घिसक गइल। विश्वास ना भइल. ऊजा के घर देख अइली। अपना मन के आक्रोश अपना सास–ससुर आ पति पर उतरली। सास ससुर के हुक्का पानी बंद कर दिहली।

बेटा के चुपी आ बहू के बेरूखी से संजय के पिता धीरज बेमार पड़ गइलें। ऊ बार बार घर के बिगड़त हालात के सुधारे के कोशिश कइलें, बाकिर हालत आउर बिगड़त चल गइल. अब मन मारके कपड़ा के फेरी में आपन समय काटत रहलें।

धीरज के बेमारी से राधा के हेकड़ी भुला गइल रहे। सबसे बड़ा दुख त उनुका अपना बेटी –दमाद पर होखे। जबले घर ना बनल रहे हर टाइम दुनू घर के माटी कोड़लें रहस। घर बनला के बाद त साफे भुला गइल रहस। मरद के बेमारी से राधा के हाथ खाली रहे, सोचली कि बेटी –दमाद के मदद से धीरज के कतहीं अस्पताल में भरती करा दी। इहे सोच के बेटी के घर गइली।

धराऊ कपड़ा पहिर के मुन्नी आ राहुल कतहीं जाये के तइयारी में रहे लोग। ओही समय में राधा पहुंचली। दुनू जाना देख के बड़ा खुश भइल लोग। मुन्नी हंसत बोललली कि बड़ा खुशी के मउका पर आइल बाड़ू माई। एगो बिआह समारोह में जात बानीस, कंपनी के मालिक के बेटी के शादी बा।

''हम बारात करे नइखीं आइल बबुनी, तोहरा बाबूजी के तबियत बहुते खराब बाटे. उनुकरा के कतहीं भरती करा द लोग. '' ई बात कहत राधा के आंख छलछला आइल.

''आरे माई, आपो एह खुशी के मउका पर का रोवे धोवे लगली। पाकल फल के कहिया ले गाछ पर टँगले राखब? चलीं, बारात से अइला के बाद भरती करावे के बारे में सोचल जाई।'' राधा के दमाद राहुल मुन्नी के बोले से पहले बोल पड़लें।

दमाद के बोली राधा के करेजा में गोली नियर लागल। दिल दिमाग झनझना गइल। उनकर आहत मन कहलस कि बेटी के ममता में पतोह के दुश्मन बना लिहलू, अब त बेटी दमाद के अपमान सहे के पड़बे करी। आंखी में लोर भरलें ऊ उहां से गोड़ पटकत घरे भगली।

संजू जबसे मुन्नी के घर देख के आइल रही तब से उनकर दिन के चैन आ रात रैन उड़ल रहे। हरमेशा मरद मेहरारू में महाभारत छिड़ल रहे। संजू कहत रही,'' तोहरा अपना बाल बच्च के फिकिर नइखे, बाकिर हमरा त बाटे। तू जवन कमइलऽ तवन अपना माई, बहिन आ बहनोई पर लुटा दिहलऽ चार कट्ठा धनबाद में जमीन रहे ,उहों तोहार बहिन छीन लिहलस, ओह में तोहार हिस्सा ना रहे का ?''

''जमीन त बाबूजी के नाँवे रहे. ऊ अपना बेटी के दे दिहलें त का हम जिंदा ना रहब?''

''तोहरा जिंदा रहे के बा त रहऽ बाकिर जबले ओह जमीन के बदले जमीन ना मिली, हमार छाती के आग ठंढा ना होई।''

संजय के अइसन लागल कि संजू पगला गइल बिया। ऊ जतने पियार से समुझावे के कोशिश करस, उ ओतने बढ़ चढ़ के बोलत रहे। संजय के लागे कि एक तरफ बाप बेमार बाड़ें, झगड़ा के डर से उनुकर इलाज नइखे हो पावत। घर में जबले रहब झगड़ा होते रही, इहे सोच के ऊ घर से बाहर जाय लगले, तबही संजू गुस्सा में नागिन खानी फन कढ़ले उनकरा आगे आके खड़ा हो गइली आ बोलली,'' आपन भलाई चाहत बाड़ऽ त फैसला क के जा.., एह घर में हम रहेब ना त ई बूढ़ा बूढ़ी.. ।''

'' तोहार अतना मजाल कि हमारा जीते जी माई बाबू के घर से निकाल देबू, तोहार हाथ गोड़ तूड़ के जिंदा जमीन में गाड़ देहब..'', खिसिया के ऊ जइसे मारे खातिर संजू के ऊपर हाथ उठवले , ओही बीच उनुकर बेमार बाप बीच में आ गइले। संजय के ऊठल हाथ रूक गइल। ऊ बाप के सामने खड़ा ना हो पवले, तुरंत घर से घिसक गइले।

''अरे बेटी, शांत हो जा। जादे गुस्सा ठीक नइखे। हमनी के घर से निकाले के जरूरत नइखे। हम दुनू परानी अबहीं घर छोड़ के चल जात बानी सऽ। जाते जाते तोहरा से ईहे कहब कि बेटी के ममता में खुदगरज बन गइल रहीं। जवना से तोहार हक मार देले बानी। एह बेइमानी के सजा सिर माथे पर। जब आपन जामल खून दगा दे देलस, त तूँ त पराया घर के बेटी हऊ..''। अतना बोल के धीरज अपना राधा के साथे चउखट पार कर गइले।

अचानक ई बात संजू के करेजा में धक से लागल. आसमान में उड़त उनुकर मन धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ल। सास ससुर के जात देख के उनुकर आंख बरस पड़ल। दूनू के रोके खातिर ओ लोग का पाछा दउर परली। ●●

lCth cxku] fyykjh iFkjk] ik >fj;k] ftyk /kuckn] >kj[kM ¼Hkkjr½

कथक्कड़ी

छागल आ पागल

विनोद द्विवेदी

जरूरी नइखे कि राजा क बेटा हरमेस राजा होखे। अगर राजा क संतान, लूल–लँगड़–आन्हर, भतिभरम आ पगलेट निकलल तब? राज के चलावे वाला मंत्री, सलाहकार चल्हाँकी से ओहू के उपाइ निकालिये लेलन सऽ। ई सब बहुत पहिले से होत आइल बा। अन्हेरपुर नगरी के राज काज अइसहीं चले। भाजी आ खाझा दूनो टके सेर बिकाव। एक तरह से समाजवादी बजार रहे, ओह राज में।

एह राज क कथा दूसर बा। राजा, अतना हुँसियार कि अपराध क 'सोरि' खोजत–खोजत तह तक पहुँचे आ तब जाके फैसला सुनावे। एक बेर राज में, आधी रात खा, सात गो चोर, एगो घर में, चोरी खातिर सेन्ह खोनत रहले सऽ। सेन्ह क दुआरि चाकर भइला पर, जब ऊ भीतर घुसत रहले स, तले देवाल भहराइ के बइठि गइल। ओमे चार गो चोर दबाइ के मर गइलें सऽ। दुसरा दिन तीनों चोर रोवत–गावत राजा–दरबार में फरियाद लगवले सऽ, 'सरकार हमन चोरिये से आपन जियका चलावत रहलीं जा, बाकि रात खा देवाल भहराइला से हमहन क चार गो साथी दबाइ के मर गइलन सऽ। न्याय करीं महराज, हमहन क हर्जा–खरचा मिले के चाही।'

–'देवाल केकर रहे? घर वाला के हाजिर कइल जाव!' मंत्री बोलल त घर वाला के बोलावल गइल। राजा पुछलन– 'तूँ एतना कमजोर देवाल काहें बनवलऽ कि भहरा गइल? चार गो गरीब दबाइ के मर गइले सऽ।'

घर वाला घिघियाइल, 'हमार कवनो कसूर नइखे महराज हम जवना मिस्त्री से घर बनववली, ऊ हमार देवलिये टेढ़ क दिहलस।

राजा सोच में परि गइलन। दरबारियन का सलाह पर राजमिस्त्री के पेशी भइल, ऊ सफाई देत गिड़गिडाइल, 'सरकार, हम त पूरा मन से देवाल जोड़त रहलीं, बाकिर एक दिन, जोड़ाई करत खान, बदन का मेहरारू के छागल छमछमाइल त हमार ध्यान उनका छागल का झुनझुन में अझुरा गइल। बुझला एही में देवलिया टेढ़ हो गइल। हमार कवनो दोष नइखे हुजूर, ऊ 'छागल' का वजह से ई कुल्हि भइल।'

राजा अकुता गइल रहलन। बदन का मेहरारू के तुरंते पेशी भइल, ऊ थर–थर काँपत कहली, 'दोहाई सरकार के, एमे हमार कवनो कसूर नइखे, हम बर्मा सोनार से, सुघर–सवखीन छागल बनावे के कहले रहलीं। अब ऊ झुन–झुन झमके वाला अइसन छागल बना दिहले, कि हमरा चललो पर बाजे लागल।

राजा दिकियाइल सोनार के बोलाइ के डपटले, 'तें काहें ध्यान भटकावे वाला अइसन छागल बनवले कि, मिस्त्री बउराइ गइल आ ओकरा कारन देवाल टेढ़ हो गइल? तोरा वजह से चार गो गरीब चोर दबाइ के मू गइले सऽ?' बर्मा सोनार घिघियात कहले, 'सरकार, हमहूँ त कारीगर हईं हम त मनपसंद कारीगरी कइलीं।। ए दुर्घटना में हमार कवन दोस? राजो अब पूरा पाक चुकल रहले। बर्मा सोनार के फाँसी क सजा सुना दिहले। ●●

vkj- ch-lh-] ,u 10@79 vkj- d- i[je] ub dkykuh] ddjeRrk] okjk.klh

कहानी

सौ के नोट

तुषारकान्त उपाध्याय

विष्णुदत्त आज भोरहीं से कुछ–कुछ बेचैन बाड़े। गर्मी के एह घोर दुपहरिया में उनकर ए.सी. लागल कमरा थोड़कियो ठंडा करे में हार जाता। देह त ठंडाता बाकि मन के बेचैनी कतहूँ चैन नइखे लेवे देत। तीन महीना में ई प्रोजेक्ट बंद हो जाई।

इ अंर्तराष्ट्रीय एनजीओ दुनियां के तमाम पिछड़ल देशन में अलग–अलग विचार व मुद्दा के 'प्रोजेक्ट' ले के आवेला। सरकार व समाज के बड़ा मदद मिलेला। बाकि कुछ ही दिन में उनकर समय खतम अउरी प्रोजेक्ट बंद। जइसे खंभा पर टिकल कउनो झोपड़ी के खंभा हट जाए अउरी झोपड़ी धड़ाम से गिर जाय। फिर ओ मुद्दन के देखे वाला केहू ना रह जाला। अउरी ओ प्रोजेक्ट में काम करे वाला लोग फिर दुसरा जगह जाए के जोड़–तोड़ में लाग जाले।

अठाहरह साल से विष्णुदत्त अइसहीं एनजीओ के प्रोजेक्टन में नौकरी करेले। ऊंचा तन्ख्वाह, बढ़िया सुख–सुविधा आ जीवन के हरेक जरूरत के पूरा करेके साजो–समान। बाकि प्रोजेक्ट के बंद होगइला पर फिर उहे उहा–पोह। अब त विष्णुदत्त के प्रोजेक्ट के अंतिम समय आ गईल बा। बहुत से साथी–संगी दुसरा जगह निकल गइले। जौन लोग के कहीं मौका ना मिलल उनकर बेचैनी उहे समझत बाड़े। उनकर कुल संगी लोग कमोबेश एही दशा से गुजर रहल बा।

कोठरी में अनायास एने से ओने टहलत उनकर माथा भिनभिना जाता। अतना किश्त, बच्चन के पढ़ाई लिखाई, घर के खर्च कइसे चली? बचा के कुछ रखले ना। उनकर आंख सामने रखल किताबन के अलमारी पर टिक जाता। एने से ओने किताबन के उलटत अचके में उनकर नजर कोना में रखल एगो लाल रंग के डायरी पर टिक जाता। पूरा जिनगी में विष्णुदत्त इहे एगो डायरी लिखले बाड़े। न कउनो साल, ना कउनो समय के महत्व। बस जीवन के कुछ घटना। डायरी के पन्ना पलटत उनका हाथ में ''सौ के एगो नोट'' आ जाता। संभाल के दू पन्ना के बीच में रखल जइसे छाती करेजा के संभार के रखेले। उलट–पुलट के नोट के सहलावत विष्णुदत्त पच्चीस साल पहले का समय में चल जा तारे।

आपन साइकल लिहले विष्णुदत्त प्रो. तिवारी के नया बन रहल मकान प पहुंच गइले। जून के दुपहरिया में अपना कॉलोनी से प्रो. तिवारी के घर आ फेर उनका नया बन रहल मकान तक जाय में उनकर जइसे खून निचुड़ गइल होके। साइकिलो त बाबूजी के जमाना के मरम्मत कराके कइसहूं चढ़े लाइक बनल रहे। बाकि पैदल से त ढेरे निमन रहे। समय त कम से कम बाँच जात रहे। सिविल सेवा के परीक्षा के धुन कउनो नशा से कम थोड़े होला। एकरा आगे का जाड़ा, का गरमी अ बरसात। बस एगो धुन 'परीक्षा के तैयारी।'

प्रो. तिवारी अपना विश्वविद्यालय के चर्चित प्रोफेसर रहले। आ उ सिविल सेवा के परीक्षा के तइयारी खातिर एगो कोचिंग खोल देले रहले। जइसे जइसे उनकर विद्यार्थी लोग सफलता के झंड़ा गाड़स कोचिंग में भीड़ बढ़ते जात रहल। अउर प्रो. तिवारी के नाम और यश दिनों दिन दूर तक फैइले लागल रहे। उ जतने विनम्र रहले ओतने व्यवहारिक। हिसाबो किताब बड़ा साफ राखस।

विष्णुदत्त के बाबूजी सरकारी नौकरी में ऊंचा पद पर रहले। पूरा जिनगी सम्मान आ ईमानदारी से बितउले। परिवार अउर हीतनाता खातिर जतना हो सकल सब कइले। लेकिन तबीयत एइसन बिगड़ल कि बरिस गुजर गइल बिछावन अ अस्पताल में। तन्ख्वाह बन्द। रखल पइसा डॉक्टर अउर दवाई में अउर बाकि घर चलावे में। घर अब धीरे–धीरे फांका मस्ती की ओर बढ़े लागल रहे। सरकार त प्रार्थना अपना हिसाब से सुनेले। हित नाता कहां भुला गइले, पता ना।

बड़ा उम्मीद लेके विष्णुदत्त प्रो. तिवारी से मिले के हिम्मत जुटवले रहले। उनका पता रहे कि उनकर फीस देवे के औकात नइखें। तबो थोरकी त स्वजातीय होखला के चलते अन्हारा में अँजोर के एगो किरिन लौकत रहे। भर रास्ता उ मन ही मन आपन एकक गो शबद के चुनत जात रहले। उ अइसे कुछ बात रखिहें कि प्रोफेसर साहेब पढ़ावे खातिर जरूरे तइयार हो जइहें। अगर उ परीक्षा में चुना गइले त सूद मूर के साथ कुल फीस उनका गोड़ पर राखि दिहें। पूरा जिनगी उनका एह अहसान के कइसे भुलावल जा सकेला।

प्रोफेसर तिवारी के चेहरा अचानक तमतमा गइल। बड़ा धीरज से उ पूरा बात सुनले रहले।

'आजकल के लइका लइकी तनिकी सा पइसा बचावे खातिर कइसन कइसन कहानी गढ़ ले तारे। आ भेसो भूषा अइसन बना लिहें कि अचके में विश्वास करे के मन हो जाइ। लेकिन हमनी के रात दिन इहे त देखत बानी जा युर्निवसिटी में।' अपना बगल में बइठल एगो परचित की ओर मुंह करके प्रोफेसर तिवारी बड़ा खीस भरल भाषा में कहले। उनकर चेहरा लाल हो आइल रहे। अउर देह तमतमा गइल रहे।

विष्णुदत्त के मालूम रहे कि इ कुल बात उनके से कहल जा रहल बा। चुपचाप उठले प्रोफेसर तिवारी के गोड़ छूअले आ अपना घर के ओर। अब त उनका संगे अकसरे अइसन होत रहे।

''कुछ लेवे के बा सर!'' घरेलू साजो–समान बेचे वाला ओह बड़का शो रूम में प्रोफेसर तिवारी के गोड़ छूअत सामने आके विष्णुदत्त खड़ा हो गइले। प्रोफेसर थोरकी सा दिमाग पर जोर देके पहचान गइले।

''अरे शुक्ला! विष्णुदत्त न? कुछ लेबे आइल बाड़ऽ का। हम त अपना घर खातिर कुछ गीजर खरीदे आइल रहीनि ह। घर में बच्चा बड़ा जिद करत रहले ह।'' साथे आइल अपना बेटी की ओर इशारा करत प्रोफेसर एके सांस में बोल गइले।

'जी ना सर।'

'त'

'सर! हम एइजा सेल्समैन के नोकरी करेनी।'

'अरे!' जइसे प्रोफेसर के कुछ सुनात ना होखे। उ धीरे–धीरे शो रूम की ओर कोना में जाके चुपचाप खाड़ हो गइले।

'दस मिनट खातिर छुटटी मिल सकेला का विष्णुदत्त?' जइसे उ अपन दुनियां से वापस लौटत विष्णुदत्त से पुछले।'

'जी ! का करे के बा सर?'

'कुछ ना हमरा संगे बगल के रेस्तरां में एगो एक कप कॉफी।'

विष्णुदत्त शो रूम के मालिक से छुटटी लेके प्रोफेसर तिवारी आ उनका बेटी के पीछे–पीछे हो लिहले। रेस्तरां के लाउंज में बइठत प्रोफेसर तिवारी कॉफी अउर पनीर पकौड़ा के ऑर्डर दे दिहले। अउर जब तक बेयरा सामने टेबल पर इनकर आदेश के पूरा करे तब तक सब लोग चुपचाप बैठइल रहले।

'ओह! त रउवा ठीके कहत रहनी हँ' थोड़ी देर के बाद प्रोफेसर तिवारी जइसे अपना आपे से बात करत होखस।

पनीर पकौड़ा के टुकड़ा उठावत विष्णुदत्त कनखी से देखले, प्रोफेसर तिवारी आपना आंख के भीजत कोर अउर ओकरा के रोके के नाकाम कोशिश में चेहरा गील क लेले रहले।

'रउवा के छुटटी कब मिलेला विष्णुदत्त?'

'जी एतवार के।'

'तब एतवार के हमरा घर पर जरूर आइब।'

विष्णुदत्त आंख झुकवले अपना भीगत मन में चुपचाप उनकर बात मान लिहले।

एतवार के प्रोफेसर तिवारी एगो नया रूप में मिलले। पूरा स्नेह आ अधिकार के साथ। आखिर पढ़ाई कइसे होखे पावत होई विष्णुदत्त? आपन वाजिब चिन्ता जतावत विष्णुदत्त के सारा नोट और ढेर सारा किताब एक साथे पकड़ा देहले। जिद करके खाना खियले आ चले के बेर पूछले, 'कइसे अइनी ह घर से।'

'जी, बीचे बीच पैदले चल अइनी हाँ।'

'प्रोफेसर तिवारी पॉकेट से ''सौ रूपया के नोट'' विष्णुदत्त के पॉकेट में बरियारी ठूँसत आदेश भरल लहजा में कहले 'एने से टैम्पू से जाइब।'

विष्णुदत्त घरे आ गइले। लेकिन ऊ सौ रूपया के नोट आजो उनका पास ओइसहीं पड़ल बा।

'पापा! चाय पी लीजिये', पता ना केतना देर के बाद विष्णुदत्त के तंद्रा टूटल रहे बेटी के आवाज सुनके।

आह! जब ओह दिन से निकल अइनी, त कुछ न कुछ रास्ता बनिये जाई।

ओह नोट के डायरी के बीच में सुरक्षित राखल विष्णुदत्त के चेहरा फिर से एगो नया उम्मीद से भर गइले रहे। ••

eu jkM] c)k dkykuh ¼Lo0 vfuy ikM; vkb-ih-,l- d cxy e½ iVuk&800001 ¼fcgkj½

गीत

समाजवाद सइकिल पर

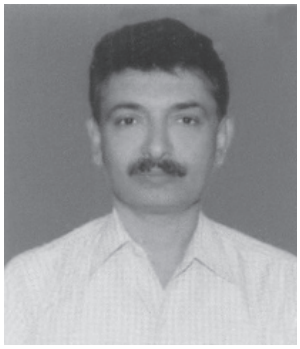

✍ शशि प्रेमदेव

ehyy ck dlh r· Qnk mBk yh vk
dhu yh uk] lb;k] tgft, gokbl!
&lektokn lkbfdy i· dcy <kvkbl\

lkbfdy ck vCcj] fudfl dtkbl gkok!
urk th] vc jf[k nh ,d Qykok!
lkbfdy d· jmok djc tk lokjh
ckuh fc/kk;d] b dbl c>kbl\\

lek] lQkjh uk Dokfyl] djkyk!
uhd jgh lcdk y mMu [kVkyk!
xmok fugkjh] uxfj;k fugkjh
egg nvknu d dfj[kk ikrkbl!!

lj/kk crko d· bg ck ekdk!
lkpfc] lokpfc r· gk tkbl /kk[kk!
cfj&cfj fdjik uk dfjg Hkokuh
Qj&Qj vblu lrkj uk HkVkbl!!

dlh dyio{k] t dl d >kjh!
Hkfj tkbl rfud e vkdj frtkjh!
xk/kh vk ykfg;k d ub[k tekuk
yfV&yfV xkft fygh] rhu igr [kkbl!!
lektokn lbfdy i dcy <kokbl\

••

vxth ioDrk] dojflg b.Vj dkyt]
cfy;k&277001

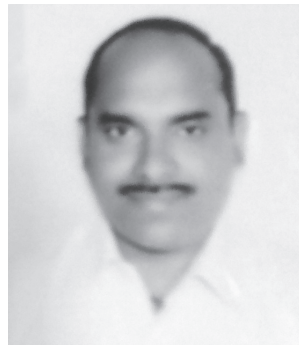

दू गो गजल

✍ नवचनद्र तिवारी

(एक)

'kCn x: d]Hkko gekj A
djuh mud] uko gekj A

itk ikB u vkby gejk
cl dbyk e pko gekjA

r Hkygh fcpj· liuk e
/kjrh ij ck iko gekj A

ub[k gejk ckx&cxbpk
ckfdj fufe;k Nko gekj A

mudk prjkbl dk lk>k
lPpkbl ck nko gekjA

'kgj l?kfr;k cl LokjFk d
n[k d lkFkh xko gekj A

cjh ck uopn tekuk
lgjkbl d] ?kko gekj \

(दू) cfu d urk] jkt pyko·!
Nhu&>ifV d emt mBko· !
ifgy r· r [kn eoko·
#i;k] eoyk ckn p<ko·!
cu miou ik[kj lc ukl
ekle d nklh Bgjko·!
vkiu oru jkt c<ko
gegu d ykyk idMko·!
veu&pu dc :py rkgd
tkr& /kje d vkfx yxko·!!••

, l-,u- ifCyd Ldy] jkeiqj mn;Hkku]
cfy;k&277001

पूर्वोत्तर आ उत्तरभारतीय भाषा के प्रतिनिधि लेखकन के सम्मिलन में भोजपुरी

सरकार आ संसद में मातृभाषा भोजपुरी के मान मान्यता मिले एकरा से पहिले देश के साहित्य अकादमी आ भाषा साहित्य से जुड़ल अउर बड़ संस्था भोजपुरी के मान मान्यता दें सऽ। उछाह भरे वाली खबर ई बा कि धीरे धीरे स्थिति बदल रहल बा। गोवा का पणजी में पछिला महीना राष्ट्रीय बहुभाषिक कवि समागम मे हिन्दी, कोंकड़ी, मराठी, गुजराती, उर्दू, बँगला, सिन्धी आदि सँग भोजपुरी से प्रमोद कुमार तिवारी के बोलावल गइल आ अबे साहित्य अकादमी जइसन भाषा साहित्य के केन्द्रीय संस्थान आगरा में नार्थ ईस्ट आ नार्दर्न क्षेत्र के कवि लेखकन क सम्मिलन के दू दिनी आ चार सत्री कार्यक्रम आयोजित कइलस, जेवना में अन्य स्वीकृत भाषा सँग भोजपुरियो के महत्व दिहलस. एकरा खाति अकादमी के प्रशंसा होखे चाहीं. सम्मेलन मे भोजपुरी का प्रतिनिधि कवि लेखक का रूप में ''पाती'' के संपादक डा0 अशोक द्विवेदी के नेवतल रहे।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा में एह आयोजन के उद्घाटन अकादमी के वरिष्ठ सदस्य प्रख्यात संस्कृत विद्वान श्री सत्यव्रत शास्त्री कइलन. आयोजन में हिन्दी के मलखान सिंह, शशि तिवारी, देवेन्द्र चौबे, अरुणदेव, उर्दू के इकबाल खलिश, चन्द्रभान खयाल शाफे किदवई आ असमिया के सौरभ सइकिया, अपु भारद्वाज, नीरेन ठाकुरिया, अनुभव तुलसी, मणिपुरी के आर.के.हेमवती देवी, हावबम प्रियकुमार, नौंगमैथेम किरण कुमार, पंजाबी के कथाकार नछत्तर, स्वर्णजित सवि, कश्मीरी के नजीर अहमद नजीर, नेपाली गोरखाली के आदर्श मिलन प्रधान, मैथिली के गुंजनश्री, भोजपुरी के अशोक द्विवेदी, ब्रजभाषा के सोम ठाकुर, राधा गोविन्द पाठक, राजस्थानी के कमल रंगा आ कथाकार अरविन्द आशिया, अवधी के जगदीश पीयूष, संस्कृत के बलराम शुक्ल आदि के सम्मेलन मे कहानी पाठ, साहित्य विमर्श गोष्ठी का अलावे दू गो कवि गोष्ठी आयोजित भइल। अकादमी का ओर डा. देवेन्द्र कुमार देवेश के आभार प्रकाशन भइल। भारतीय कवि लेखकन के एक दुसरा भाषा में लिखल जा रहल साहित्य के जानकारी आ समझ पैदा भइल। भाषा–संस्थान आ साहित्य अकादमियन के अइसन कार्यक्रम करावत रहे के चाहीं। ••

c'tjkt] vkxjk

पटना पुस्तक –मेला में ब्रजभूषण मिश्र के किताब 'खरकत जमीन .....' के विमोचन

भोजपुरी के वरिष्ठ कवि, लेखक आ भाषा आन्दोलन के अगुवा डा0 ब्रजभूषण मिश्र के कविता संग्रह 'खरकत जमीन, बजरत आसमान' के विमोचन समारोह, इहाँ 'नेशनल बुक ट्रस्ट' द्वारा आयोजित 'पटना पुस्तक मेला–सभागार' में भइल। वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद से प्रकाशित ए किताब का विमोचन का अवसर पर एम०एल०सी० श्री केदारनाथ पांडेय, डा० रिपुसूदन श्रीवास्तव (पूर्व कुलपति आ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष), डा०रास बिहारी प्रसाद सिंह (नालंदा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति), संपादक श्री सुकान्त नागार्जुन, डा० सुनील कुमार पाठक (जनसंपर्क पदाधिकारी ,राज्यपाल महोदय), डा०जयकान्त सिंह श्जयश(विभागाध्यक्ष ,भोजपुरी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय), डा० आसिफ रोहतासवी (संपादक 'परास')आ डा० कमाल अहमद (एन०बी०टी०) आदि लोगन का उपस्थिति में भइल ।

ब्रजभूषण मिश्र जी के रचनात्मक योगदान के सराहना पहिलहूँ होत आइल बा। उनका कविता पुस्तक खातिर उनके बधाई देबे वाला कई साहित्य सेवी लोग ए समारोह मे उपस्थित रहे ।

uhr'k dekj ¼e t¶Qjij½

लोक मर्मग्य स्व0 पं0 गणेश चौबे जी के स्मृति –समारोह

भोजपुरी विकास मंच, केशरिया के तत्वावधान में भोजपुरी समाज, संस्कृति आ भाषा साहित्य के पुरोधा स्व०पंडित गणेश चौबे जी स्मृति जयंती समारोह में उनका अवदान के इयाद कइल गइल। उनका चित्र पर फूल माला चढ़वला का बाद डा० ब्रजभूषण मिश्र कहलें कि उहाँ का प्रेरना आ परिश्रम से भोजपुरी के पहिल शब्दकोश पर काम भइल ।बाद में विश्व भोजपुरी सम्मेलन, देवरिया, ओह कोश के प्रकाशित कइलस । चौबे जी लोकाचार, लोक साहित्य आ लोकरंग के मर्मग्य रहलीं । भोजपुरी भाषा साहित्य में उहाँ का योगदान के भुलावल ना जा सके ।

कार्यक्रम के आयोजक विकास मंच के अध्यक्ष देवनाथ सिंह जी के स्वागत वक्तव्य का बाद सब आपन विचार श्रद्धांजलि दिहल ।श्री अवधेश कुमार झा ,राजेन्द्र सिंह,प्रफुल्ल कुँवर, अशोक प्रियदर्शी, मदन सिंह, चुन्नू सिंह, जय नारायण राय, विक्रम सिंह आदि का विचार गोष्ठी का बाद एगो कविगोष्ठियो भइल जवना के संचालन रामकुमार गिरि कइलें ।

nhuk ukFk ikBd] iohi pEikju] fcgkj

फागुन बाट ना जोहे ...

फागुन बाट ना जोहे, बेरा पर खुद हाजिर हो जाला । रउवा रुचे भा ना रुचे ,ऊ गुदरवला से बाज ना आवे। एही से फगुवा अनंग आ रंग के त्यौहार कहाला। राग–रंग के ई उत्सव ,बसन्त से सम्मत (संवत् भा होलिका दहन)आ होली से बुढ़वा मंगर ले चलेला। एह बीचे राग रंग के सुरलहरी का गूँज–अनुगूँज से 'भारतीय मन' (खास कर भोजपुरिया मन मिजाज) मे हिलोर उठत रहेला ।

झूमर का धुन पर बान्हल ,फाग आ होरी गीतन के दादरा आ कँहरवा के ठेका पर गावत देखि सुनि के बुढ़वनों के मन बउरा जाला ।अगर ना बउराइल तऽ बूझ लीं ,ओकरा भीतर क जीवन रस सुखा गइल, ऊ काठ हो गइल ।आज स्व0भोलानाथ गहमरी क सुधि आवत बा ,उनकर गीत हवा में सुरसुरा रहल बा ....

रँग फगुनी बसन्ती रँगा गइले राम,
धरती –गगन रस बरिसेला !
छलके गुलबवा क लाली गगरिया,
पी–पी के मन बउरा गइले राम,
धरती गगन रस बरिसेला !
चन्दा के दरपन में पिउ के सुरतिया,
बरबस नयन में समा गइले राम,
धरती–गगन रस बरिसेला !
अमवाँ क मोजरा से गंध मदन के,
घर अँगना पवन ढरका गइले राम,
धरती गगन रस बरिसेला !!

फागुन हइये हऽ अइसन पहुना कि सगरी बरिजना (वर्जना) तूरि देला। धसोरि के मरजादा क देवाल भहरा देला। सगरी कुंठा बहरियावे क अचूक अवसर ई फगुवे देला ।लोगन के कलेन्डर से बहरा निकलवावे खातिर फागुन सनेह क सगुन जगावेला ।भोलाजी अपना गीत में, ईहे सनेह सगुन जगावत बाड़न...

फागुन सगुन सनेहिया जगावे ,
तन मन सुधि बिसरावे !
रंग बिरंग किरिन रँग घोरे
अँग अँग धरती अकसवा के बोरे
भरि भरि अंक लगावे, फागुन सगुन सनेहिया जगावे !

ई सगरी रंग राग क परोसा रउरे खातिर बा। अब त कलेन्डर से बहरा निकलि आईं आप। आईं ''भ्रमरानन्द'', बन के गावल जाव....

''भरि भरि मारे पिचकरिया हो, रस बरिसे फगुनवाँ!!''

भउजी –देवर सम्बन्ध
स्व0 पं0 चन्द्रशेखर मिश्र

(एक)

gkjh cjtkjh Hkbyh] eujh gjk; xbyh
jkb&jkb gkjh ij dg ukfg [kktb j
ekx vmj dkf[k nojfu;k d Hkjh jg
ekj n[k nf[k [kkyh nojk ilhtb j
[kkft [kkt eujh]fy;k;]ifgjk; ny
ftuxh e ukfg midkj b Hkykcb j
nfg;k d lc jl]fi;ok d nc ij
vxjh d dy jl nojk d ncb j !

(दू)

rkg n[k n[k ekj ft;jk HkHkkr ckV
vblu mikb dj vfxu c rk; tk;
vbl lc fnuk rkj uh;r cuy jg
n/k cg] n/k vmj ikuh Qfj;k; tk;
eujh ck vxjh e] >yuh ck vkBok ij
;kn jf[kgk u dck] cpu Hkyk; tk;
enjh Hkyby] vxjh d jl nr ckV
jke dj Hkmth rkj >yuh gjk; tk; !

✍ मनोज भावुक

tc l 'kgj e vkby] rc l ck vmft ;kby
jkVh cn nqy#vk [kVk l ck cUgkbyA

xngk d cki cky] fnuok d jkr cky
lXxk cuy b eub fitMk e ck ikslkbyA

'kxj c<y jgr ck] ch-ih- p<y jgr ck
xtc d t,c ckV fdMuh y ck MjkbyA

iVo l ck duD'ku ,g ^t,c* d ,gh l
lgey ck 'kj vmjh] xhnM ck QuQukbyA

t lj e lj feykoy] t eg e eg lVkoy
vkgh d ck rjDdh] vkg ij cgkj vkbyA

ehfVx d cny efVx] lfoll d cny lfVx
tdjk e b guj ck] Å gj txg QykbyA

vfUg;kj jkt e ck pepu d iN Hkygh
cjk i ;kj gjne VyV dke vkbyA

vfUg;kj d feVko] lj mg dgkyk
vkgh l ckV nfu;k Åg lnk itkbyA

vbl r Qlcd ij ckMu gtkj lkFkh
ldV e tc [kktkby] dg utj u vkbyA

uV i n[k fygyl ekb d dke& fdfj;k
ccvk ck 0;Lr vruk ynu l vk u ikbyA

lkFkh d ?kkr l ck] xrj xrj ?kokfgy
fj'ru d tkylkth Hkkod d uk c>kbyA

••

▭ dkslM] lhoku ¼fcgkj½

✍ गुलरेज शहजाद

दू गो गजल

(एक)

dkok dkx d jkt HkVkby nknk j nknkA
lxjk lUuj xhr gjkby nknk j nknkA

vVVk iVVk ekj >iVVk ukp y xby lc
vtjk itjk Hkby ?kokby nknk j nknkA

gej dkUgh ykr yxk d p<y jt/kkuh
ged NkMy thjk ekby nknk j nknkA

ifMr Kkuh Vdj Vdj Vvj vl rkdy
jkt djy ge ij tkfgy nknk j nknkA

tkfrokn dk vkUgh e vc n[k jgy ck ykx
fjLrk&ukrk d mf/k;kby nknk j nknkA

/ke d ukfxu QQd] ctr jktuhfr d chu
Ukg&jhr d eg fi;kby nknk j nknkA

(दू)

Rkkgj eu ijr euok exu gk xbyA
dfj;k jfr;k lgkfxu fu;u gk xbyA

vkjrh d cjy nhi ykxy r
rkgd n[ky l ikou u;u gk xbyA

fcuk eryc d drg fugkjr jg
:Ik e ^jc* fugkjr b eu gk xbyA

:Ik ikuh e dkir pujek fu;j
Ukg ikuh d per iou gk xbyA

dN u dgy t r] r pik xbuh ge
vk[kh&vk[kh e lkrk cpu gk xbyA

••

▭ xke&udNn Vkyk] ekfrgkjh&845401
ioh pikj.k ¼fcgkj½

गजल

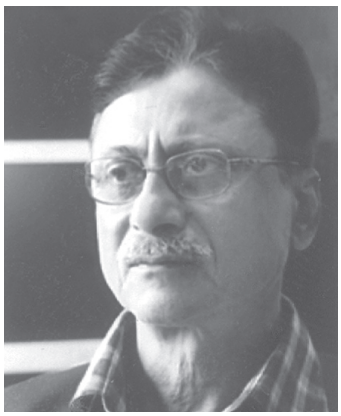

अशोक द्विवेदी

(एक)

NkV ?kj&ckj e gegu d] vc leko dgk
ug Å ck dgk viuu e] Å yxko dgk

thm V?kj yx xju d ykj poyk ij
vc Hkyk xko d yu fu;j lHkko dgk

ck [kud nke d] vbBu ck dN debyk d
;kj ifgy fu;j m Hkko vk vHkko dgk

viuk Nkgk e clk yo t nf[k;kju d
vcdk Nnju e Hkyk fny d Å nfj;ko dgk

m /k/kkby] /kby vk tkx&Ne iN fygy
gk xby dguh] lu okyu e m pko dgk !

(दू)

,g c'kje&vufr ij vm tk d] dk fy[kh
m#ok fy[kh] mtcd fy[kh fd cg;k fy[kh

yiV vk uhp ykx ck bgok fxjkgcUn
lk>cd 'kjhQ d ck cgr njnlk fy[kh

yxV&m?kkj nfg l] fny l fnekx l
vbludk ykx <j ck] vc druk] dk fy[kh

,g n'k d dfg;k y tku NkMh xykeh
douk v/khurkb d nk#u&dFkk fy[kh\

ykg l fy[ky ck bgk ftuxh d nkLrku
L;kgh l Hkyk vkd vc] druk nQk fy[kh

अब ना करब कबो नादानी

ज्योतिष जोशी

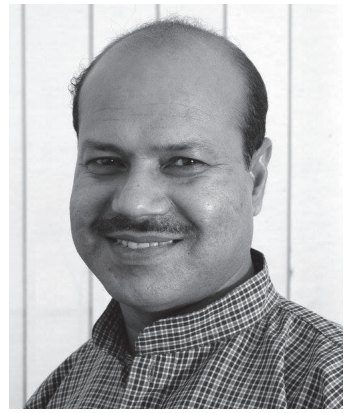

ckV vxkjy rgjk [kkfrj]
chfr xby lxjk ftuxkuh !
uk tuy r ug&Nkg d]
dby r gjne cbekuh !!

cMk dfBu ck jkg bgk ij]
iy iy ykx efLdy ft;y !
rugk dkV dV uk fnu b]
fQj Hkh r dby euekuh !!

cM cM oknk liuk yegj]
[kc n[koy· feyy· tc r !
vkdjk ckn uk jgy ijudk]
ug&Nkg l Hkjy cFkkuh !!

vc ge tuuh >B&eB g·]
I;kj nykj b;kj yctb !
vc r jg· [klh l gjne]
vc uk djc dck uknkuh !!

½Mh&4@34] luflVh vikVeV] ekuo pkd]
lDVj&15] jkfg.kh] ub fnYyh&110089½

भोजपुरी काव्य में नूतन अलंकार योजना

बरमेश्वर सिंह

हम लड़िकाईं के 'धीमताम्' बानीं। मानेंकि, हमार अब तक के समय 'काव्यशास्त्र विनोदेनः' बीतल बा। साँच कहीं त लड़िकाईं में भोजपुरी–कविता पढ़े के लागल लत, हमरा सरेख होखत–होखत सनक के हद तक पहुँचि गइल रहे। अब त उमिर भइल। एह मुकाम तक पहुँचत–पहुँचत हम भोजपुरी–कविता के एकोराहें से हींड़ि दिहले बानी।

बाकिर, एह अभियान में हमार दिल दुखइबे कइल। ऊ फुलाइल कबो ना! हालांकि, कवि–कुटाई हमार कबो क्रीड़ा ना रहल। काहेंकि, हमरा अतना ज्ञान बा कि कवि ऊ प्रजापति लेखा होखेलन, जे अपना मन–माफिक आपन संसार गढ़ेलन 'अपारे काव्य संसारे कविरेकः प्रजापतिः...!' बाकिर इहो साँच बा कि हमहूं 'साहित्य संगीत कला विहीनः' नइखीं। एही से हमरा पोंछ आ सींग दूनों बा। पोंछ माँछी भगावे के काम आवला आ जब केहू के टाँगे के जरूरत बुझाला, तब सींग साथ देवेला।

खैर, भोजपुरी–कविता–कुंज से गुजरत खानी हमार दिल बरमहल दुखाते रहल। हमरा बरमहल ई खटकत रहल कि अब तक भोजपुरी–कविता के ऊ मुकाम काहें ना भेंटाइल, जवना के कि ऊ अधिकारी बा? आखिर, भोजपुरी–कविता के चमत्कारिक–स्वरूप, भोजपुरी के 'हिट' आलोचकन के चश्मा का भीतर काहें नइखे ढुकत? हमरा चिन्ता भइल। फिर ऊ चिन्ता, चिन्तन में बदलल। तब जा के ई तथ्य सामने आइल कि भोजपुरी–कविता के अपेक्षित मुकाम ना मिले के पीछे साहित्य खातिर मान्य अलंकारन के हाथ बा। दरअसल, साहित्य खातिर मान्य अलंकारन के सीमित सीमा में भोजपुरी–कविता के समृद्धि के अँटावल कवनों बेंवत से सम्भव नइखे। साँच कहीं त इहे ऊ दर्दनाक जगह रहे जहवाँ पहुँचि के हमरा दिमाग में, भोजपुरी–कविता के कल्याण खातिर, 'भोजपुरी–काव्यः नूतन अलंकार योजना' के खाका कउँधल। एकरा बाद हम विचारमग्न हो गइलीं। फिर विचार–संकल्प में बदलल।

नीचे 'भोजपुरी–काव्यः नूतन अलंकार योजना' के जे प्रारूप दिहल जा रहल बा, ऊ हमरा विश्वामित्री संकल्प, गहन अध्ययन आ घोर चिन्तन–मनन के प्रतिफल बा–

(1) ऊटपटांगालंकार – कवि जब कहल चाहे कुछ आ ओकरा से कहा जाय कुछ, तब उहवाँ ऊटपटांगालंकार होला। जइसे–

केतना के तेल किनी केतना के लवना
केतना के दवा–दारू–हीत–नात–गवना
रात–दिन सोचीलें जरौले सिगरेटिया

(आनंद संधिदूत, भो0स0पत्रिका, सित092)

उक्त गीतांश में कवि अपना गरीबी से तंग बा। ओकरा आय में ओकर व्यय नइखे आँटत। एह जटिल समस्या के समाधान खोजे खातिर ऊ रात–दिन सिगरेट जरवले सोचत रहत बा।

अब लीला देखीं! दिन–रात मानें चौबीस घंटा। एगो सिगरेट के जरे के मियाद जादे–से–जादे पाँच मिनिट। एह हिसाब से एक घंटा में बारह आ चौबीस घंटा में दू सौ अट्ठासी सिगरेट के जरूरत। अब एक सिगरेट के दाम आठ आना आ दू सौ अट्ठासी सिगरेट के दाम एक सौ चौवालीस रुपया। मानेंकि, कवि रोज एक सौ चौवालीस रुपया के सिगरेट फूँकि के अपना गरीबी के रोना रोवत बा। कवि के एह कविता में गरीबी के एगो नीमन पैरोडी हो गइल बा, एह से इहवाँ ऊटपटांगालंकार के प्रभाव प्रबल हो गइल बा।

(2) भौचटालंकार – एह अलंकार के भकुआ अलंकार, भकचोन्हर अलंकार, आ उजबुकालंकार भी कहल जाला। जइसे–

'चिउँटी लेखा निकलेला/हमरा इयाद के झरोखा से/तोहरा चेहरा के चाँद/आ भक् से पसरि जाला अँजोरिया/हमरा मन–कोढर तक/कतना फरक रहेला–हमरा तोहरा बीच? एको हाथ त ना! अइसना में तोहार सिरगरम साँस के गरमी/चिन्हार लागेला/आ हमरा भीतर के चितेरा उकेरेला/कतना–कतना चित्र/भरेला रंग–रोगन/फिर खुशबू में नहाइल/शोख–सुभेख चित्रकारी का/बाकिर, एही मौका पर/हया के लछुमन रेखा पार कइल/ना सपरे हमरा से../'

(बरमेश्वर सिंह, 'अथ लुकाठी कथा' पुस्तक से)

प्रेम कवनों कवि खातिर विटामिन 'ए टू जेड' लेखा होला। बाकिर, भकुआनंद के प्राप्त हो चुकल कवि ई ना बूझि पावस कि प्रेम के डगर अलग होला। ई लौकिक मर्यादा के उल्टा चले वाला राह होला। एह राह में कुपात्रे सुपात्र आ अनीतिये नीति समझल जाला। उक्त कवितांश के भकुआइल कवि के हया के लछुमन रेखा अइसन गुड़–गोबर करि दिहले बा कि ऊ भौचटालंकार के एगो नीमन उदाहरण हो गइल बा।

(3) चौर्यालंकार – एह अलंकार के जनम दू कवियन के कवितन के तुलनात्मक अध्ययन का क्रम में होला। जब दू कवियन के कवितन के तुलनात्मक अध्ययन का क्रम में कवनों एक कवि के चौर्य कर्म (चोरी) उजागर हो जाला, तब चौर्यालंकार उहवाँ लठ ले के खाड़ हो जाला। जइसे–

(क) अचके नैन हँसे मन थिरके, फागुन आइल का?
पोर–पोर सगुन–अंग फरके, फागुन आइल का?

(डॉ. कमलेश राय, 'लुकार', मार्च, 2009)

(ख) बिहँसे नयन हुलासे थिरके, सावन आइल का?
साँझ–विहाने अँखिया फरके, सावन आइल का?
(डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना', भोजपुरी–माटी, अगस्त, 2009)

डाका मालधनी किहाँ डालल जाला। कंगला किहाँ केहू काहें खातिर डाका डाली? उक्त पद्यांश (क) के 'फागुन' का जगह पद्यांश (ख) में 'सावन' टाँकि दिहल गइल बा। 'थिरके' आ 'फरके' के भंगिमा में भी कवनों खास फरक नइखे। 'नयन' आ 'नैन' में का फरक बा? 'विहँसल' आ 'हँसल' भी मोटा–मोटी एके चीज बा। 'सगुन अंग' भी 'अँखिये' बा। बाँह आ दायाँ–बायाँ अंग भी फरकेला। बाकिर उन्हनी के सगुन–अंग ना कहल जाय। अइसहूँ फागुन में बाँह भा दायाँ–बायाँ अंग फरकला पर रंग में भंग हो जाई। धड़के भा खुदबुदाये वाला अंगन के भी 'सगुन अंग' ना कहल जाय। एह से 'सगुन अंग' निर्विवाद रूप से अँखिये बा एह से ई कहल बेजायँ ना कहाई कि उक्त पद्यांश (ख) में चौर्यालंकार कलात्मक ढंग से उपस्थित बा। ई एघरी ढेर प्रचलन में बा।

(4) मतिभ्रमालंकार – एह अलंकार के जनक ओइसन कवि होखेलन, जिनका ई इयाद ना रहे कि ऊ कब का कहले–कइले बाड़ें। जइसे–

रोज भोरे काग छानी पर उचर जाला
का कहीं मन पर पसेरी भर पड़े पाला
मलछ जाला जीवन, ईहे टीस बा।
(डॉ. बलभद्र, भो0स0प0, मार्च–मई, 2001)

उक्त पद्यांश में कवि के कउवा उचरि चुकल बा। बाकिर, ई बतिया उनुका इयाद नइखे रहत। एही से ऊ 'परास' के जनवरी–मार्च, 2010 के अंक में दोसरा के उपदेश देत बाड़ें– 'कउवा, गउरइया आँगन से गायब होत जा रहल बाड़ी आ कविता में कउवा अबो उचर रहल बा। कविता के बदलत यथार्थ से जोड़ल जरूरी बा।'

बेशक, कविता के बदलत यथार्थ से जोड़ल जरूरी बा। बाकिर, ना त कउवा अबहीं पूरा–पूरी विलुप्त भइल बा, ना सांस्कृतिक यथार्थ के एक झटका पर खारिज कइल जा सके। इहे कारण बा कि उक्त पद्यांश में मतिभ्रमालंकर सदेह खाड़ हो गइल बा।

मतिभ्रमालंकार बड़ा लरछुत बा। ई पद्य का अलावा गद्य में भी आपन टाँग अड़ा देवेला। जइसे–

'.... तीसर बात, जनबूझ के माछी लीलल नियन बा कि रउवा (डॉ. आसिफ रोहतासवी) उनुका (स्व. मधुकर सिंह) रचना के नमूना उनुकर हिंदी कहानी 'दुश्मन' छाप के दे रहल बानी... 'दुश्मन' के भोजपुरी अनुवाद छापल उचित रहे।'

(डॉ. तैय्यब हुसेन 'पीड़ित', परास, जनवरी–मार्च, 2015)

अब देखीं लीला। 'पीड़ित' जी के खुद आपन उक्त उपदेश इयाद नइखे रहत। भोजपुरी अकादमी पत्रिका, जनवरी–मार्च, 2015 के अंक (जवना के संपादक मंडल के तीन नामक में 'पीड़ित' जी नाम शीर्ष पर बा) में बिहार के शिक्षा मंत्री श्री पी0के0 शाही के हिन्दी में लिखल 'भोजपुरी लोक और उसका साहित्य संसार' शीर्षक आलेख छापी के उहाँ का खुद गटागट माछी लील लिहले बानी। एही से कहल जाला कि मतिभ्रमालंकार मानें 'दोसरा के पाँडत्रे सुदिन बतावसु, अपने पाँड़ें ढिमिलिया खासु!'

(5) मिथ्यालंकार– जब कवि वर्तमान पर भूत के ओहार डालि के असलीयत के छिपावे के फिराक में रहेला, तब उहवाँ मिथ्यालंकार प्रकट हो जाला। जइसे–

उहे धरती उहे सूरज–चान, हम का लिखीं दूसर
ओइसहीं दिल बा अभी नादान, हम का लिखीं दूसर
(डॉ. अशोक द्विवेदी, पाती, मार्च, 2014)

अब देखीं तमाशा! उहे धरती अब कहाँ बा? उहे धरती अतना गरम कहाँ रहे? उहे सुरुज 'लील्यो ताहि मधुर फल जानू' रहे। आज के सूरुज मुँह झोंकारत बा। उहे चान, 'मामू' रहलें। जिनका दुआरी पर बइठि के बुढ़िया माई चरखा काटते रही। आज के चान के छाती, आज के भगिना कुल्हि जबे–तब रौंदि आवत बाड़ें स। जहाँ तक दिल के बात बा, त ऊ ना तब नादान रहे, ना अब बा। तब दिल दरिआव रहे, अब ऊ रेगिस्तान बा भा घाघ। दिल खातिर नादान विशेषण निहायत गोलमटोल बा। दरअसल, दिल के आकार त्रिभुज लेखा बा। जवना के एक–एक कोण क्रमशः दिलदार, दिलफेंक आ दिलजरू खातिर आरक्षित बा। दिल के नादान कहि के कवि ई तथ्य के छिपावल चाहत बा कि ऊ दरअसल दिल के कवना कोण के वासी बा? इहे चलते कवि के उक्त पद्यांश मिथ्यालंकार के अद्‌भुत नमूना हो गइल बा।

(6) दम्भालंकार – जब कवि के दम्भ सिर चढ़ि के बोले लागेला, तब ऊ अन्तिम बात कहि देवेला। अन्तिम बात कहि दिहला के बाद ना त कवि का पाले आगे कहे खातिर कुछ शेष रहि जाय, ना कविता पढ़ला के बाद पाठक का पाले। काहेंकि, एह मुकाम पर कवि आ कविता दूनों मू जाला आ पाठक अकबका जाला। जइसे–

लोक चाहे जे कहे, परवाह ना
'कृष्ण' का अपना ग़ज़ल पर नाज बा
(कृष्णानन्द 'कृष्ण', 'नया सूरज चढ़ल जाता' पुस्तक से)

उक्त शेर, कहला का बाद ग़ज़लगो महोदय अब आगे का कहिहें? आ पाठक बेचरू अकबकइहें ना त का करिहें? अन्तिम बात कुल्हि दरवाजा बन्द करि दिहले बा। दरअसल, उक्त शेर में जड़ता बा। जबकि, स्फुरन

खातिर स्पन्दन चाहीं। 'कवित विवेक एकु नहिं मोरा' , ई महाकवि तुलसीदास जी के विनम्रता रहे। जवना का चलते उनुकर कृति, उनुकर कीर्ति में चार चाँद लगा दिहलस आ उनुको पाले ई कहे खातिर शेष रहि गइल कि 'निज कवित्त केहि लागि ना नीका।' बाकिर, उक्त शेर में एक कुल्हि बातन के दू कौड़ी के मानल गइल बा। एही से उक्त शेर में एह कुल्हि बातन के दू कौड़ी के मानल गइल बा। एही से उक्त शेर के दम्भालंकार के बड़ा मनोहारी चित्र शोभायमान भइल बा।

(7) उपहासालंकार –जब एक कवि, दोसर कवि के नाम ले के खुल्लम–खुल्ला खिल्ली उड़ावे लागेला, तब उहवाँ उपहासालंकार बे बोलवले आ धमकेला। जइसे–

का उजिअइहें रामभरोसे? पचरा गइहें रामभरोसे!
कबो भेंड़ बनि भीड़तंत्र के, रीत निभइहें रामभरोसे।

(भगवती प्र0 द्विवेदी, 'जौ–जौ आगर' पुस्तक से)

उक्त काव्यांश में भोजपुरी के एगो चर्चित साहित्यकार के नाम लेके खुल्लमखुल्ला खिल्ली उड़ावल गइल बा। इचिको दया–माया ना! अरीयता–वरीयता, संस्कार–संस्कृति कुल्हि रामभरोसे। बाकिर ई रामभरोसे, ऊ रामभरोसे ना, जेकर कि उक्त काव्यांश में खलचोइया ओदारल गइल बा। इहे कारण बा कि काव्यांश उपहासालंकार के एगो नीमन नमूना हो गइल बा।

(8) बोरकालंकार – जब कविता पढ़े का क्रम में पाठक बोर जो जाय भा अपना माथ के बार नोंचे लागे भा संबंधित किताब/पत्रिका के फाड़ि देवे भा भविष्य में कविता ना पढ़े खातिर किरिया खा जाय, तब उहवाँ बोरकालंकार के प्रबल प्रभाव देखे में आवेला। हिन्दी के 'साकेत' आ 'प्रियप्रवास' में ई अलंकार बड़ा उच्च कोटि के स्थान पवले बा। हिन्दी कवि मुक्तिबोध भी अपना कवितन में एह अलंकार के प्रयोग बड़ा मनोयोग का संगे कइले बाड़ें। भोजपुरी–कविता भी एह ममिला में बड़ा सेसर साबित भइल बा। जइसे–

वादी में फेरु/शुरू हो गइल लड़ाई/केकरा–केकरा बीचे/आज ले पता ना चलल/ओकर बोली/कबो नीक ना लागल हमरा/जब बोलेले/ना जाने काहें, डोलेले/नरेटी में बरफ जाम गइल होखे, जइसे/शब्दन के झोरेले/देश ओकरा पर चलत होखो/हम आपन जिनिगी/ओकरा संगे काहें गुजारीं/एहिजा अपने बोझा नइखे सँभरत/आ ऊ बड़का सिन्होरा में/दर्जन भर चिल्होर के अंडा/लेले आइल बिया.../'

(डॉ0 विष्णुदेव तिवारी, भोजपुरी माटी, दिसम्बर, 2012)

उक्त कवितांश में अब पाठक आपन माथा खपावसु। ओकरा बादे स्थायी भाव का रूप में कुछ गुरू–गम्भीर भेंटाई। बाकिर, संचारी भाव का रूप में बोरकालंकार से भेंट होई, एह में दू मत नइखे।

(9) भयाक्रांतालंकार – ऊपर से नीडर लेखा, बाकिर भीतर से डरपोंक, भयाक्रांतालंकार के सृजेता कवियन के इहे हुलिया बा। एही से एह डिजाइन के कवि कवनों बात के साफ–साफ आ सोझ ना कहि के, गोलमटोल ढंग से, भा घुमा–फिरा के भा लपेट के भा धापा पर भा तूड़ि–मरोड़ि के कहेलन। जइसे–

मंत्री जी के काफिला, धउरत बा भर भाँस।
कारन? का, कइसे कहीं? 'ह' के बाद 'गवास'।।

(डॉ0 प्रकाश उदय, भो0स0पत्रिका, नवम्बर, 2001)

उक्त दोहा के संबंध सूबा के मंत्री जी से बा। मंत्री कवनों छोट जीव ना होखसु। रुतबा–रुआब अइसन कि उनुकर भृकुटि जो तनी सा टेंढ़ हो जाई तक कविराम के हाज़मा बिगड़ि जाई। एही से, उक्त दोहा के डरापुत कवि खूब मेहीं चतुराई कइले बाड़ें। बात के साफ–साफ ओसावे के काम ऊ खुद ना लेके, पाठकन का माथे थोपि दिहले बाड़ें। जवना का चलते भयाक्रांतालंकार प्रकट हो गइल बा।

(10) भ्रांतिमानालंकार – जब बात कुछ अउरी होखे, आ कवि कुछ अउरी कहि के पाठकन के भरमावल चाहे, तब भ्रांतिमानालंकार वजूद में आ जाला। जइसे–

अँखिया में नाचऽताटे सँवरी सुरतिया, पतिया भेजत नइखन।
कटत नइखे विरहा के रतिया, पतिया भेजत नइखन।।

(डॉ0 आसिफ रोहतासवी, सुरसती, जनवरी, 2003)

उक्त गीतांश के कवि चतुर–सुजान बाड़ें। एही से ऊ 'नइखी' के जगह 'नइखन' लिखि के पाठकन के भरमावे के प्रयास करत बाड़ें। बाकिर, पाठको अब ओतना बुरबक नइखन रहि गइल। एही से ऊ उक्त गीतांश के देखते पहचान लेत बाड़ें कि इहवाँ भ्रांतिमानालंकार के बसेरा बा।

'भोजपुरी–काव्य : नूतन अलंकार योजना' फिलहाल इहवें विराम ले रहल बा। एह योजना में 'बतरस' से 'लतरस' तक के समावेश कइल गइल बा। एकरा आलोक में, भोजपुरी के जे भी आलोचक, भोजपुरी–कविता के मूल्यांकन करिहें, ऊ 'हिट' हो जइहें, एकर गारंटी बा। भोजपुरी–कवितो आपन स्वर्णिम सिंहासन पा जाई, एह में केहू के शक ना करे के चाहीं। भोजपुरी के जवन कवि एह योजना से फिलहाल बाहर बाड़ें, ओहू लोग के निराश होखे के जरूरत नइखे। समय पा के ओहू लोग के 'सीताचार' जरूर पूछल जाई।

/kuMhgk] Hkkst iqj] 802160

भोजपुरी के ''आरोही'' चौ0 कन्हैया प्रसाद सिंह के सरधांजलि

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का, लगभग हरेक सालाना अधिवेशनन में हाजिर रहे वाला स्व० चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह मन, वचन आ कर्म तीनू से खाँटी भोजपुरिया रहले। लगातार एक खेंढी का बाद दुसरा खेंढ़ी पर लात धरत , साहित्यिक सिरजनशीलता के ऊँचाई चढ़त ऊ अपना उपनाम ''आरोही'' के सार्थक करे से कबो ना चुकले ।अजब व्यक्तित्व रहे उनकर । भोजपुरी भाषा खातिर, उनकर दीवानगी हद ले ढेर रहे ।बोलल बतियावल भर ना, भोजपुरी उनकर ओढ़न –डासन रहे। भोजपुरी सोचल,भोजपुरी में लिखल आ दुसरा के हुरपेटले रहल।

भोजपुरी का प्रति उनकर पूर्वाग्रह ई रहे कि अगर केहू (भोजपुरी क्षेत्र वाला) उनका सोझा हिन्दी भा अंगरेजी झारल ते, ततलगले उनका प चढ़ बइठिहें ,''इंगलैंड, अमेरिका में रहेले का ?'' घरवो में माई बाबू आ बीबी –बाचा से अंगरेजिये झारेले का ? ''भोजपुरी बोले में हेठी बुझाता ? शरम लागे ता ?'' एह तरे लजवावल कइयन के पानी पानी करी आ कुछ लोग त नाराजो हो जाई मने–मने ,बाकिर कन्हैयो जी अपना सुभाव से मजबूर रहले ।अपना भाषाई हठधर्मिता, अड़ियलपन आ ठेठ ठकठेन का कारन, कतने रचनाकारन आ विद्वानन से अझुरइला का चलते ऊ एगो अलगे किसिम में गिनइले । हमरा बुझाला कि ऊ ''सुपिरियरिटी कम्प्लेक्स'' आ ''आत्ममुग्धता'' का कारन अपनो नोकसान कइले। बाकि कुल्हि का बावजूद ऊ भोजपुरी के जबर्दस्त हिमायती आ ध्वज वाहक रहले । एमे कवनो संदेह नइखे।

बिहार में प्रखंड विकास अधिकारी (बी०डी०ओ०)जइसन प्रशासनिक पद पर कार्यरत रहला का बाद ,रिटायर भइले त अइसन भिड़ले कि मुवे का समय ले ,अपना माईभाषा का श्रीवृद्धि में भिड़ले रहि गइले ।बहुत दिनन से अपना जवार का धाकड़ भोजपुरिया कवि –लेखक पर लिखे के सोचते रह गइनी आ अब लिखहूँ के भइल त ऊ ना रहले । हमरा मरम के आहत कइ के चलि गइले ।लिखला पढ़ला के धुन सवार रहत रहे उनका पर ।कतने किताब लिखले ऊ ,कतने विधा में ।कहानी ,नाटक, एकांकी, कविता सब । भोजपुरी साहित्यकार दर्पण जइसन, अनुसंधानपरक श्रमसाद्धय किताब कई भाग में निकाल के ऊ भोजपुरी का हर लेखक के एक दुसरा के जाने समझे के सुलभ अवसर दिहले ।

अइसे त सुरूआते से ऊ लिखत पढ़त रहले। उनकर दू गो भोजपुरी कहानी संग्रह, एकांकी संग्रह ,कविता संग्रह आदि चर्चो में रहल । उनकर श्रमसाध्य आ समयोसाध्य रचनाशीलता हमके निरंतर प्रभावित कइलस । उनका भीतर के कवियो बहुत सुरियाह रहे । तबे न ,कविता के पारंपरिक छन्द दोहा ,सोरठा आ बरवै क हजारा रचि दिहलस। ''आरोही हजारा'', 'अजस्र धारा', 'बरवै ब्रह्मरामायन' जइसन पुस्तकन क रचना अइसहीं ना हो जाला। ई आरोही के जिद आ निष्ठा का साथ, साधना से संभव होला ।

हमरा अचरज होला । ई कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' का बस के बात रहे कि भोजपुरी में,–दोहा के 'ब्रैडमैन' बिहारी के रिकाड टूट गइल। ऊ अपना प्रयोग धर्मी रचनाशीलता का कारने 'बरवै' रचला के रिकाड बनवले। गजल जइसन, बाहरी भाषा का विधा में सफल रचनात्मक डेग डलले आ ओहू क संग्रह तैयार हो गइल । भोजपुरी साहित्य खातिर उनकर योगदान विस्मरण जोग नइखे । आज उनकर दिहल स्लोगन 'जय भोजपुरी!' आ 'जय भोजपुरिया!' बरबस इयाद आ रहल बा। 'भोजपुरी का एह अक्खड़ सपूत का रचनात्मक धुन का धनी के सबका ओर से सरधांजलि ।

}kjk&1 jUn oek] uhy dBi je] cjbi j]
dnok] okjk.k1 h&221006

लघुकथा

लोकमत

राजगुप्त

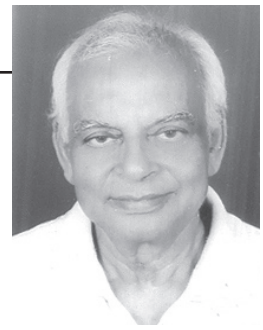

राजपुर नाँव के एगो छोटहन गांव रहे। गांव में एकही इनार रहे। ओही इनार के पानी सज्जी गांव पीये। इनार में गहिरा भूरि ना रहे। स्रोता से पानी बढ़िया ना आवे। गँगधोर पानी गांव के लोग पीये। एक दिन के बाति ह। होत फजीरे मेहरारू इनार पर पानी भरे गइली स त इनार में कवनो मेहरारू के लासि पानी में उतिराइल लउकल। पानी में लासि उतिराइल देखि मेहरारू चिल्लाये लगली स। लोग जूटल। कवनो तरे बान्हि–छान्हि के लासि बहरी निकालल गइल। जुटल लोग लासि देखि चकरिया गइल। दांते अंगुरी काटे लागल। भला अइसे कइसे हो गइल। लासि आशा देवी के रहे। सुख–शांति से रहे वाला आशा देवी के घर का, गांव में नाँव रहे। उनकी परिवार के बहुते सम्मान रहे। खबर भइल। आशा देवी के घर के लोग आइल। अइसन हालत देखि अचम्भा कइल। अइसे भला कइसे हो गइल। घर के सब फूका फारि रोवे लागल। छाती पीटि–पीटि का–का बके लागल।

केहू से कवनो दुश्मनी ना। केहू से कवना रगड़ा–झगड़ा ना। रूसिआइल खिसिआइला के बाति त अलगा बा, घर में केहु से मुँह चोंथउअलि ना। फेरू आशा देवी कवना बाति पर रंज हो के अइसन कदम उठवली ह। आपन भरल पूरल परिवार छोड़ि अइसन डेग डलली ह। केवना कारन डूबि के मरली हऽ। केहू के दिमाग में एतना करेड़ बाति समाइल ना।

कुछ दिन बाद सज्जी बाति आइल गइल हो गइल। सब भुला गइल। बाकिर गांव के मेहरारू कइसहू अनहोनी पचा ना पवली। इनार पर आशा देवी के फोटो राखि फाटल–पुरान जूता–चप्पल से घेरि के करिखा पोति दिहली स। काहे से कि ओह इनार के पानी पीये लायक रहि ना गइल रहे। अबहिनो पानी सड़ल महकत रहे। हारि–पाछि आन गांव से पानी भरि के लिआवे के पड़े। बहुते दिक्कत झेले के पड़े। से बाति ले के गांव के मेहरारू आशा देवी के खूबे सरापे निनाछे स। अपने त गइली। नव हाथ के पगहो ले ले गइली। पानी पी पी के गरिआवें स। आशा देवी के फोटो पर थूकियो द सँ। 'जो रे मुँह झउँसी मरि के केतना दुख गांव के दे गइले'।

बहुत दिन बीति गइल। केहू इनार का ओरिझाकहू ना जाव। एक दिन के बाति ह। लड़िका क्रिकेट खेलत रहले सऽ। छक्का लागल आ गेना उछरि के इनार में गिरि गइल। लड़िका दउड़ि परले। इनार में झंकले। इनार के पानी सूखि गइल रहे। पीयर पीयर रेता सोनहुला शीशा अस चमकत रहे।

लड़िका इनार में गन्दा पानी की जगहा रेत–बालू देखि चिहा गइले। हाँक लगा के हल्ला कइले। गांव के लोग जूटल। अनहोनी देखि चिहाइल। पानी वाला इनार के सूखी? अइसन अबले कबो ना भइल रहे।

जवन हल्ला–गुल्ला भइल कि आन गांव के लोगो तमाशा देखे खातिर टूटि पड़ल। जेतना मुँह ओतना बाति? केहू–केहू के मुँह छेके ना। जेकरा मन में जे आवे से बतिआवे। एतना कि केहू बतिअवला से थाके ना।

आशा देवी के एगो बड़ लड़की रहली। नाँव रहे शोभा। राति खां सुतला में शोभा सपना देखली। फजिरे शोभा बाल्टी डोरि ले के इनार का ओरि जाये लगली। बाल्टी डोरी ले के जात शोभा के गांव के मेहरारू देखली। सभ आन गांव से पानी भरि के लेआवेला, ई आजु कइसे रास्ता भुला गइल बिया। जरूर दाल में कुछ करिया बा। एतना बाति सोचि के कुछ मेहरारू शोभा का पाछा लागि गइली सऽ।

बुझाइल जइसे बान मारि के केहू बान्हि देले होखे। शोभा बे आगा पाछा तकले इनार पर चोहुँपली। बाल्टी के डोरी से बान्हि के इनार में डालि दिहली। शोभा का पाछा–पाछा जवन मेहरारू आवत रहली से ओन्हनी के मुँह से अनासो निकसल। महतारी के परछाई पड़ि गइल बा का कि जइसे पागल हो गइल होखे। भला सुखला इनार में से पानी भरी? माई के भूत बेटी पर चढ़ि गइल बा का?

अरे इ का? जेतना देरी ले गांव के मेहरारू तमाशा देखि मने मन कुछ सोचत रहली ओतने देरी में शोभा एक बाल्टी पानी भरि के खीचि लीहली। बाल्टी में पानी लेके मारल मंत्र लेखा घर का ओरि चले लगली। बाल्टी से छलकत पानी देखि मेहरारून के काठ मारि दिहलसि। फेरू त कईगो मेहरारू इनार का ओरि दउड़ि पड़ली। इनार में झंकली। इनार में एकदम्म से उज्जर सफेद शीशा अस साफ पानी भरल रहे। सपनों में गांव के लोग हेतना साफ पानी कबहीं ना देखले रहे। पेनी में सुइयो गिर जाव त झलके लागी। फेरू त गांव में भुंइडोल आ गइल। इ कवन करिश्मा भइल। आशा देवी मेहरारू ना दुर्गा रहली ह। जवन आपन परान देइ के गांव के जिया गइली। बाल–बच्चा बूढ़ पुरनिया के जुड़वा गइली। इनार पर मेला झूठ हो गइल। जुरुते आदमी जुटले। इनार से दस हाथ फइले तक कोड़ि खन के बरोब्बर कइले। लीपि–पोति चिक्कन कइले। आशा देवी के फोटो आइल। इनार के जगत पर रखाइल। माला फूल से सिंगार भइल। हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, हरे रामा, हरे रामा के रामधन धुन गवाये लागल। हुरका, पखाउज, शहनाई, बैन्ड बाजा बाजे लागल। गोल के गोल मेहरारू मातादाई। के गीत गावे लगली। आशा देवी के फोटो पर माला, फूल, पइसा चढ़ा के उनकर आरती गवाये लागल। कुछ दिन बाद आशा देवी के मंदिरो बनि गइल। उनका नाँव पर मेला लागे लागल। इनार के पानी अमरित पानी के नाव से निरोगी पानी कहाये लागल।••

■ jkt lkMh ?kj] pkd dVjk] cfy;k]

कथक्कड़ी

भँजेठी

✍ प्रकाश उदय

¼^ikrh* ds ,g u;k LrEHk ^dFkDdM+h* ds tfj, izdk'k mn; gj vad esa vkiu lquy douks ^dguh* lqubgsa ^lquy* Å gks ldsyk fd lHkdj gks[k] ^lqukoy* mudj vkiu vxj gksbZ r gksbZ] uk gksbZ r Ågks mudj vkiu uk gksbZA gks ldsyk fd Å vkdj gks[k tsdjk ls Å lquysA vruk r r; ck fd Å vxj lquoyk-vl fy[ks ibgs vk jmjk vxj lquyk-vl i<s ikbc r tou ^dguh* ck] ^dFkk*] fy[k-i< ykxu ds fglkc ls ^ykdd dFkk*] rouk ds Ågks ruh vf/kdk ibgs] jmjks ruh vf/kdk ikbc & lEiknd½

तीन गो भँजेठ रहैं, तीनो आप अपनी के। तीनो अलगा.अलगा, अलगा अलगा। जगहा प, अलगा.अलगा लोग लुगाइन में। आप.अपनी के हाँकल करैं, एक.से.एक लन्तरानी छोड़ल.लपेटल करैं। कवनो हिमालै के रूई के गोला अस उड़ा दे, कवनो समन्दर के सीप में सुता दे, कवनो अपना कान के पीछे तरहत्थी लगा के बतावे कि इहाँ से तीन कोस उत्तर, तीन गो करियक्की चिंउटी एहर आवत बाटिन कि ओहर जात बाटिन ; बाकिर तवना कुल के कवन किस्सा, किस्सा तवना के जवन तब तरे से उपरे भयल जब तीनो के तीनो एके जंगल में तीन राह से अइलैं, तिमुहानी पर एक्के ठईं भेंटा गइलैं।

राम.राम भयल, दुआ.सलाम भयल ; तू कइसे, तू कइसे, तू कइसे? त हम त शिकार से, त हमहूँ शिकार से, त हमहूँ शिकारे से। आछा त कवन शिकार तू , कवन शिकार तू , कवन शिकार तू? त हम त बाघ के, त हमहूँ बाघ के, त हमहूँ बाघे के।

आछा त तूँ कइसे कइलऽ शिकार?

त हम त अँइसे कि ओहर से बाघ आयल, एहर से हम। न हमार पाँव पाछे, न ओकर पाँव आगे। टकटकी लाग गयल। न ओह के नजर हम से हटे न हमार ओह से, हम मरलीं मटकी त ऊहो मरलस मटकी। जब मटकी मारे में ऊ बाझ गइल त हम सोचलीं कि एह से पटका.पटकी करब त पैजामा लेटाई, लवटब त मेहरारू सै बात सुनाई। त निकललीं बनूक, दाग दिहलीं गोली। बघवा देखलस कि गोली चल देले बा त सोचलस कि अब त मटकी के मोह ना छोड़ब त गोली आई आ आके लाग जाई। त चलल भाग। बाघ आगे.आगे, गोली पाछे पाछे। बाघ पुरुब त गोलियो पुरुब, बाघ पच्छिम त गोलियो पच्छिम। बाघ बेचारा पसेने.पसेने। गोलिया हमार सोचलस कि एह भागा.भागी में हमरो पसेना हो जाई त हमार त बरुदवे बिगड़ जाई। त चल्हाकी कइलस, एगो फेड़ के अलोता लुका गयल। बघवा पाछा तकलस, देखलस कि गोली रस्ता भुला गयल त निचिंत लौटे लागल। जसहीं ओह फेड़वा के नगिचे आयल, गोलिया हमार लप से निकलल आ बघवा के टप से लाग गइल। अब ई मत पुछिहऽ कि बघवा मर के गिरल कि गिर के मरल। अतना छोट.छोट बात प अखेयान करब त त भयल शिकार! त हम त अँइसे, तू कइसे?

त हम त अँइसे ना। हमसे त सँपरे से रहल ई भागा.भागी कि बाघ आगे.आगे गोली पाछे.पाछे। हम त देखलीं कि बाघ, त फान के फेड़ प चढ़ गइलीं। बघवा के आधा बल त ईहे सोचे में ओरा गयल कि अब हम एह फेड़वा प चढ़ीं त कइसे चढ़ी। त हमहीं रस्ता बनवलीं। लगलीं ऊपर से पेशाब करे, बघवा धार ध के लागल चढ़े। पहुँचे.पहुँचे भयल तले पेशाब रोक दिहलीं, धड़ाम से धरती प गिरल। अब ई मत पुछिहऽ कि गिर के मरल कि मर के गिरल। अतना छोट.छोट बात प अखेयान करब त त भयल शिकार! त हम त अँइसे, तू कइसे?

त हम त अँइसे ना। केकरा से सँपरी ई कुदैती. फनैती कि फान के फेड़ प चढ़े, सब कइसे अतना डेराई कि पेशाब लाग जाई! हम त देखलीं कि बाघ त हमरा त हँसिए ना ठटाय। बघवा के आधा जान त चिहाये में चल गयल। बाँचल आधा, तवना के बँचावे बदे पुछलस कि हँसलस काहे? त कहलीं कि सरऊ, तू जंगल के राजा होके, अइसे घुमबऽ लंगटे.उघार त हम का हँसहूँ से गइलीं! बस, लाजे निकल गयल बघवा के बाँचल जान अधवा...

तले बगल के झाड़ से खुरखुराइल कुछ सुनाइल त तीनो भँजेठ के एके राह सूझल, आपन.आपन भँजेठी झाड़ में झोंक के जेहर दिखे दवर ओहरे भाग चलल। अब का पता कि ओनहन के हबड़ा के भगला से गबड़ा के, कि ओनहन के बाघ.बहादुरी के बखान से घबड़ा के, झाड़ी में जवन खुरखार कइले रहे खरहवा, तवनो के ऊहे राह सूझल। चलल भाग।

देखे वाला देखल कि आगे.आगे तीन मनई छवो गोड़े भागे। भागे आ पाछे.पाछे, अकेल एक चारे गोड़े खरहा खदेरले... ●●

■ Jh cyno ih-th- dkyst] cMkxko] okjk.klh 221204

कहानी

बसेरा

ब्रजमोहन राय देहाती

सबितरी देवी के एकलउता बेटा डा0 जयराज का लिलारे चिंता के रेघारी। चार दिनन से महतारी हिरिदया के बेचैन कर देले बा। तसली के खउलत पानी अस बेचैन मन बार–बार संदेही सवाल लेहले खाड़ हो जाता। संतोष के पछाड़त ममता बरबस दिमागी सवालन से घेराइल अचानक पूछे लागल ''हरदम मुसुकात रहे वाला फूल, मउरइला लेखा काहे लागऽता? अपना उपस्थिति से सँउसे घर में खुशी बिखेरे वाला महतारी के खेलवना, घर के कोना–कोना अँजोरित करेवाला सुरूज के बदरी का अँकवार में जात देखि मन दोबिधा में परल बा। अनगिनित संघर्ष से सरिआवल घर के एक–एक ईंट बरखा बूंद के प्रभावे भींजत बुझाता। जिनिगी जीये के आस पर गवें–गवें डेग डालत महतारी का लालका लिलारे चिंता के रेघारी–उनका कर्तव्य के सजग करऽता। अब बेगर टोकले काम बहँड़ि सकेला इहे सोच के पूछ दिहली, ''बेटा चार दिन हो गइल तोहरा माथे चिंता के लकीर देखत। लाख जतन के बावजूदो मन के दरद छुपावे में असफल तोहरा अपना महतारी से कुछ ना कहल माई का मोह पर आघात कहाई। हमरा खातिर हमार विभूति, हमार अत्मा, हमार संसार तूँही बाड़ऽ।

ना माई हमें कवनो बात के फिकिर नइखे। सबकुछ ठीक चलत बा। राउर आसीरवाद बरोबरे पुचकारत रहेला। महतारी किरिपा बेटा के रोवाँ–रोवाँ पुलकित करत रहेला। रउवाँ हमार माई बाप दूनो बानी। बाप के शासन आ माई के दुलार रउवें से पावत हम डाक्टर बनि के अतना बड़हन भइलीं। रउवाँ तेयाग तपस्या के परिणाम हम हिन्दुस्तान से अमेरिका अइलीं। कहे खातिर हम डाक्टर बानी। आजुओ राउरे अंगुरी पकड़ले राह ओरियावत बानी। राउर आदर्श हमे राह देखावत रहेला।

सबितरी का लागल कि जयराज बहलावे के प्रयास करत बाड़े उ मुसकात कहली बबुआ, हम तोहार माई हई। लारिकाई से लेके सेयान भइला तक अपना बच्चवन्ह के मन महतारी चाहत रहेली। बेटा–बेटी के चेहरे तनिका भर सिकन माई बा पके बेचैन कर देला। अपना जामल के आंखिन लोर के बूंद स्मकृतारी हिरिदा पर हथौड़ा चोट अस घाव करेला। अपने सैकडन दुख झेलत माई लइकन्ह चेहरे हँसी खोजत स्वर्ग सुख पावल चाहेली। अर्न्तमन के पीड़ा से छटपटात तोहार चेहरा बतावता कि तू कवनो दुबिधा झेलत बाड़ऽ। लागता अब तू बहुते सरेख हो गइल बाड़ऽ। ना त मन के बात माई से कहे में सकुचइतड् ना।

''माफ करीं माई। रउवाँ बिसवास करीं हमे अपना घर गृहस्थी के कवनो गम नइखे। ना कवनो शारीरिक दुःख से परेशान बानी। हमरा उदासी के कारण बाड़े अस्पताल में भर्ती जीवन मृत्यु से लड़ाई करत एगो हिन्दुस्तानी मरीज। अस्पताले आवे वाला हर बेमरिहा डाक्टर आ अस्पताल के जिम्मेवारी बन जाले। उनके भला–चंगा कइल डाक्टर के नैतिक कर्तव्य हो जाला। अस्पताल के बात कहि राउर रक्तचाप बढ़ावल ठीक ना समझि महटिअवले रहीं।'' जयराज कहले। ममता अपराध महसूस करत आंखिन का राहे हिरिदय छूवत सनेहिल हो जात बाड़ी। तुरूते टपके खातिर मचलत लोर रोकत महतारी हाथ, अपने आप सहलावे लागता बेटा के माथ। होखे लागता अमरित पटवन–''अस्पताले रोगी आवत–जात रहेले। एकरा ला मन छोट ना करे के चाहीं। संसार चलावे वाला भगवान बाड़े। आदमी उनकर टहलुवा हउवे। केकरा से कवन टहल कारावे के बा–उहे जानेले। गीता में कर्तव्य के प्रधानता पर जोर दीहल गइल बा।''

महतारी ओर तिकवत जयराज कहले ''बाकि पता ना हम काहे खिचाइल चलि जात बानी उनका मोह में। चाहिके के भी उनसे दूर नइखीं होत। बार–बार अनचाहे मन ओनिए खिंचा जाता।''

–''आ हम तोहरा मोहे तड़पत रहऽतानी। कांपि उठतानी तोहार मुरूझाइल सूरत देखते। हमरा लागि एकलउता सहारा तूँही बाड़। भगवान किरिये तोहे सफलता मिले के चाही। चलड् अब खके आराम करड्। तोहे काल्ह भोरही अस्पताले जाये पड़ी। सबेरे नास्ता आ दूपहर के खाना टेबुल पर रखत सबितरी कहली – ''बबुआ नास्ता कके टिफिन लेहले जईह।' हम पूजा के फूल लेके आवतानी। फूल लेके लवटते उनकर चेहरा उतरि जाता–ई त बेगर कुछ खइले चल गइले। कवन अइसन मरीज बा जेकरा दाहे खाइल–पीयल तेयाग देले बाड़े टिफिन ले छोड दिहले। सन्त मेरिन अस्पताल के आई0सी0यू वार्ड, डाक्टर नर्स के जमघट। सभकर दौड़ा–दौडी। केहू बोलत ना। इशारा के बतकही। ईश्वर चमत्कार के आस। पूजा–प्रार्थना के गोहार। सबका चेहरे प्रश्न चिन्ह। गुमसुम वातावरण। अपना कार्यकुशलता के संगे दुनिया के सबसे बड़ डाक्टर के गोहरावन। सफलता के आस।

महतारी के मन ना मानल। सवितरी देवी बेटा

के टिफिन लेहले पहुँचि गइली अस्पताल। उनका मालुम बा जे आई0सी0यू0 में खाली डाक्टर–नर्स जाले। अस्पताल के कर्मचारी उनके चीन्हत बाड़े। केहू रोकत नइखे। तबो बाहरे खाड़ शीशा दीवार से झाँकत डा0 जयराज के खोजत बाड़ीं। एक–एक आदमी पर नजर गड़ावत उनकर जिज्ञासु नजर मरीज पर जाके ठहरि गइल। आ फेर न्यन्यमि गइल आंख के पपनी। रूकि गइल सांस जाहं के तहॉ, बढ़ि गइल दिल के धड़कन। सनसानात हवा के झोंका। बिजली कड़के लागल सवितरी के दिमाग में। देह में चिरले खून ना। जेठ दूपहरिया के कहरात लूक से ओठ सूखि जाता। तनिकी देर पहिले बेटा के खिलावे के ललक से पुलकित रोवाँ पसेना से भीजे लागल लागता नदी में नहाइल होखस। देह में ओहिजा ठहरे के ताकत नइखे बुझाता लागता अररा के गिर जइहें। अपना के संभारत एगो कर्मचारी का हाथे खाना टिफिन देत–'दिस इज फार जयराज। माई सेल्फ हिज मदर। ई डा0 जयराज के दे देहऽ। हम उनकर माई हईं।' आ उ तुरन्ते वापस मुड़ गइली।

अस्पताल से घर पहुँचत सावितरी जी के गोड़ मन–मन भर भारी हो गइल। दस मिनट के राह आधा घंटा में तय क के घरे पहुँच अइली। दरवाजा खोजि भीतर घुसते बिछावन पर लोंघड़ि गइली। देह में हजारन्ह बिच्छियन्ह के टूंड एके सॅगे घोंपा गइल होखे। सँउसे देंह लहके लागल।

तनिकी देर पहिले शांत धीर–धीर जलधार लेके बहे वाली नदी बढ़ियार हो उफिनाये लागल। ऑख का सोझाा घर भर नाचत। हरदम ठंढा रहे वाला घर–सुरूज के प्रचेड गर्मी से तवे लागल। दुपहरिया के लिपलिपात दवॅक में अकेले उ सोच में डूबि जात बाड़ी। इयादन के झरोखा से आवत–जात लइकाई के पल। साछाते खाड़ हो जात बाडे कालेज के उ दिन। माई बाबू के दुलार। गांव के डगर। जवना डगरे किलकारी मारत घरे आके माई का गोदी समाइल सब कुछ भुला जात रहली। खखुअइले माई कोरा में उठावत करेज से सटा लेत रहली। झलके लागता बाबूजी के सनेहिल अंकवारा। सुध बुध भुलाइ उ सबो गइली लरिकइयॉ कुलांची बगइचा में बाप–महतारी के एकलउती बेटी। जे फूल चढ़े से महादेव पर। अनघा टोपरा के मालिक के बेटी। सगरी दलार। पटना शहर से सटले गांव। ना शहर ना देहात। आम के बगइचा। खेल में मगन लइका–लइकिन्ह के जमात। खेल–खेल में मारा–मारी। सखी–सलेहर के रूसा–फूली। फिर तनिके देर बाद सब भुला के आपुसी खेल में मगन। पॉक–पानी में छप–छप। गोड हाथ लपेटइले माई किहॉ जाते–माई डांटस–घिरावस फेरू गोदीमें उठा के छाती से सटा लेत रहली। कबो–कबो धूर से सउनाइल अइले–गमछी से झारि बाबूजी कोरा उठा लेत रहली। स्वर्ग सुख में विभोर चुम्मा लेत बाबूजी अघाइ जात रहलीं।

तनिका सरेख होते स्कूले नाम लिखवल गइल। पढ़े जाये बेरा–माई नहवाके कपड़ा पेन्हावत टिफिन डब्बा देत रोटी–फल खाये खातिर चेतावनी देल ना भुलात रहली। कहियो–कहियो ना खइले पर माई के डांट सुने पड़त रहल–आज बेगर खइले काहे रहि गइले बारे? कान गरम करे पड़ी। कहत माई डबडिआ जात रहली।

माई–बाबू के प्रेम से पटवल फूल खिले लागल। बाबू के कोरा, कान्हे, अंगुरी धइले, खीचत कुदत कबो बजारे गइले दुकाने खिलवना देखि ठुनुकले मुसुकात बाबूजी तुरूते खरीद के हाथे धरावत गोदी उठा माई के कुनमुनाइलो टार देत रहलीं।

हॅसि के टार देहली बाबूजी माई के कोहनाइल। जब माई कहली–बेटी चीट्ठी चपाटी भर पढ़ि गइल। अब बेसी पढला के का जरूरत बा, ते एकर नाम पटना कालेज में लिखवे जात बानी? बाबूजी ना मनलीं। कालेज में नाम लिखाते कुछ लोग खुश, कुछ मुॅह बिजुकवले। दूर के साच रखे वाला पटिदार रमेसर काका कहले–करोड पति के बेटी पढ़ि के नोकरी करी कि घर संभाली? पढ़ि–लिख गइले बिआहो शादी में झमेला बढ़ि जाता। तबो लइकिन्ह के कमजोर बनावे वाला समाज के मुॅहे करिखा पोतत हम बी.ए.सी. कर गइलीं। घरे खुशी के बधाव बाजल। झूम उठली माई जब सुनली कि मुखिया जीके सार के बेटा अमेरिका में डाक्टर बाटे। उ अबे घरे आइल बा आ हिन्दुस्तानी लइकी से विआह कइल चाहता।

फिर का एन.आर.आइ लडका से बेटी बिआहे के ललक पहुँचा देहलसि बाबूजी के उनका दुआरे। बायोडाटा आ फोटो देखला का बाद लडकी देखल गइल। नगद नारायन आ दहेजू सामान के बतकही फरिअवला का बाद विआह के दिन रखा गइल।बेटी विआह में बाबूजी अनधा खनच कइलीं। आइल–गइल, हाली–मोहाली, नेगी–जोगी मन मोताबिक पवले। सभे खुश रहल।

विआह के दस दिन बादे खुशियाली पर शीतलहरी के बेयार बहे लागल। 'एन.आर.आई हमके बाबूजी

का घरे पहुँचावत कहले–सबू तोहार पासपोर्ट–बीजा बनावे में कम से कम महीना लागि जाई। एने हमरा अस्पताल सँभाले गइल जरूरी बा ।हम तोहरा बाबूजी के समझा देहले बानी। पासपोर्ट बीजा बनते हम खुदे तोहे अमेकिा ले चलबि।'

घबडा गइली हम। कॉपि उठली माई। जब सुनली–दामाद अपना संगे बेटी के लेके नइखे जात। माई के रोवत देखि डा एन.आर.आई कहले–रउवॉ अपना बेटी के हमार अमानत समझि के महीना दिन राखी। हमरा पर भरोसा रखीं।'

बाबूजी का भरोस भइला का बावजूदो माई के जियरा ना मानल। हमके अंकवारि में कसि के बिलखे लगली। उ हमें माई–बाप हवाले कके अमेरिका चलि गइले।

दिन बीतल। महीना बीतल। डाक्टर के पैरा देखत आंख थाकल ना अइले डा0 एन.आर.आई। ठहर गइल जिनिगी। मुँह घुमावे लागल बसंती बेयार जवना के मदमस्त सरसरात छूवन से मन गुदगुदा उठत रहे। कम होखे लागल अमरावती के मोजराइल कालिन के गमक। चुप्पी साधिलेहले ओठन के मुसुकी। सुबह होते दरवाजा तरफ तिकवत आंखिन थकान झलके लागल। केहू के अगुआनी के तनिका भर आवाज खातिर बेचैन कान बहिराये लगले। उ ना अइले जिनका संगे जिनिगी बितावे खातिर अगिन के सोझाा किरिया खइले रहलीं।

रहि गइल उनका संग के बितावल दस दिनन के इयाद। गॅवे–गॅवे पेट भारी होखे लागल। माई घबडा गइली। बाबूजी तलमलाये लगले। फिर बाबूयेजी संभलनी। नाहि त हिम्मत जबाब देहले रहे–बेटी, तोहार विआह सुख खातिर एन.आरचआई से भइल रहे। के जानत रहल कि उ धोखवाज पइसा ला विआह करे आइल रहे। अब ओकरा चिन्हासी के नीमन तरो पाल–पोस प्रबुद्ध बनावल हमनी के जिम्मेवारी बा। पति सुख ना मिलल तबो संतति के योग्य बनावे का कर्तव्य निर्वहन कर आपन जीवन सफल बनावऽ। तोहार तपस्या बेरथ ना जाई। एक दिन ईहे संतति ओकरो पार लगाई आ ओकरा मुँहे करिखा पोती।

संतति के खेयाल आवते सवितरी जी चिहुँकि के एने–ओने देखे लागत बाड़ी। सामने जयराज के अपलक अपनी ओरी ताकत देखि झेपि जात बाडी। उदास चेहरा एक कहानी कहि जाता। सुतल से जागल अस सवितरी जयराज के, आ जयराज महतारी तरफ टिकवत। अनेकन सवालन के सेंगरा बेगर कुछ कहले आखिन बहुत कुछ कहि जाता। मन में आवत–जात सवाल खाड़ हो अनेकन कहानी गढ़ देत बाड़े। केहू कुछ बोलत नइखे तबो जयराज का माथे बेचैनी लखार होखही लागता–''हर पल खुशी लुटावे वाली देवी आज उदासी के चादर में सिमटल काहे? अपना शीतल चांदनी से घर भर अंजोरित करे वाली चन्द्रमा जोति पर बादल के प्रभाव असमंजस में डालता। बिरसन से बहत जीवन दायिनी गंगा एकाएक मलिन काहे लागत बाड़ी। बेटा पर अमरित बरिसावन हारि देवी मुख पर दोविधा उजागर होता।''

जयराज के अपनी ओर निहारत देखि सवितरी सहज होखे लगली, 'अरे बेटा कब अइल हऽ? ठहरऽ तोहरा ला चाय बनावतानी।' कनखी से माई के ताड़त जयराज अचरज में पडल बाड़े। तले चाय पिआली टेबुल पर रचत सवितरी जी–''का हाल बा तोहरा मरीज के? होश आइल कि बेहोशे बाड़े?''

''आज कुछ ठीक बाड़े। असल में उहाँ का भारतीय मूल के अमेरिकन बानी। पता लागल हा, उनका परिवार में एहघरी केहू नइखे। जे रहे उ उनके छोड अलग घर बसा लेहल बा। जवानी में उनकर चलती रहे। बहुत बड रूतवा के मालिक आज बुढापा में अकेले तड़पत बाड़े। अपना देसे अइसनना भइल रहित। बेटा–बेटी भाई–भतीजा सहारा बनि जइते। धन–दौलत रहले का फायदा? केहू एक घोंट पानी देबे वाला नइखे। हम उनका इलाज में बाझल बानी। उनका होस में अइला पर खुश बानी। आगे के भगवान मालिक। चली अब खाना खाइल जाव।''

रोटी के ग्रास मुँह में डालत जयराज फेरू बोलले अपने से मरीज वाली बात छुपावे के गलती खातिर माफी चाहतानी। डाक्अर आ बेमरिहा बीच कबो–कबो समस्या आइये जाला। एकराला परिवार के चिंता में डालल.....। हम राउर एकलउता संतान बानी। रउवॉ पने ब्याकुलता उभता स्वभाविक बा। हमरो बाबूजी जीयत रहितीं तइहे उम्र भइल रहित।

सुतला से जगली चिंहुँकत सवितरी धीरे से बोलली 'कवनो बात नइखे। थाकल होइब बिहने देखल जाई होला उहे जे भगवान चाहेला।'

बिहने सवितरी जी के गोड़ अपने आप अस्पताल की ओर बढ़ि चलल। बुझाइल लगातार बहतरहे वाली नदी क धार थीर हो गइल बा। अपना गोदी में अनगिनत जीव–जन्तु धारक जलनिधि के हलचल

वाली सुभाव शान्त होके कवनो प्रलय के सूचना दे रहल बा। धरती के सजोवनी बायु बहल बन्द जइसे तूफान आगमन के मूक घोषणा अस लागता। ममतामयी देवी के गंभीर चेहरा बतावत बा छछाते दुर्गा स्थिर चाल से पृथ्वी के भार हरण करे खातिर अस्पताले पहुँचल बाड़ी। कठोर मुद्रा निर्भय गति से सवितरी जी पहुँच गइली ओह मरीज का लगे, जवन उनकर रात के नीनि हरि लेहले बा। अस्पताल फाइल में ओकर नाम पढ़ि के मुँह घुमवले तमतमाइल चेहरा ठहर के कठोर भइल आ गंभीर आवाज मुँह से निकलल–

''रउवाँ उहे गुरूदयाल नू हईं जे तीस साल पहिले अपना के बीस लाख में पटना दीघा घाट में बेंचले रहीं आ दू लाख के सामान दहेज में हॅसोथ के बाबू रामप्रसाद के लड़की से बिआह रचवले रही। अपना बाप–मतारी के आपन कमाई देवे के बजाय लडकी बाप के बगली झाारि के एगो बेकसूर के अनाथ बना के अमेरिका भागिअइली। रउवाँ अस अनेक एन.आर. आई हिन्दुस्तानी शादी कर धन कमाए अमेरिका आके समाज का माथे कालिख पोतत बाड़े। एक लडकी के जिनिगी बर्बाद कइके कवन सुख पावतानी? अगिन सोझा सात फेरा लेके जिनिगी भर साथ निभावे वाली किरिया झकझोरतो ना रहे?

गुरूदयाल का गुमान ना रहे कि अमेरिका के बेस्टन शहर में उनके पहचाने वाले केहू हिन्दुस्तानी मिली। एकाएक आपन नाम आ घिनावन करनी के बरवाने सुनते कठुवा गइल। अपना के संभालत बिस्तर पर बइठे के कोशिश करत बोलले एह दूर देश में हमरा जिनिगी के तोपल कुकरम के उधार करेवाला रउवाँ के हईं? लागता बहुत नियरा से हमके जानतानी। करनी के फल पावत धन कमाये के सनक, आ विदेशी परिवार बसावे वाला हमरो करतूत पर से पर्दा उठावे वाला के एक नजर देखल चाहतानी।''

–''रउवाँ उफिनात नदी में नाव छोड़ि भगेवाला मल्लाह हईं। गाय हत्यारा कसाइयो से कठोर दण्ड रउवाँ पावतानी ईहे हऽ स्वर्ग कि मरिचिका सुख। कहाँ गइल राउर सुख, जवना खातिर असल सम्पति तेयाग दउरल आइल रहली? जब एहिजे परिवार बसावे के रहे, त अपना देशे चारागाह समुझि बिआह करे गइल रहीं? जानत नइखीं कि हमनी किहाँ नारी आपन सुहाग एक बार पावेली आ जिनिगी भी निभावेली। पत्नी खातिर पति जरूरी होले ओतने संतान के बा पके छत्र–छाया।'' गला भरि गइल सवितरी जी के।

''बस करीं, बस। अब आगे सुने के कूबत नइखे हमरा। अपना हरियर बगइचा अपने हाथे उजारि माथा पिटत रहे वाला माली आ आंगन बीच गमगमात फूलन का जर में गरम पानी डाले वाला मानुष दया क हकदार ना होला। बाकिर अपने खोदल गड्हा में गिरे वाला पर ऊपर से ढेला फेंकि आपन हाथ गंदा जनि करीं। हम अफरात धन कमाये के हिरिस में आन्हर हो गइल रहलीं। अनधा तिलक दहेज से घर वाला अगधइले। सोचले रहलीं –अमेरिका शादी कइले नागरिकता हासिल कर खूब पहसा कमाई। कमइबो कइलीं। बाकी ऊ ना मिलल जबन हिन्दुस्ताने मिलेला। कवन मुँह लेके जइतीं हिन्दुस्ताने। जेकरा खातिर कइलीं ऊ किनार हो गइल। हम राउर दर्शन चाहतानी। मुँह फेरले जनि रहीं। बिनती स्वीकार करीं।

धरती डोले लगली। अस्पताल के खटिया में हलचल मचि गइल। आकाशे बादल गड गाड़ा ए लागल। गुरूदयाल के चिरले खून ना। अकबक बन्द! बिलकुल आवाक अनहोनी पर विश्वास ना एकाएक मुँह से निकलि गइल सा...सा... सा... सवितरी। तू एहिजा?''

गुरूदयाल का तरफ देखत कठोर मुद्रा में बोलली सबितरी–हम उहे अभागन औरत हई जेके रउवाँ मजधारे धसोरि आइल रहलीं। अपना मुअल आत्मा के गुमाने बिआह के दस दिन बाद पूरा जिनिगी कुहुँके खातिर छोडि आइल रहीं। हिन्दुस्तानी नारी का नजर में रउवाँ घिनावन आत्मा बानी। हमार बाबूजी हिम्मत दिहली। रउवाँ अमेरिका अइला का बाद ना कवनो खोज कइलीं ना ठेकाना देहलीं। राउर बच्चा हमरा कोख (पेट) में कुलबुलाये लागल। कर्तव्य में सजग हम ठानि लिहलीं कि बेटा होखे चाहे बेटी, कवनो तरह से ओके डाक्टर बनायेब'' हम बाबूजी के मना कइला का बावजूदो ओके अमेरिका आवेला उकसावत रहलीं। विश्वास रहे–रउवाँ अपना करनी के फल भोगे एक दिन कहियो आइबे करबि। जवना डाक्टर के इलाज से रउवाँ अभी तक जीअत बानी, ऊहे डाक्टर जयराज राउर तेयागल बेटा हवे। कवन मुँहे ओके आपन बेटा कहि के बोलाइब?

बेटा के इयाद सबितरी के सजग कइलस। कनखी से चारो ओर सावधानी से देखत अस्पताल से घरे लवटि जात बाड़ी। आस–पास जयराज के ना देखले चैन के सांस लेत बाड़ी।

मुरूझाइल चेहरा, सूखल ओठ, भारी पाँव से डेग बढ़ावत जयराज के घर मे ढुकते सबितिरी जी चिहुँकि जात बाड़ी। उनका माथे गंवे हाथ सहलावत पूछत बाड़ी–असरा के दिअरी आंधी के झोंक से बुझत (बुतल)

रहलो पर प्रयासरत ओके उजियार करे के जतन करत रहेलऽ। तोहरा मरीज के कवन बीमारी गरसले बा। तोहरा अधीरता बढ़ल काहे लागता?

कहे खातिर ठीक बाड़े/बाकिर उनकर रिपोट जीवन दायी नइखे आइल। उनके जानलेवा बीमारी एड्स हो गइल बा। एह वजहे कुछउ कहल जल्दीबाजी होई। बहुत आगे बढ़ल बीमारी में सेवा सहाय करे वाला परिवार के लोग अछूत रोग के छूत से बचल रहे खातिर उनके भगवान भरोसे छोड़ि किनार हो गइल बा।

दोबिधा में फँसल जयराज के अपनी ओर तिकवत देखि सबितरी जी—''तोहरा मन के बात हम बुझत बानी। सकपकात काहे बाड़ऽ। अइसन हाल बात ले आवऽ अपना घरे। जवन सँपरी सेवा कइल जाई। अपना नजर सोझा तू देखतो रहबऽ। सेवा—भाव बनल रही।

माई का आदेश के इन्तजार करत जयराज का लागल जइसे भगवान के बरदान मिलल होखे। चहकत बोलले—'ठीक कहतानी। हम काल्हुए उन्हे ले आइल चाहतानी। उनका रहे, सुते के कमरा साफ—सॅफाई कर देत बानी। खाये—पीये के सामान बाजार से आति देत बानी।

दुसरे दिन पहिया कुर्सी पर गुरूदयाल के बइठवले जयराज अपना घरे ले अइले आ कहले, ''चाचा जी, एह घर के आपने समझी। संकोच मत करबि। जे चीज के जरूरत महसूस होखे बेहिचक कहबि। टेबुल पर दवाई रखल बा। हमार माई दवाई खिलावत रहिहें।

जयराज के अस्पताले चलि गइला का बाद गुरूदयाल उनका माई से कहले, ''काहे के बोलबलू हऽ हमके? हम माफी ना सजाय के हकदार बानी। तोहन लोग के आपन कहे के हक गवॉ चुकल बानी। जेके पांव के धूल समझ छोड आइल रहली आज तुही आ तोहार बेटा नाव पार करत बाडू। भूलि गइल रहली अपना जन्म—भूमि मे जहॉ पोता पोती में दादा—दादी के प्राण आ दादा—दादी के चरन में स्वर्ग पावल जाले। महतारी के आंचल के छॉह—संतान के बसेरा आ पत्नी के काजल कोर पति बसेरा होला। बेटा के लमहर बॉह आ मजबूत कन्धा बाप के सुखदाई सहारा होला। अनजाने सही—जयराज के ममता—ईश्वर किरिपा कहल जाई। अपना त्याग—तपस्या से तू आपन बसेरा सरिआ के रहत बाडू।

बहत नदी धार में नाव पर पाल तानल घर बनावल ना कहल जाला। ओके उड़ावे खातिर आन्ही के एक झोका आ पानी के हुमाच काफी होले। जयराज के बार—बार पूछला का बादो अपना बिधवापन पर पर्दा डालत रहली। का कहिती? भगेडू बा पके बेटा उनके भकझोर देहले रहित। लीं दवाई खा लीं। बिअही से सेवा पावत पत्नी कहे के अधिकार से बंचित रउवॉ नजर के सोझा पत्नी सुहागन नइखी। अब सेवा धर्म निभावत राउर तबियत ठीक होखेला भगवान से प्रार्थना करेके बा।

गुरूदयाल का भरोस बा एक न एक एक दिन बेटा आ मेहरारू अपना लिहें। सवितरी का दिल में दया क सागर उमड़बे करी।

जयराज सोचले—तकदीर बदले के अवकात नइखे हमे तबो इनकर सेवा कइले संतोष मिली।

जयराज के लगन आ सबितरी के सेवा तकदीर नइखे बदलत। दिना—दिन हालत खराबे होत कवनो सुधार ना। पूरे खॅटवास हो जात बाड़े। खाना—पानी बन्द। ओते ही गुरूदयाल कबो जयराज के देखत। कबो उनकर हाथ पकड़ि कुछ कहे के हिम्मत जुटावत सबितरी का ओर दया भाव से तिकवत आस में अरज करत आंखिन का आत्मा से आवाज आवता—अब हमें मॉफ करिदऽ। बेटा के एक बेर बेटा कहत परान छूटले धन्य हो जायब!

नइखी रोकि पावत सबितरी जी अपना के। अडिग हिमालय के हिरिदय पिघले लागता। बहि चलत बा गंगोतरी धार आखिन कोरसे। अमनख रूपी बरफ क ढोका पिघलत सरके लागत बो। नारीत्व से गरूर (आन) हार मान लेत बा। बेदना प्रवाह हँकड़ि उठत बा। सुसुकत कहली बे.....टा..... जयराज, असीरबाद ले लऽ अपना मरीज से। इहाँका तोहर बाबूजी हई।''
फेर फफकि के रोवे लागत बाड़ी।

जयराज कबो माई ओर कबो गुरूदयाल तरफ। बिधि के लिखतंग बिलाप करत छापि लेत बा जयराज के —हमें छोड के मति जाई बाबूजी। उनके माथे सहलावत गुरूदयाल कहलें—बेटा हम जात कहॉ पानी? पंछी खाली बसेरा बदलत बा। आसीरबाद तोहरा संगे रही। सबू .. हमे माफ.... कर..... के बडहन उपकार.... कइली।'

हाथ ढीला पड़ि जाता। मूड़ी लोंघडा जाता। उड़ि जाता पंछी बसेरा छोड़ि के।

■ 159@2@1] NkVk xkfUnij] te'knij&15

लघुकथा

'भाषा' आ 'भंडारा'

राजगुप्त

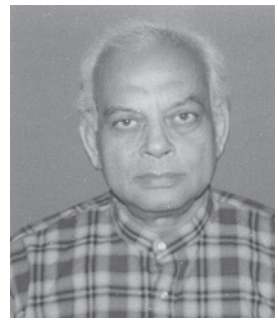

रामदास किहाँ जात खा, ओह दिन हम मने–मन बहुत खुस रहनी कि ऊ हमार बात ना कटिहें। खाली हाथ लवटे के सवाले ना रहे, सोझा परला, शीले–मरउवत काम आवेला। ई त खाली पत्रिका खातिर चन्दा क सवाल रहे।

रामदास हमरा मोहल्ला के नामी अदिमी आ बड़का बनिया। दोकान क बिक्री–बंटा का माला में, भूत उनकर हर जोतत रहे। समाजिक–काम काज में खुल के मदद देसा। हरेक साल, शिवराति का भंडारा में पचासन हजार खलिसा 'भंडारा' में खरचा कर देसु। दिन के ममिला रहे। हम उनका दोकान पर चहुँपि के अपना भोजपुरी समाज आ ओकरा पत्रिका के चर्चा करत कहलीं, ''हमनी क मातृभाषा क सेवक हुईं जा। भाषा साहित्य के एगो पत्रिका निकालेनी जा। साल भर गॉहक बने में खाली डेढ़–दू सौ क सहजोग लागेला। रउवो भोजपुरिहा हईं। सदस्य गॉहक बनि जाइब त मातृभाषा के बहुते अलम भेंटाई।''

रामदास जी के मन पितरा गइल, 'ए भाई! हम दोकानदारी वाला अदिमी, पढ़ल–लिखल का जानी? दोकान पर अखबार आवेला, घरहूँ आवेला–ऊहो पूछऽ त हमरा घरहूँ केहू ना ई भोजपुरी पत्रिका के कइसे पढ़ब? साँच पूछऽ त हमरा घरहूँ केहू ना पढ़ी? बोलला–बतियवला में कवनो बात नइखे, बाकि पढ़ला लिखला में .... राम राम, नौ दिया तेल जरी नब केहू दू आखर बाँची!'

हम मायूस ना भइलीं। कहलीं, 'सेठजी, हाथ गोड़ ना चलाइब त पँवरल त दूर चलले मुश्किल होला। पढ़े लागब त लूर आ जाई आ नीको लागी! चाहब त लिखहूँ लागब।'

–''छिमा करिहऽ ए भाई एघरी अभी 'भंडारा' क खर्चा जुटावे में लागल बानी। भाषा–वासा आ पत्रिका क बात तूँ मत करऽ!'' आ रामदास मुँह फेरि के बिक्री–बंटा में बाझ गइले।

हमरा मुँह से निकसल, ''हे भगवान, पेटभरूवा के भोजन आ उपास के भिखियो ना!''

^jkt* lkMh?kj] pkd] cfy;k&277001

गजल

अशोक कुमार तिवारी

भ्रष्टाचार मिटाइब कइसे, ऊहे लउकत खाली बा।
सुबिधाशुल्क नाँव निज धइके, सगरो चलत दलाली बा।।

मेहनत वाला मेहनत कइके मुवत रहत बा दिन–दिन भर
देहचोर चलता–पुर्जा के जहवें देखऽ छाल्ही बा।

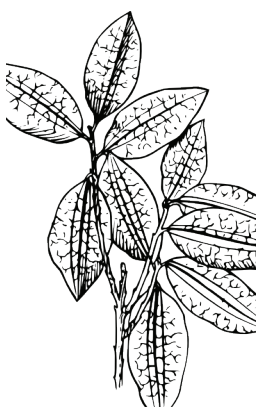

दुख, आफत आ रोग बिपत त हिस्से मिलल गरीबन के,
धनवालन के धन का बल से, सुख बा, जस बा, ताली बा।

तीसन बरिस ठेठावत जाँगर, अजुओ अभी ठेठावत बा,
नया बहुरिया के कहवाँ, छूवे के हाँड़ी–डाली बा।

सिधवा सबकर बात सुनेला, उहे लथारल जाला रोज
केहू ना अझुराला ओसे जे कुछ ढींठ–बवाली बा।

xke&ik0 l;Hkkuiqj] ok;k cfj;k] cfy;k&277216

(डा0) अशोक द्विवेदी के उपन्यास 'बनचरी'

अजय कुमार

बनचरी के कथा–सूत्र महाभारत काल से लीहल गइल बा। एकर सूत्रपात होता तबसे जब पांडव लोग माता कुन्ती सहित लाक्षागृह में जरे–मरे से बाँच के बने–बने बनरना करत बा। आ एही क्रम में भीम के हिडिम्बा से प्रेम बियाह से लेले पाण्डवन के बनसास आ महाभारत युद्ध, घटोत्कच के बलिदान बाद हिडिमा के लोकोपकारी साधना अज्ञातवास प खतम हो जाता। कथा सूत्र पूरा 303 पेज में निबद्ध बा।

जइसे तुलसीदास के रामचरितमानस होखे आ भारतीय वांगमय में, लछुमन जी के मेहरारू उर्मिला के चरित्र उपेक्षित रह गइल बा तसहीं हिडिमा के कथा के जादे प्रचार नइखे। ओकरा के मात्र एगो राक्षसिए मानल जाला। एह कथा में हिडिमा के कथावृत भरपूर रूप में लखार होता। हिडिमा प इ पहिला उपन्यास बा जवना में द्विवेदी जी लाम–चाकर रूप में आर्यसंस्कृति आ राक्षसी संस्कृति के मिलन आ समन्वय से ओत–प्रोत लौकिक कथा अजगुत रूप में हमनी का सोझा रखले बानी। कथा–सूत्र में अतना प्रवाह बा, अतना सहजता बा। गति बा कि पाठक शुरू से अंत तक बन्हाइल रह जाता। बड़ी ताज्जुब बा कि समतल मैदानी भाग में रहेवाला द्विवेदी जी बन, पहाड़, गुफा के अतना जियतार चित्र हमनीका सोझा रखले बानी कि कहीं से बनावटी या अनमुआर लेखा नइखे लागत। कथा–सूत्र में पूरा–पूरा मौलिकता बा। उपन्यास में अतना जीवंतता, सहजता बा कि बुझाता कि सब जिकिर आंखिन का सोझा छछात ठाढ हो जाता।

पात्रनि के दिसाई देखीं त हिडिमा उपन्यास के नायिका बिया। पूरा कथानक ओकरे चारों गिरदा घूमत। अन्य मुख्य पात्र में ओकर माई, (कुंदकी) भाई हिडिम, पाँचो पांडव, माता कुन्ती, हिडिमा के प्रिय सखी निरिमा, निरिमा के भाई, सेनापति दांडी, पुंडरक, आचार्य चांडक कुन्दू, कुन्दकी काकी, मंत्री उतुंग, सेना के रक्षक, गुप्तचर वगैरह बाड़े। मुख्य पात्र में हिडिमा, घटोत्कच, भीम आ माता कुन्ती आदि लोग बा। एह उपन्यास में हिडिमा प्रेम, त्याग, धैर्य कर्त्तव्य के मूरत बन गइल बिया। जवन प्रेम का तप के सोता ओकरा करेजा में बा, तवन ओह घरी कमे लखार होत रहे, आज त दुलम बा। हिडिमा छन में प्रेमवती पत्नी, मतारी, बेटी, राजमाता भिन्न–भिन्न रूप में लखार होतिया। आ ओकर हर रूप अपने–आप में चमकऽता। मानवीय प्रेम, दया, करूणा से भरल बिया। अपना प्रेम के पावे खातिर उ माता कुन्ती के सभ बात मान के भीम से बियाह कर लेतिया। ओकरा पुत्र–प्राप्ति तकले भीम के संग मिलऽता। राजरानी के पदो ना आ कवनो प्रतिष्ठो ना मिलल ना कवनो पूछ भइल। सधवा होइयो के बिधवा वाला जीवन मिलल। आपना राज के भार चलवलस, एकलौता बेटा के महाभारत के युद्ध में बलिदान करियो कि अभागत रहि गइला क ई चोट द्विवेदी जी के सालऽता। कवि–कोविद के काम ह कि हजार बरीस पहिलहूँ कवनो अन्याय अनेत भईल बा त कवि–रचनाकार ओह अनेत के प्रतिकार आपन समय में अपना कलमें से करेला।

द्विवेदीजी एह अनेत प करारा चोट मरले बाड़े। ओह अनेत प आजले केहू तकलहूँ ना रहे। मेहरारू जात के त इहे नियति रहल बा। सभ त्यागला के बादो कुछ ना पावल, ना पद ना प्रतिष्ठा, हाय रे समाज। पहिलहूँ उहे रहे, आजो उहे बा। हिडिमा के चरित्र के उजरका पक्ष हमनीका सोझा राखत द्विवेदी जी स्त्री विमर्श के चिन्ता करतानी। आ ओकरा फिकिर के परतच्छ उघार देत बानी।

घटोत्कच आपन करतब के पूरा करऽता, जवन बाप के पलिवार ओकरा के कुछू ना बुझलस, जेकर खातिर आपन जीवन बलिदान कके, समाज का सोझा जवन आदर्श रखलस तवना के मिसाल आजो मिली का?

माता कुन्ती के चरित्र एगो चतुर राजनेता वाला बा, जवन अपना वंश के रखवारी खातिर बेटा भीम के एगो ''कामचलाऊ'' बियाह के आज्ञा दे देतारी, पुत्र प्राप्ति तकले ही। राजवंश के अधिकार से हिडिमा के बंचित करेके बचन ले लेतारी तबे बियाह करे देतारी। अन्याय आ गरीब–सिधवा के शोषण के राजसी–परंपरा के ध्वजवाहक बनके एहमें माता कुन्ती चित्रित बाड़ी। बाकि सभ पात्रन के चरचा कइला प एह आलेख के कलेवर बहुत बढ़ जाई।

भीम महाराज बृकोदर नाम से एह कथा में चित्रित बाड़े, जवन पति के धर्म के निर्वाह नइखन कर पावत। उ खाली अकाट देहबल के मालिक बाडें, स्वतंत्र सोच उनुका पाले नइखे। उ पिता धर्म के पालन ना कर पवले जवन ऊ खुद (पेज 256 में) सकारत बाड़े।

खालि युधष्ठिरे कहऽतारे कि अब हमनीका हिडिमा के का मुँह देखाइब जा। घटोत्कच बध पर घटोत्कच आपन बलि एह महाजुध में ना दीहित त आज महाभारत आ पांडव–वंश के कहानी दोसरे मोड लिहले रहित।

उपन्यास में पुहर संवाद बा जवन कथा में सुभाविक गति आ जान डाले में समर्थ बा। साइते कवनो प्रसंग बा जहाँ संवाद नइखे। संवाद बड़ी कारगर आ मन के छूवे वाला बा। एगो बानगी देखीं–

''माई। आदिवासी आ बन के युवती एक बेर जब केहूं के आपन हिरदया दे देले त ओकरे प निछावर हो जाले'' (पेज–25) ''हँ आर्यपुत्र। ऊ पिता के अनुगामी आ पिता नियर पराक्रमी बनी।'' (पेज–121) कहे के भाव बा कि पूरा उपन्यास जियतार संवाद से भरल–पूरल बा, बाकि केनहूँ कवनो संवाद जबरदस्ती ठूँसल नइखे, बुझात। जवन बा, सहज–स्वाभाविक बा आ कथा–सूत्र के बन्हले रहता।

लेखक एह उपन्यास में तत्कालीन परिवेश आ परिस्थिति बनावे में अतना जादे कठिन श्रम कइले बा कि ताज्जुब होता। बन उपत्यका, पहाड़ झरना मय अपना सहज रूप में लखार होता। प्रकृति के अप्रतिम सौदर्य मन के मोह लेता। राज्य के सभ व्यवस्था, सैनिक, राजकुटीर, आदिवासियन के सहयोगी वृति, गान–बजान, साज–बाज, मौसम, रीति–खोज, खान–पान, परंपरा, खेती–बारी, पशु–पालन त्योहार सभ अपना सुभाविक मूल रूप में बर्णित बा।

सभ जिकिर पूरा जीवंत आ ताजा बा कि का कहे के–। वातावरन–चित्र देखीं–

''विशाल वटवृक्ष का नीचे पत्थर शिलाखंड का टुकड़न से सजाइ के एगो चबूतरा बनावल रहे, वृक्ष का एकोर ओइसने पत्थर के चापट टुकड़न के सरियाई के गोलाकार उँच देवाल लेखा बनावल रहे, जवना का ऊपर से वटवृछ क डाढ़ि अपना पतइन से छांह कइले रहे।''

''दूब, घास का वजह से मोट बिछावल गलइचा लेखा लउके।''

कुल मिलाके परिस्थिति आ परिवेश बनावे में लेखक पूरा सफल बा।

संघर्ष के दिसाईं देखीं त उपन्यास में संघर्ष बाहर–भीतर कई गो रूप में बा। कौरवनि के अन्याय से पीड़ित पांडवन के जीवन संघर्ष बा त दोसर ओरि त हिडिमा के पूरा जीवने संघर्षमय बा। टुअर लइकी के जीवन संघर्ष, प्रेम के पावे आ निभावे के संघर्ष, प्रेम पाइयो के ना पावल, पुत्र के महाभारत में झोंकल, हिडिमा के सारा जीवन एही में बीत जाता। मरद ना जनलस, जेकरा सहारे जीवन कठिन ऊहो एकलौता बेटा ना रहल, एह से बढ़के दोसर दुख का होई? तवनो के हिडिमा सह जातिया। जुद्ध के विभीषिका के अंतिम परिणाम एह संसार में मेहरारूए जादा भोगली सऽ, हिडिमा भोगलस।

दुख से पथरिया गइल। अन्त में ऊ आपन राजो तेयाग के साधू जीवन बितावतिया। संघर्ष से बींधल जीवन हिडिमा के बिडंबना बा, जवना के द्विवेदी जी उजागर करतानी।

एह उपन्यास के भाषा में ठेठ निठाह भोजपुरी से लेके प्रांजल संस्कृतमय हिन्दी के समावेश बा। तत्कालीन संदर्भ उभारे में, अनुकूल बा।

बांस, कईन, छरदेवाली, अजगुत, फलगर, पतई, रोहा–रोहट, अंउजाइल, घुसुकल जइसन–विडंबना, आचार्य, गंगा तटीय, अतीन्द्रिय वगैरह संस्कृत। तबहूँ ठेठ जादे बा, जबन लेखक के भोजपुरी–प्रेम देखावऽता। कहीं–कहीं हिन्दी शब्दन के भोजपुरिया दिहल गइल बा।

–समर्पन, करूना, सरग। दरअसल हिन्दी आ भोजपुरी के पूरा–पूरा हिरगावल ना जा सके आ, भोजपुरी के पूरा शब्दावली अबही बने के दौर में बा।

कहीं–कहीं शैली कथावाचक लेखा हो गइल बा, साईत कलेवर छोट करे के फेर में उपन्यास के उत्तरार्द्ध में महाभारत के कथा जस के तस उतारे में कथा लेखा परोसाइल बा। शुरू में जवना मंथर गति में उपन्यास चलऽता ओही रंग में चलित त अंत तक 500 पेजों में ना समाईत। अंत में शायद कलेवर छोट करे के फेरा लाग गइल बा।

हिडिमा के चरित्र के उजरका पक्ष के उजागर कइल लेखक के उद्देश्य रहल बा जवना में ऊ पूरा सफल बाड़े। जेकरा के केहू ना पूछल, केहू ना लिखल, ओकरा प पूरा–पूरा एगो ग्रंथनुमा उपन्यास रचल द्विवेदी जीये लेखा मनई कर सकत रहन। कवनो अनछुवल विषय पर कलम चलावे के धिधिरिक सभे ना कर सके। हिडिमा के ऊपर भइल अत्याचार के लेखक बानी दे देले बा।

''बनचरी'' शीर्षक के तरफ देखी जा त भोजपुर में बनचर या बनचरी कवनो बढ़िया अर्थ में प्रयोग ना होला। एकर मतलब असभ्य आ असंस्कृत मानल जाला। वास्तविक मतलब त बन में चले वाली होला। लेखक बनचरी हिडिमा के नारी प्रेम, त्याग, तप, माया करूणा के उजागर करता। बाकि शीर्षक से तनी देरी लागता समझे में।

कुल मिलाके बनचरी उपन्यास हिडिमा के उज्जवल चरित्र प जामल अन्हार के कुहेस फारे के अजगुत प्रयास बा। एहमें समस्त स्त्री–जाति के चिन्ता बा। राक्षसी से मानवी आ मानवी से देवी बनेके कहानी बा। हिडिमा के चरित्र के माध्यम से लेखक समस्त मानवता के मनुष्यत्व आ देवत्व के तरफ ले जाए के संदेश दे रहल बा। ●●

■ v t ; d|ekj ¼ih0,u0ch0 oky½
vkUkUn uxj] frokjh th d: gkrk
fiijfg;k jkM] vkjk] Hkkst i|j&802301

मानवीय मूल्यन के सहचरी: 'बनचरी'

समीक्षक-कन्हैया सिंह 'सदय'

✍ कन्हैया सिंह 'सदय'

रचनामधन्य रचनाकार आ 'पाती' के संपादक डॉ0 अशोक द्विवेदी जी के भोजपुरी उपन्यास 'बनचरी' के लोकार्पण, भोजपुरी अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद द्वारा दिनांक 19 सितम्बर 2015 के आयोजित, 'कहानी–पाठ एवम विमर्श' सत्र के दौरान, स्वराज भवन के सभागार में सम्पन्न भइल।

देखनउक साज–सज्जा के साथ प्रकाशित 308 पृष्ठ के एह उपन्यास से ना खाली तमाम भोजपुरी भाषा भाषी लोग के मान बढ़ल, बलुक भोजपुरी साहित्यो गौरवान्वित भइल। बधाई!

जब कठिन तपस्या फलित होले, अनवरत साधना सिद्ध होले, इच्छा–शक्ति बलवती होले अ लेखनी खुद, लेखक से संवाद करेले, तबे बनचरी जइसन कृति विरचित होले। ई उपन्यास महाभारत कालीन पृष्ठभूमि प रचाइल बा आ विशेष रूप से बनवासिनी 'हिडिमा' पर केन्द्रित बा। एकरा कथा–वस्तु के दू भाग में बाँट के परखल जा सकत बा। बाकिर, एकरा पहिले हम कहल चाहब कि पहिले जेकरा के असुर राक्षस भा अनार्य कहल जात रहे, उहो लोग आदमिये रहे। ओहू लोग में दिल दिमाग रहे... सुरक्षा आ संवेदना के भाव भरल रहे। अपना तामसिक वृति, अशिक्षा, रहन–सहन, खान पान, पहिराव ओढ़ाव आ अविकसित जीवन शैली का चलते ऊ लोग उपरोक्त उपनामन से जानल जात रहे।

उपन्यास के पहिला भाग के, आर्य–अनार्य संस्कृतियन के मिलन–सेतु का रूप में देखल जा सकत बा। एह अन्तर संबंध के स्थापना सकारात्क सोच–सरोकार आ लोक हित के भावना से संचालित बा। कथानक कुछ अइसे बा, लाक्षागृह से जान बचाके भागत परात माता कुन्ती का साथे पांचो पांडव जब 'हिडिम्बासुर के जंगलराज में आवत बाड़े त ओकर बहिन हिडिमा, महाबली भीम के देखके मोहित हो जात बिया। ऊ बुद्धिमान रूपवान, बलशाली आ नारी–सुलभ सुघराई से भरपूर कमनीय युवती बिया। हिडिम्ब का ई नइखे भावत। भीम का साथ मल्लयुद्ध होता आ ऊ मारल जाता। हिडिमा, कुन्ती का आगे भीम से बियाह करे के प्रस्ताव राखत बिया। बहुत मान–मनौवल का बाद ऊ एह शर्त प राजी होत बाड़ी कि भीम खाली एक बरिस ले भा पुत्र जन्म तक ही ओकरा साथे रहिहें आ ऊ आर्यकुल के ना त कुलबधू नाहिं ओकर बेटा युवराज। परंपरा का मोताबिक भीम के बियाह हिडिमा से होता आ ऊ ओह राज के राजा बनावल जात बाड़ें। पांडव बन्धुवन के सहयोग आ निर्देशन में, ओह क्षेत्र के चौमुखी विकास होखे लागत बा। कृषि पशुपालन, खान–पान, रहन–सहन, रण–कौशल, सैन्य–संगठन, खुफिया तंत्र आ शिक्षा के नया–नया खिड़की खुले लागति बा। ... आ एकरा साथे–साथ भीम आ हिडिमा के आत्मीयतो बढ़े लागति बा। जहिया प्रेम परवान चढ़के दाम्पत्य, जीवन के पूर्णता प्रदान करत बा, हिडिमा गर्भवती हो जात बिया। तब प्रेम खुदे मानसिक स्तर प पहुंच के आपन व्याख्या करे लागत बा। समय बीतत देर ना लागे। एकदिन उहो घड़ी आ स्थिति बा जब हिडिमा के कोख से 'घटोत्कच' के जनम होता आ माता कुन्ती अपना पांचो पुत्रन का साथ गुपचुप ओह क्षेत्र से प्रस्थान कर जात बाड़ी। जब हिडिमा के ई पता चलत बात ऊ वेदना से छटपटा उठत बिया। बाकिर, का करो, बचनबद्धता से बन्हाइल, ऊ अपना के सम्हार लेत बिया। पुत्र के पालन–पोषण, शिक्षा का साथ खुद राज के समस्त गतिविधियन के संचालन आ पति के अधूरा कामन के पूरा करे में लाग जात बिया। इहां तक के कथानक, मंगलकारी, मनलगाऊ आ प्रेरणास्पद बा।

दोसरा भाग के कथावस्तु, निराशाजनक आ तमाम विसंगतियन से भरल बा। ई भाग, व्यापक छाल–प्रपंच, भ्रष्टाचार, शत्रुता, संघर्ष, धोखाधड़ी, सत्ता मोह, नारी उत्पीड़न, अन्याय, अत्याचार, अहंकार आ दोसर किसिम के कुप्रवृतियन के आईना बा। द्रोपदी का साथ पॉचो पांडव के बियाह यदुवंशी कृष्ण के सहयोग से अर्जुन द्वारा अपना बहिन के अपहरण करावल, युधिष्ठिर द्वारा जुआ के खेल में अपना राजपाट सहित भाइयन आ पत्नी के हारल, फेरू भरल सभा में अपने कुलबधू द्रौपदी के चीर–हरन जइसन अनेक घटना नारी–अस्मिता आ आर्य–संस्कृति प प्रश्न लगावत बाड़ी स!

हिडिमा के वन राज्य के मंत्री दूरदर्शी आ बुद्धि मान बा। उहाँ के खुफिया तंत्र बहुत मजबूत बा। ऊ अपना गुप्तचरन का माध्यम से भीम सहित समस्त पांडव परिवार के हर खबर राखत बा। द्रौपदी के चीर हरन के बात सुनके हिडिमा के रूह काँप जाता। अपना पति भीम के प्रतिज्ञा त आउर भयंकर लागता। ऊ जानत बिया कि बनवास आ अज्ञात वास का बाद, विध्वंसक युद्ध होके रही। भीम के भार्या भइला के नाते, अपना पति के सुरक्षा खातिर ऊ चिन्तित बिया ओकर पुत्र एही भाव से नव सेना के गठन, प्रशिक्षण आ अस्त्र–शस्त्र से लैस करे में लाग जात बा। युवराज घटोत्कच के हर दिशाई शक्तिशाली बनावे में हिडिमा से तत्पर रहल बिया। अपना पुत्र खातिर माता, गुरू आ संरक्षक

सभ बिया। ऊ घटोत्कच के चतुर साहसी, प्रतिभावान, बलशाली मायावी आ कुशल योद्धा क पूरा शिक्षण देले बिया। माता का हर संवेदन आ चिन्ताभाव से ऊ परिचित बा। पितृ–भक्त त ऊ शुरूवे से बा।

आज्ञातवास से लवटला का बाद कृष्ण के नेतृत्व में नया ढंग से हक हिस्सा के मांग होता। बाकिर जुर्योधान नकार देता। महायुद्ध के दिन रोपा जाता। फेर अपना–अपना पक्ष के राजा लो के निमंत्रण पेठावल जाता, बाकि हिडिमा का राज के कवनो सूचना नइखे आवत।

हिडिमा सोचत बिया–पुत्र–जन्म के बाद एह राज के राजा भीम एको बेर अपना पुत्र, प्रजा आ भार्या के सुधि ना लिहलें...जेकरा प हम आपन सर्वस्व निछावर कइली, आजु ले ऊ हमार खोज–खबर ना लिहले... अभी तक युद्ध के निमंत्रणो ना आइल, फेर हमरा का करेके चाही? हमरा उहे करे के चाही जवन एगो सहचरी भार्या के कर्तव्य होला.... अपना प्रिय पतिका मान सम्मान खातिर ओके आपन सभकुछ लुटा देबे के चाही...। फेर ऊ घटोत्कच के बोलके आशिर्वाद देत आदेश देत बिया– 'जा बेटा, अपना पुत्र धर्म के पालन करऽ। अपना बल–पराक्रम से दूनू कुल के गौरव बढ़ावऽ।' इहे त्याग आ बलिदान ओकरा के साधारण से असाधारण बना देत बा।

महाबली घटोत्कच के शौर्य आ अचूक प्रहार से कौरव–सेना चकित हो जात बिया। लागत बा ऊ अकेलही युद्ध समाप्त क दी। बाकिर, अइसन नइखे हो पावत। जुर्योधन के सलाह से कर्ण ओरा प इन्द्र के दिहल दिव्यास चला देत बाड़ें आ ऊ धराशाई हो जाता।

घटोत्कच के वीरगति प्राप्त कइला का हाद हिडिमा धीरे–धीरे निरासक्त निर्वेद का स्थिति में आवे लागत बिया। कुछ दिन बाद ऊ आपन राज–व्यवस्था अपना विश्वसनीय सहयोगिन के सउँपके ओह गुफा में निवास करे लागत बिया जवन ओकरा प्रेम प्रसंग के साक्षी बिया। ऊ देवी महामाया के परम भक्त बिया। एक दिन ओकरा देवी के दर्शन होता आ ऊ खुद के उनका प्रकाश–पुंज में समर्पित क देत बिया। हिडिमा के अलोप भइला के खबर से सभे चकित हो जाता आ ओकरा के देवी समुझके पूजे लागत बा। एकर प्रमाण, हिमाचल प्रदेश के मनाली में बनल देवी हिडिम्बा के जीवन्त मंदिर बा। हमरा विश्वास बा जबले देवी हिडिम्बा के पूजा होत रही, ई 'बनचरी' जीवित रही।

महाभारत से सम्बंन्धित घटनन आ पात्रन से भला के ना अवगत होई। बाकिर, उपन्यासकार के सोच आ रचाव नया बा। ऊ ओह विगत के वर्तमान का नजर से देखत बा। सवाल बा कि का महाभारत के घटना आजो नइखे घटित होत? का आजो बनवासी उपेक्षित आ अनादृत नइखन? चीरहरन आ अपहरण का आजो नइखे होत?... ई संग्राम मनुष्य का भीतर बाहर दूनू जगे चल रहल बा। खाली देखे–समुझे के फेर बा। कथा–शिल्प में जिज्ञासा के प्रवाह बा। कथानाक के आगे बढ़ावे खातिर कुछ सुभाविक काल्पनिक पात्रन आ तद्नुरूप परिवेश आ वातावरण के सृजन कइल गइल बा, जवन स्वाभाविक लागत बा। भाषा, भाव के प्रतिद्वन्दी बिया। ई शब्द–शक्ति से सम्पन्न आ अभिनव बिम्बन से अलंकृत बिया। ••

बिग–सी–मीडिया पबिलकेशन, एफ–1118 धरातल चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–110019 से सन 2015 में प्रकाशित एह पुस्तक के मूल्य 220 रूपया बा। आशा बा, एह उपन्यास के भोजपुरी जगत में भरपूर स्वागत होई आ सराहना मिली।

■ l:id& dkfrd uxj] [kMxk>kj
,10,10 vVkekvHk lfol lVj d ikl
Ik0 VYdk oDl&t e'knij&831004

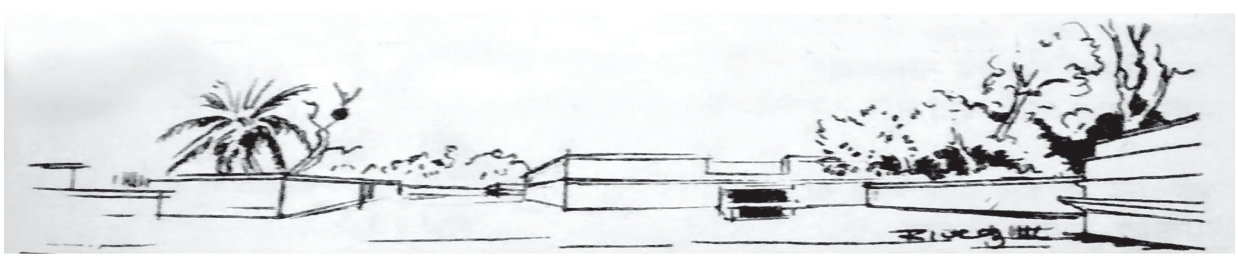

किताब चर्चा

कन्हैया पाण्डेय के रचना-संसार क प्रत्यक्षीकरण

सन्दर्भः 'जिनिगी के जुआ' (कहानी संकलन) 'पाती प्रकाशन, बलिया

डा0 अशोक द्विवेदी

'रचनात्मकता आपन राह बना लेले। कवि–हृदय कन्हैया पाण्डेय के कविता संकलन 'हेराइ गइल जिनिगी' ;अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से पुरस्कृत भइल आ 'तनिके दूर बिहान बा' कविता संग्रह से, भोजपुरी काव्य–जगत में उनके दमदार पइसार मिलल। कन्हैया पाण्डेय के रचनात्मकता राह बदललस, 'कहानी' में। 'पाती' प्रकाशन से प्रकाशित उनकर पहिल कहानी–संग्रह 'मिरजई' अपना अन्तर्वस्तु, रचाव–बिनाव आ प्रस्तुतीकरण से सबकर ध्यान खिंचलस आ कन्हैया पाण्डेय भोजपुरी कहानी–साहित्य में आपन पइठ आ प्रभाव बना लिहलन। उनकर लिखल 'मिरजई', 'क्षमा' आ 'सुख' जइसन कहानी खूब चर्चित भइली सऽ। दस कहानियन के ई कथा संग्रह 'मिरजई' अपना वैविध्यपूर्ण कथ, बिनावट आ संतुलित प्रस्तुतीकरण का कारन, कहानीकार कन्हैया पाण्डेय के रचनात्मक संभावना आ सामरथ के उजागर कइलस। बाकिर कुछ अउर छुपल रहे, जवन कविता, कहानी में प्रगट ना भइल, जवन रचनाकार के उदबेगले रहल। कुछ अउर छुपल रहे। संभावना अब दोसर राह बदललस आ कन्हैया जी का भीतर छिपल नाटककार 'मशाल जरत रही' का प्रकाशन का साथ बाहर आइल। समाजिक विसंगतियन आ समस्यन से टकरात, अमानवी विद्रूप देखत एह बहुआयामी रचनाकार के हालहीं एगो नाटक, लघु–नाटक संग्रह 'मुखौटा' छपल त ई साफ हो गइल कि कन्हैया पाण्डेय के सिरजनशीलता, उनका रचनात्मकता का बले दिनों–दिन अउर पलुहल जा तिया।

कन्हैया पाण्डेय कमोबेश ओही आम लोगन में बाड़न, जेवन लोग जिनिगी का लड़ाई में चाहे–अनचाहे जोताइल–नधाइल बा। जेवन लोग समय–संदर्भ का सचाई के अनुभव आ बोध दूनों स्तर पर अपना–अपना ढंग से करेला बाकि कवि, लेखक भइला का नाते कन्हैया पाण्डेय के अनुभव आ बोध विशिष्ट बा एह माने में, कि ऊ जथारथ के ऊपरी तौर पर ना देख के, ओकरा भीतर के साँच के जाने–समझे आ अभिव्यक्त करे के उतजोग करेलन। उनकर कथाकार एही जानल–समुझल आ भोगल भाव के कहनी में उकेरेला। जहाँ उनकर कथाकार संवेदना का सूक्ष्म स्तर पर उतरि के उनका कल्पनाशक्ति से रचल पात्रन आ चरित्रन में प्राण भरेला। हालाँकि ई जरूरी नइखे कि कहानी में केहु का जीवन के कहानी बयान होखे, जीवन क कवनो अंश भा ऊ परिस्थितियो हो सकेले, जवना से जीवन के निरंतरता आ बदलाव लउके, जवना में कवनो खास मानवी चरित्र के संघर्ष भा पलायन लउके। एह लिहाज से कवनो खास चरित्रो कहानी के अन्तर्वस्तु हो सकेला।

देश, काल, परिवेश, वातावरण आ ओमें रहे वाला समाज के सोच–सरोकार, दिशा–दशा, अन्तर्विरोध, कवनो कहानी के कारक बन सकेला। कथाकार खाली नंगा जथारथे ना चित्रित करे, बलुक ओमें छिपल मानवी सोच, संवेदना आ अमानवी प्रतिक्रियो के उजागर करेला। जहाँ विसंगति आ अंतर्विरोधन का बीच, दीप्त होत मानव–सत्य आ मानव–मूल्यन के आभा झिलमिला उठे त कहानी सोद्देश्य आ अरथवान बन जाले। 'जिनिगी के जुआ' नाँव का संकलन में अट्ठाइस गो छोट–बड़ कहानी बाड़ी सऽ। ई पढ़वइया पर निर्भर बा कि ऊ कहानी–पाठ में, कहानी के संप्रेष्य के कवना रूप में ग्रहण करत बा, आ ईहो कि कहानी पढ़वइया के अपना से कतना जोड़त बान्हत बाड़ी सऽ? ओइसे कहानीकार त अपना समय आ समाजे क जथारथ रचे क कोसिस कइले बा। बलुक, कई जगह कहानी के नया एंगिल से रचे–बिने के ओकर उतजोग साफे लउकत बा।

समय, समाज आ व्यवस्था के रूप–विरूप, नीमन–बाउर, असंगति, अनेति, सबके ऊ अपना ढंग से उजागर करे क कोसिस करत लउकऽता। ईहे ना ऊ भ्रम आ जड़ता के तूरे के उतजोग करत बा। दोहरा चरित्र आ मुखौटा वाला लोगन के असली चेहरा, ए उजियार में अपना–आपे पाठक का सामने आ जाता। 'लेन–देन', 'करनी–कथनी' जइसन कहानी में इहे बा। अउरियो कहानी बाड़ी सन जवना में, समाज के असल चेहरा देखावे क जतन कइल गइल बा, व्यवस्था आ प्रशासन के कलई खोलल गइल बा जइसे 'अपराध कंट्रोलर', 'साक्षर जिला', 'पावर हाउस' आदि। अइसहीं नारी–विमर्श आ ओकरा स्वतंत्रता के लेके लिखात कहानियन का दौर में, कन्हैया पाण्डेय के कथाकार ओकर दुसरो पहलू सोझा राखत बा। मानवीय सहानुभूति आ 'दया' के लाभ उठाके छल कइल। 'साँप' आ 'गरीब पर दया' अइसने कहानी बाड़ी स, जवना में मानवीय संवेदना के लाभ उठा के, धूर्त्तता से, सहानुभूति देखावे वाला के फँसावल जाता। एही तरे मानवी कृतघ्नता आ अहसानफरामोशी के 'बकरी' कहानी डिठारे देखावऽ तिया।

मानवीय त्याग आ नेह–नाता के निभावल आजकाल कम देखे के मिलत बा, बाकि कथाकार जीवन क खाली नकारात्मके पक्ष ना देखावे, बलुक ऊ ओह सकारात्मक

पक्षो के देखावल–चाहेला, जहाँ मानवी–सम्बन्धन के गरिमा चमक उठे। 'दुलहिन' कहानी के विधवा बहू 'सरस्वती' का चरित्र में, ईहे गरिमा दीप्त हो उठल बा। तिलक–दहेज जइसन समाजिक समस्यो पर कथाकार कुछ कहानी रचले बा, बाकि नया ऐंगिल से, कुछ नाटकीय परोसे के कोसिस 'गेट आउट' कहानी में देखे के मिलत बा, जवना में लड़की पसन करे गइल 'वर' आ वर का बाप के लइकिये 'रिफ्यूज' करत, 'गेट–आउट' कऽ देतिया। पत्रकारिता, साहित्य, शिक्षा आ सरकारी महकमा में आइल गिरावट, लीपा–पोती, तिकड़मबाजी आ कागजी कोरम के पोल खोलत कन्हैया जी कई गो कहानी अपना ढंग से रचले–बिनले बाड़न, ई उनका लेखकीय बेंवत आ प्रतिबद्धता के प्रगट करत बा।

कुल मिलाइ के छोट–बड़ कहानियन के ई संकलन कथाकार का रचनात्मकता के सुघर गुलदस्ता बा। एमें मनुष्य के व्यौहारिक–परपंच, स्वार्थी वृत्ति आ कृतघ्नता के चेहरा देखे के मिलत बा, त, कहीं विद्रूप आ अन्तर्विरोध के व्यंग्यात्मक पहलू। कहीं समय, समाज आ मानवी मूल्यन क अवमूल्यन बा त कहीं मानवीय सम्बन्धन के गरिमामय रूप। कहानीकार जवन करत बा, निष्ठा आ ईमानदारी से अन्हार आ जड़ता के तूरे खातिर करत बा, मनुष्य आ समाज के चेतना जगावे खातिर करत बा। रउरो पढ़ीं आ कथाकार के रचना–संसार के प्रत्यक्षीकरण करीं। विश्वास बा कि रउरा भीतर कुछ न कुछ सवाल जरूर उठी, भीतर कुछ न कुछ उथल–पुथल जरूर होखी, बाकिर शर्त्त अतने बा कि रउवाँ एह कहानियन के आलोचक लेखा ना, पाठक लेखा पढ़ीं।

किताब–चर्चा

पौराणिक पृष्ठभूमि का कथानक में मानवीय संवेदना के नव रचनात्मक उपन्यासः 'बनचरी'

बरमेश्वर सिंह

अपना स्तरीय गद्य–पद्य रचनन से भोजपुरी–साहित्य के भंडार भरे वाला आ 'पाती' जइसन दिशा–बोध वाली पत्रिका के यशस्वी संपादक डॉ0 अशोक द्विवेदी के ताजा उपन्यास बा– 'बनचरी'। एह उपन्यास के समय–संदर्भ, कथा–प्रसंग पौराणिक बा। 'महाभारत' जइसन कालजयी गंथ से लिहल गइल एह कथा–प्रसंग के केन्द्र में, तत्कालीन बन–पर्वत का बीच वास करे वाली एगो जनजातीय समूह से आइल एगो विशिष्ठ नारी–चरित्र 'हिडिम्बा' बिया। अपना उपन्यास में उपन्यासकार हिडिम्बे के 'बनचरी' नाम से चित्रित कइले बाड़े। बनचरी ओह दुर्गम बन–प्रान्तर के असुर–राजा हिडिम्ब के छोट सहोदर बहिन बिया। हिडिम्ब स्वभाव से आलसी, क्रूर, क्रोधी, अहंकारी, मायावी शक्ति–सम्पन्न, मानुष–भक्षी, आ भयावह बा। उ हिडिम्बा के प्रति कठोर आ निर्दयी बा। हिडिम्बा बचपने के टुअरी बिया। कुन्दकी काकी के ममता के अंचरा के छाँह शिक्षा ओकरा आचार्य चाण्डक से मिल बा। मंत्री उतुंग खातिर भी उ पुत्रीतुल्य बिया। भाई के असल प्रेम ओकरा कुन्दकी काकी के बेटा कुन्दु से मिलल बा। कुन्दु ओकरा पाछा बरमहल छाया लेखा खाड रहे वाला बा। ओकर बाल–सखी निरमा ओकरा लेखे दू देहि एक जान बियां।

हिडिम्बा अपना कुल के मायावी विद्या, शारीरिक–शक्ति, आ चुस्ती–फुर्ती का कारण मानुष जाति से इतर बलशाली आ असाधारण बिया। बाकिर, उ नार–सुलभ रूप–लावण्य के धनी भी बिया आ ओकरा हृदय में प्रेम, दया आ करूणा के त्रिवेणी के एगो मद्धिम सोत संचित बा।

कथा–प्रसंग 'महाभारत' के ओह काल–खण्ड से शुरू होखत बा, जब पॉचों पाण्डव माता कुन्ती का संगं 'अज्ञात वास' के राह पर बाड़े। दुर्गम–निर्जन वन–प्रान्त के कठिन राह पार करत रात्री–विश्राम के ख्याल से उ लोग जहवाँ डेरा डालत बा, उ जगह असुर–राजा हिडिम्ब के क्षयाधिकार में बा। उनुका लोग के अपना क्षेत्र में उपस्थिति के सूचना हिडिम्ब के अपना भेदियन से मिल जात बा। हिडिम्ब ई सूचना पा के बड़ा खुश होखत बा आ उ पाण्डवन के बध क के मानुष–माँस के महाभाज करे के तइयारी में लागि जात बा। एही क्रम में 35 पाण्डवन के गतिविधियन पर नजर राखे खातिर हिडिम्बा के भेजत बा।

भयावह जंगल। अन्हरिया रात। हिडिम्बा एगो पेड़ पर चढ़ि के अन्हार में पाण्डवन पर आपन नजर गड़वले बिया ओह लोगिन के खाएक बनावल, मिल–बइठि के खाइल, एक–दोसरा के प्रति स्नेह–श्रद्धा भाव आ सात्विक आचार–विचार के देखि के हिडिम्बा अन्तर्द्वन्द्व में फॅसि जात बिया। खइला आ पियला के बाद चार भाई माता कुन्ती सूति जात बाड़े। चौकन्ना भीम पहरा पर बाडें। उनुकर गठल देह–धुजा, पौरूष आ चाकर छाती वाला रूपवान व्यक्तित्व पर हिडिम्बा

आपन नजर गडवले बिया। पता ना, भीम के सुगठित देहि के सुघरई में अइसन का आकर्षण रहे कि हिडिम्बा एकतरफा मोहित हो के आपन दिल मनेमन भीम के दे देत बिया। अपना हृदय में आइल एह बदलाव से वशीभूत होके हिडिम्बा भीम का सनमुख आ जात बिया। फिर उ अपना क्रूर भाई हिडिम्बके पांडवन का प्रति शत्रुभाव आ षड्यंत्र के खुलाशा करत बिया। ओही समय मायावी हिडिम्ब उहवॉ प्रकट हो के भी से युद्ध करे लागत बा। एह भयंकर मल्लयुद्ध में अन्ततः हिडिम्ब मारल जात बा।

आगे के घटना–क्रम में पाण्डव–समूह हिडिम्बा का संगे ओकरा बस्ती में जात बाड़े। उहवॉ ओह लोगिन के परिचय बनवासी–समाज के आचार्य चाण्डक, मंत्री उतुंग, सेना नायक दांडी, उपसेना नायक पुंडरक का संगे ओह समाज के अन्य विशिष्ठ स्त्री–पुरूष सदस्यन आ ओह समाज के रक्षक दल के सदस्यन से होखत बा। पाण्डव–समूह ओह बनवासी–समाज के रीति–रिवाज, संस्कार–संस्कृति, आपसी सदभाव–सहकार आ अतिथि–सेवा–भाव के देखि के प्रभावित होखत बाड़े। माता कुन्ती कुछ आरम्भिक झिझक का बाद भीम हिडिम्बा के बिआह के सशर्त अनुमति देत बाड़ी। आर्य भीम आ अनार्य हिडिम्बा के बिआह बनवासी मन के रीति–रिवाज के अनुसार धूम–धामसे होखत बा। बनवासी, भीम के आपन राजा स्वीकार करत बाड़े। फिर हिडिम्बा के सहायता से पाण्डव–समूह शालि ऋषि के आश्रम में जात बाड़े। माता कुन्ती के आज्ञा से भी आ हिडिम्बा कुछ दिन खातिन एकान्त वास आ बन–बिहार खातिर जात बाड़ें। फिर भी ओह बनवासी समाज के गदायुद्ध, मल्लयुद्ध, रण–कौशल का संगे खेती–बाड़ी में प्रशिक्षित करत बाड़े। समय पा के घटोत्कच के जनम होखत बा।

घटोत्कच के जनम का भइल हिडिम्बापर आफत आ गइल। पूर्वशर्त का अनुसार पाण्डव–समूह, हिडिम्बा के बिना कुछ बतवले, गुपचुप रूप से अज्ञात वास खातिर, अज्ञात राह पर निकलि गइल। हिडिम्बा के मनोदशा जल बिनु मछरी लेखा। ओने भीमों के मन में कर्तव्य से विमुख भइला के द्वन्द्व। संयोग के बाद, वियोग के एह भ्सवंर जाल में फॅसल दू प्रेमियन के मनोदशा के सजीव आ मर्म स्पर्शी चित्रण। ओने अज्ञात सास के राह पर महर्षि बेदव्यास से पाण्डव–समूह के भेंट। उनुकाबतवला काअनुसार पाण्डव–समूह के एचक्रानगरी का ओर प्रस्थान।एकचक्रानगरी खातिर संकट आ अभिशाप बनल बकासुर के भी द्वारा बध। अर्जुन के धनुष–संधान के बाद एक चक्रानगरी के राजा द्रुपद के पुत्री द्रौपदी से माता कुन्ती के आदेशानुसार पॉचो पाण्डवन के विआह। एने आचार्य चाण्डक, मंत्री उतुंग आ सेना नायक दांडी के सहयोग से हिडिम्बा अपना पुत्र घटोत्कच के वीरोचित शिक्षा–संस्कार देवे में निमग्न। निम्बा, निशंक आ बेनू जइसन सहायक पात्रन के चारियिक विकास।

पूर्वाध में मधुरी चाल से चले वाला ई कथानक उत्तरार्ध में हॉहें–फॉके दउड़े लागत बा। इहवॉ से कथानक के दू धार हो जात बा। एक ओर भीम के गइला के बाद हिडिम्बा अपना राज्य के व्यवस्था अपना हाथ में ले लेत बिया। ओकर गुप्तचर एकचक्रानगरी के सूचना, ओकरा के बराबर देत रहत बाडें। बूढ़ आचार्य चाण्डक विशेष साधना के निमित उहवॉ से कहीं दूर गुप्त स्थान पर सदा खातिर चलि जात बाडें। युवराज के रूप में घटोत्कच के अभिषेक होखत बा। दोसरा ओर वासुदेव कृष्ण के सहयोग से उनुकर छोट बहिन सुभद्रा के अर्जुनसे बिआह। पाण्डव द्वारा इन्द्रप्रस्थ नाम के राज के स्थापना। वासुदेव कृष्ण का संगे भीम आ अर्जुन के मगध–राज्य का ओर प्रस्थान। एकरा बाद महाभारत–युद्ध के शाखा–प्रशाखा, दॉव–पेंच, परिदृश्य आ परिणाम। ई सब सूचना का जरिये हिडिमा के मुख्य–कथा से जुड़त बा।

महाभारत के युद्ध में घटोत्कच वीरगति के प्राप्त करत बा। हिडिम्बा के ममता कॉपि जात बा। बाकिर, अपना प्रजा के मुॅह ताकि के उ अपना के सम्हारत बिया। अंगुठ, मुंडक आ किंचुक जइसन पात्रन के उपयोगिता सामने आवत बा। हिडिम्बा किंचुक के युवराज पद पर नियुक्त करत बिया। एकरा बाद उ बीतरागी लेखा हो जात बिया आ सब कुछ छोड़ि के अपना शेष जिनिगी के अज्ञात सफर पर चलि जात बिया।

'बनचरी' के कथा–फलक विस्तृत बा। ई लमहर काल–खण्ड के कथा बा। एह में पात्रन के भरमार बा। एह कथानक के घटनन में त्वरित बदलाव होखत बा।एह में करूण, श्रृंगार, बीर, रौद्र आ विभस्त जइसन रसन के गुंथन बा। एह में आर्य–अनार्य जइसन दू विपरीत संस्कृतियन के एक–दोसरा में व्यूहन बा। एह जटिल कथा–प्रसंग के एक सूत्र में संतुलित आ प्रभावशाली ढंग से बान्हे में उपन्यासकार डॉ0 अशोक द्विवेदी सफल बाड़े। एह उपन्यास के कथानक में अइसन प्रवाह बा, जवना का सहारे पाठक के मन–मिजाज आ नजर सहजे प्रवाहित होखत रहत बा। एह कथा–प्रसंग का बीच पाठक कतहीं ऊबत नइखे, बलुक उ आगे बढ़े खातिर अगुताइल रहत बा। ई उपन्यास के रचाव–बन्हाव आ कथा–प्रवाह के कमाल बा।

उपन्यास के कुल्हि पात्रन के चारित्रिक–किकास,

पात्रानुकूल, स्वाभाविक आ न्यायोचित भइल बा। एह उपन्यास के केन्द्रीय पात्र हिडिम्बा के चरित्र प्रेम, दया, करूणा, वात्सल्य, त्याग आ तप के प्रतीक बनि के उभरल बा। जवना का चलते ओकर चरित्र उदात्त हो गइल बा।

बाकिर, कथा–प्रसंग का बीच से घटोत्कच के बिआह–प्रसंग, बर्बरिक के जनम आ अश्वत्थामा द्वारा उत्तरा के गर्भ पर अमोघ अस्त्र के संधान जइसन महत्वपूर्ण प्रसंगन के गायब रहला का चलते एकर पौराणिकता बाधित होखत बा। उपन्यासो के सीमा बा। 'बनचरी' हिडिम्ब पर केन्द्रित उपन्यास बा, संपूर्ण महाभारत पर ना। एह उपन्यास के भाषा एकरूप नइखे। एकर पूर्वाद्ध आ उत्तरार्द्ध के भाषा में फर्क बा। एह में एके बर्तनी के भिन्न–भिन्न रूप टंकित मिलत बा। श, ष, य, क्ष, ज्ञ, त्र, ण, ड़, जइसन वर्ण के प्रयोग में एकरूपता नइखे। एह कथानक का बीच जहाँ माँसल सौदर्य के चित्रण बा, उहवाँ तत्कालीन संस्कृति पर आधुनिक संस्कृति हावी हो गइल बा। बाकिर, एह कमियन का बादो ई उपन्यास सामज, सत्ता आ संस्कृति के परत में दबल साँच के बहुत तीक्ष्णता का सँगे प्रकट करत बा। एकरा में गुजर चुकल समय आ आज के समय एक–दोसरा से रस्सी के सूता लेखा लिपटाइल दिखाई देत बा। दोसर शब्दन में एह उपन्यास में वर्णित स्मृति, वर्तमान से अलग नइखे भइल, बलुक उ आज के वास्तविकता के पड़ताल करत बा।

इहे कारण बा कि उपन्यासकार जब एगो पारम्परिक पौराणिक कथा के एगो चरित्र के केन्द्र में रखि के पुनर्सृजन करत बाड़े, तब उ ओकरा के अपना समय के तर्क संगत आलोचना बना के पेश करत बाड़ें, जवना का चलते आज के संदर्भ में एह उपन्यास के प्रासंगिकता बढ़ि गइल बा। ई उपन्यास, भोजपुरी–उपन्यास–साहित्य में आपन गौरवशाली स्थान बनाई, एह में दू मत नइखे।

पुस्तक–बनचरी उपन्यास, उपन्यासकार – डॉ0 अशोक द्विवेदी, प्रकाशक–बिग–सी–मीडिया पब्लिकेशन, एफ/1118, आधारतल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–110019, संस्करण–सन 2015 ई, पृष्ठ 308, दाम–220 रू अजिल्द, 300रू. सजिल्द

xk0&ik0&/kuMhgk] ftyk&Hkkstiqj] fcgkj&802160

किताब–चर्चा

जनपदीय जनजीवन के सहज कथा संकलनः ''गुलेल''

डा0 सान्त्वना द्विवेदी

(गुलेल) (कहानी संग्रह) विजय शंकर पान्डेय, पिलग्रिम्स पब्लिसिंग, दुर्गाकुंड, वाराणसी

संवेदनशीलता आ निरीक्षण शक्ति से संपन्न, कवि कथाकार विजयशंकर पांडेय भोजपुरी क्षेत्र का एगो विशिष्ट भाषा –बोली क अइसन लेखक हउवन,जिनकर रचनात्मक परिचय इनका पहिल कथा संग्रह ''गाँव क बात'' से मिल चुकल बा । ''पाती'' पत्रिको में उनकर कुछ कहानी पढ़े क मोका मिलल बा ।

मिर्जापुर–बनारस क्षेत्र का भाषा–टोन क एक अलगे मिजाज होला। ओही में लिखाइल कुल छब्बीस कहानियन क संकलन बा 'गुलेल'। सधल पाठक आ कथा शिल्प के आलोचकन के एह संकलन में रचाव –बिनाव, बान्हन आ कलात्मकता क कमी भले लउकी, बाकिर एह कहानियन में कथा रस जरूर मिली, एकर गारंटी बा। संकलित कहानी कथारस वाली बाड़ी सन। एमे क्षेत्रीय जीवन संस्कृतिक सहज, अनलंकृत चित्रण आ वर्णन बा बन–क्षेत्र आ पछुवाइल जंगल–पहाड़ एरिया के अशिक्षित, पिछड़ा आ आत्मसीमित समुदाय क जीवन–संघर्ष, दुख दरद, चिन्ता आ नियति क विडंबना बा। कहीं निशछल सरल प्रकृति क आचार बिचार अंधविश्वास बा त कहीं, एह बेचारगी क फायदा उठावत लोग बा।

आधुनिकता आ विकास से मरहूम बाकि ओकरा धमक से आइल बदलाव से उपजल विसंगतियन का बीच जिये निबाहे आ तालमेल बइठावे क संकोच आ कठिनाई अलगे होले ।कहानीकार अपना कहानियन में जहाँ तहाँ एह सब के यथाशक्ति उकेरे –भा कहे क जतन कइले बा ।कथा गढ़े आ निरबाह करे में नीक नीक कहवइयन आ लेखकन से भूल होइये जाले , तवन इहँवों बा ।वर्णन आ जानकारी क अतिरेक कथा का सुभाविक प्रवाह के रोकेला। संकलित कहानियन में ठावाँ ठईं ई लउक जाता ।अइसे पान्डेय जी भरसक ,नया ढंग से कुछ नया कहे क उतजोग कम नइखन कइले ।

'गुलेल' एह संकलन क अइसन कहानी बा ,जवन आदिवासी जनजीवन का दुस्तर आ कठिन स्थिति क चित्रण करत बा। जीवन संघर्ष में, एगो आदिवासी औरत का सामने एक ओर भविष्य सुघर सपना बा, दुसरी ओर वनजीवन क नंगा जथारथ। नियति अलगा बा। जिनिगी निबाहे क सहारा गुलेल बा, आ बा ओकर आपन बल

बेंवत आ साहस। तबो नियति ई कि जंगली भालू के हमला में ओकर कारुणिक अन्त हो जाता, ओकर पहिचान ओही गुलेल से होता, जवन ओकरा विदीर्ण देह से मिलत बा। ओही दिन, जहिया ऊ अपने लइका के फटल ओठ ठीक करावे बदे ,बनारस भेजे वाली रहे। लेखक थर्ड पार्टी का भूमिका में लोगन के बतावल वृत्तान्त पर कहानी कहे क कोसिस कइले बा 'बाईचानस' लोक कथा का गल्प पर रचल कहानी बा, एहू क आपन सवाद बा। पढ़वइया के इहाँ मनरंजन क मोका मिलत बा। 'झरोखा' अच्छा कहानी बा। एकर कथ्य आ संदेश प्रासंगिक बा। कथाकार के, ए कहानी का रचाव में तनी अउर समय देबे के चाहत रहे ।

'कनहर क देवता' क भूमि कनहर नदी –क्षेत्र बा, जवन रीवाँ जनपद से बीसेक किलोमीटर दक्खिन ओर श्बनकटिया ताल से निकलल बतावल जाला। ई नदी साँप मतिन टेढे मेढ़े घूमत मिरजापुर में सोन नदी में मिल जाले। सुनल सुनावल कथा–किंवदन्तियन के आधार पर कथा सिरजे में कथाकार एगो नया दम्पति के सहारा लेले बा, जवन ओह क्षेत्र में घूमे आइल बा। पति, इहाँ अपने पत्नी से बनक्षेत्र क इतिहास आ जीवन संस्कृति, ओह क्षेत्र में काम करे वाला एन.जी.ओ.लेखा बतावत बा। कनहर का देवता क जन प्रचलित कहानी बीच में आ जाता। वाचक पति आदिवासियन का गवला बजवला मे शामिल बा, बीच कहानी ऊ खुदे चइता सुनावत बा। दू जनजातियन क नायक नायिका 'गुंजा आ' खनकू', क प्रेमकथा एही में सुना दिहल जाता, जवन मान्यता अनुसार कनहर क मानल देवता रहल। अनबोलता प्रेम पर रचाइल कहानी 'एगो इहो प्रेम' एगो अलग ऐंगिल क कहानी बा, जवने में पोसल पशु क ऊ प्रेम चित्रित बा, जवने में पालित पड़वा, जनमल पूतो ले बढ के अपना भूमिका क निरबाह करत बा। ए कहानी में कथाकार के कलपनाशीलता तार्किक परिणति तक पहुँचत बा। विन्यास नाटकीय आ जिग्यासा बढ़ावे वाला बा ।

''एक जिनिगी अइसनो'' क कथ्य अलग किसिम क बा। एम्में समाजिक बदलाव से उपजल विसंगति के पति पत्नी का बीच का विडंबना से जोड़ के देखावल गइल बा, एम्मे जहाँ आत्मकेन्द्रित पत्नी क विद्रूप उभरत बा, एकरा ठीक बिपरीत दूसर कहानी 'अँधियारे क राज' में पति क विद्रूप उभरत बा। दाम्पत्य आ सेक्स क असंगत जमीनी रूप पाठक के विचलित करत बा। अइसही संग्रह का हर कहानी में अलग अलग कथा तत्व बा ।

कहानीकार वंचित, शोषित समाज का प्रति संवेदनशील बा आ पढ़ल बढ़ल समाज के रूप विरूप, का प्रति सजग। ऊ अपना कहानियन में, वर्तमान के अउर बेहतर देखे आ करे के आस का साथ जुटल लउकत बा। एह रचनात्मक कोसिस में ऊ बहुत कुछ अइसन कहे या बतावे लागत बा, जवन ऊ नाहिंयो कहित, त काम चल जाइत। कुल मिला के 'गुलेल' एगो कथा रस से भरल जीवंत संग्रह बा, जवन अपना पाठकन के निरास ना होखे देई। नया कथ्य, आ एहमें बहत कथा रस ओकर भरपूर मनरंजन करी।

Hkkjrh; LVsV cSad] flVh&cfy;k

गजल

फागुन के अगवानी

''शिवपूजन लाल विद्यार्थी

Qkxu <ky ctkor vkby
jx&vchj yVkor vkby !

n[k] vHkko&fpUrk ds pmjk
eLrh tkr tjkor vkby !

jk/kk ds eu&oUnkou es
cl h e/kj lukor vkby !

Åpk [kkyk ykr iMh vc
vblu tke fi;kor vkby !

eu es dN dN gk[k ykxy
gypy e/kj epkor vkby !

jkg pyr xkjh ds NMr &&
vkpj iou mMkor vkby !

fojgh euok ds ihjk ds
vkfx vmj /k/kdkor vkby !

tkr ikr vk Åp&uhp ds
dgjk nj gVkor vkby !!

}kjk&lj.Un oekZ] uhydBi;je] cjbZij]
dnok] okjk.klh&221006

किताब–चर्चा

छोट बाकिर मरम बेधक कहानी संग्रहः 'भंडार घर'

'भंडार घर' (कहानी संग्रह): डॉ0 जयकान्त सिंह 'जय' प्रकाशकः राजर्षि प्रकाशन, बिहार विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर–842001 (बिहार)

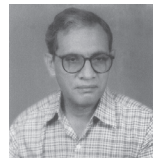

✍ **कृष्ण कुमार**

लगातार कई दशकन से सक्रिय रहे वाला आ समय के प्रवाह में अपना रचनन के निरंतरता बनावे वाला भोजपुरी में बहुते रचनाकार लोग बा। एही प्रगतिशील परम्परा के रचनाकार हई। डॉ0 जयकान्त सिंह 'जय'। जे छात्रे जीवन (अस्सी–नब्बे के दशक) से भोजपुरी पत्र–पत्रिकन में छपत रहल बानी। पहिला भोजपुरी काव्य–संग्रह 'देश–दुनिया' वर्ष 1991 में प्रकाशित भइल फेरू अलग अलग विषय पर छव गो किताब भोजपुरी भंडार घर के खजाना के शोभा बढ़वलस। उनकर कहानी संग्रह 'भंडार घर' हमरा सोझा बा, जवन आज के कवनो भोजपुरी कथाकार से होड़ ले सकऽता। कहानियन में समकालीन आ प्रासंगिक बनलो रहल पुरान रचनाकार खातिर बहुत बड़हन चुनौती होला। परम्परा के प्रवाह में कहानियन के सृजन, चयन आ आधुनिक भावबोध से सम्पन्न होखल विलक्षण बात हऽ। एह संग्रह में कुल नव गो कहानी आकार में छोट होखला के बावजूद अत्यंत मार्मिक आ बेधक बाड़ी सऽ। कथाकार मानवीय संवेदना, अनुभव आ अन्तर्द्वन्द्वन के बड़ी तटस्थता के साथे एह संग्रह में चित्रित कइले बा। जवन भाषा लोकरंग आ भोजपुरी के सरल व्यंजक कथनन से भरल–पूरल बा। विपन्नता, तंगहाली, गांव–जवार आ चउक–चट्टी के छव–पांच, स्त्री विमर्श के नया रूप आ आकार देत, लोक परम्परा के जीवन्तता, बतरस, कहानीपन के बचावत मानवीय अस्मिता आ आत्म सम्मान से लबरेज बहानी बाड़ी सऽ।

आधुनिक भावबोध आ जन सामान्य के जीवन के एह कहानियन में कई–कई पीढ़ियन के मेहरारू, बूढ़, बाल–बच्चा शामिल बाड़े। अपना समय के सामन्ती आ राजनीतिक पाखण्ड, ओझली, जोतिसिन के तिक्कड़म बजई के सोझा राखल गइल बा। सहज आ निश्छल प्रेम के साथे स्वार्थपूर्ण संबंधनो के बखिया उघारल बा। डॉ0 जयकान्त सिंह 'जय' अपना बदलल समय के कथाकार बानी आ उहांके कहानी अच्छा–बुरा समय के कहानी बाड़ी सऽ।

पहिला कहानी 'भंडार घर' बा, जेकर मुख्य पात्र शिवधारी काका बाड़े, जे भाई–भतीजा के सोझा आपन शिक्षक बेटा रजेसर के कुछुओ ना गुनलें–समझले। शिवधारी काका परिवार चलावे खातिर जीनिगी भऽ आपन जांगर खटवलें बाकिर जब उनकर देहि गिर गइल त पूरा परिवार धोती झारि के किनार धऽ लेलस। उनकर पुछवइया केहू ना...। इलाज के बात तीन कोस फरका, पानियो देनिहार ना रहल। अंत दाव में उनकर बेटा उनका राह के राहा बनि आपन भविष्य सुधार लेलें। एह पूरा कहानी में व्यक्तिगत महात्वाकांक्षा के पूरा करे खातिर व्यावहारिक स्वारथी बुद्धि के सामने राखल गइल बा। 'ओझली' कहानी ओह मेहरारू के दुर्भागय के कहानी बा, जे ससुरा आवते मुसमात हो जाली। कवनो बाल–बच्चा ना होखे से उनकर दिन पातर हो जाला। एह कहानी के पात्र लछिमी के समाज के तरफ से डाइन के उपाधि मिलल। केसउआ के पेट–बाथा के सर्जक लछिमी बनली। अपना बचाव खातिर लछिमी बहुते उतजोग बइली। बाकिर ई भइल कि विधना उनकर पत राखि देले। कथाकार नारी मन के अन्तर्द्वन्द्वन के समाज के त्रासदी के साथे मिला के वास्तविकता के विलक्षण चित्रण कइले बा। 'करम के फेर' कहानी में मेहरारून के प्रति इक्कीसवीं सदी के ना बदले वाली सोच बा, जहवाँ समय त बदलल, बाकिर सोच ना बदलल। 'नेतागिरी' कहानी के माध्यम से कथाकार ई देखावल चाहऽतानी कि एह लोकतंत्र में जे सही आ चरित्रवान प्रत्याशी होला ऊ चुनाव में वोटरन द्वारा ना चुनल जाला। वोट देबे वाला मतदाता ओही प्रत्याशी के वोट देला, जे चरित्र आ नैतिकता के मानदंड पर कबो खरा ना उतरे। अगर ऊ प्रत्याशी जीत गइल प दंगा करा के गजाधर लेखा सामाजिक कार्यकर्त्ता के हत्या करा देला। आत्मकथात्मक कहानी 'शहरी नगर–देहाती बागर' कथाकार के आपन भोगल यथार्थ बा। नसाखुरानी गिरोह के शिकार रेलयात्री के देखि के जहंवा सहरी बाबू अपना घरनी के साथे आगे बढ़ि जातारें ओइजे देहाती बागर काका आ कथाकार ओकर भरपूर मदद कइलें। ई कहानी अपना समय के जगावे, बदले आ समय से संघर्ष करे के भावबोध के साथे आगे बढ़ि गइल बा....।

'करम के फूर', 'जोतिसी के भाग', ईमानदारी के कानून', 'नहला प दहला' अइसन लघुकथा बाड़ी सऽ, जवन अपना समय आ समाज के वास्तविकता, चालाकी, छल आ समर्थ लोग के मनमानी के सामने रखऽ तारी सऽ। ई कहानी संग्रह कहानियन के फेरू से प्रतिष्ठित करे वाल स्त्री विमर्श के नया पड़ताल के संग्रह बा...।

'भंडार घर के आमुख आ दिवंगत राजा बेटा ईशु के फोटो पऽ आंखि लोरा के अचल हो जाता कबो ना भोराये वाला कथाकार के विनय–समर्पण काबिलेतारीफ बा....।

egkohj LFkku] djeu Vksyk] Hkkst i[j] vkjk

किताब–चर्चा

''बनचरी'' उपन्यास पढ़ला का बाद ...

डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

हम त सोचले रहीं कि किताब के उपरे झापर देखि पढ़ि के लिख दिहल जाई, बाकिर उपन्यास 'बनचरी' के कथा विन्यास आ कथारस अइसन बन्हलस कि किताब बिना पूरा पढ़ले मन ना मानल ।

'बनचरी' नाँव के चुनाव सर्वथा उचित बा। ए उपन्यास में महाभारत कथा के नारी पात्र हिडिमा के सहज प्रेमभाव आ सूझबूझ क चित्रण, भीम के प्रेमिका का रूप में बा। अइसन रचना का विन्यास में लेखक के बहुते भूले भटके के परल होई आ आम पाठक खातिर सुगम राह बनावे के परल होई । अशोक द्विवेदी विस्तृत कथा के झाड़ झंखाड़ साफ करत, आपन राह खोज लेले बाड़े।

बनचरी के जीवन यात्रा कम बीहड़ नइखे। दू गो अलग अलग संस्कृति के प्रेम का मानवी धरातल पर मिलाइ के, कृति के ताकत बढ़ावे में रचनाकार के कौशल आ कल्पनाशील बिनावट देखल जा सकेला। हिडिमा भीम जइसन शक्तिशाली व्यक्ति के प्रेम पाके धन्य हो जात बिया। हिडिमा अइसन चंचल, अल्हड़ युवती के प्रेम के देखि के पाठको, भीम का भाग्य से डाह करे लागत बा। जवन भीम अपना लंबी चौड़ी ,बलशाली काया आ भोजनप्रियता खातिर मशहूर बाड़े, उनको भीतर कहीं प्रेम क सुप्त रसधार बहत बा, एकर पता तब चलत बा, जब हिडिमा भीम के अपना प्रेमालिंगन में बान्हि लेत बिया। ओघरी जइसे सूखल, कठोर काठो, खिल के कोमल गुलाब बन जाता ।

'बनचरी' में कथा के मुख्य आधार भीम आ हिडिमा के प्रेम–संबन्धे बा। इहाँ व्यक्तिगत प्रेम उदात्त होके दू गो भिन्न संस्कृतियन के बान्हि देता। एहसे एकरा रोचकता में कहीं, कवनो कमी नइखे। हिडिमा खाली बनचरी बनि के रहि जाइत, अगर उपन्यासकार के कुशल, कलात्मक विन्यास आ तराश ना मिलित। हिडिमा बन में रहे, घूमे वाली एगो अल्हड़ युवती। सहज, सरल एने ओने घूमत –छिछियात भीम के प्रेम सान्निध्य से आपन क्रिया कलाप बदल देत बाड़ी । एही प्रसंग में प्रेम के आकर्षण आ शक्ति के पता चलत बा । ओह रचनात्मक उत्थानो के गति मिलत बा,जवन ओह बन प्रदेश में कठिन रहे । प्रेम आ उछाह मे सराबोर हिडिमा के पाठक रसगर भाव से देखत बाड़े। हिडिमा अपना अकथ प्रेम अनुभूति, करुणा आ दयालुता का साथ बन राज्य के उन्नति खातिर दिन –रात का प्रयास से स्थानीय लोगन में आदर क पात्र हो जात बाड़ी आ अपना सेवा, त्याग का कारण बनवासी लोगन में देवी का रूप में प्रसिद्ध हो जात बाड़ी ।

हिडिमा का जीवन में लोककल्याण क भाव कूट कूट के भरल बा। एही से, महाभारत के अलौकिक पात्र होके ऊ लौकिक श्रद्धा आ समर्पण के प्रतिमूर्ति बन जात बाड़ी आ काल के एतना बड़हन दूरी आ अन्तर अइलो पर हिमांचल प्रदेश का मनाली मन्दिर में पूजनीया के प्रतिष्ठा पा रहल बाड़ी। वन प्रान्तर के दू तीन कोस का क्षेत्र में बसल हिडिमा क परिवार आ, समाज के निवास बा। कोल भील जाति के जीवन धारा उहाँ उपलब्ध प्रकृति के वनसंपदा,जीव जन्तु आ फल फूले पर निर्भर बा। निश्छलता, अनुशासन आ समर्पण जनजीवन के विशेषता बा। प्रकारान्तर से अशोक द्वि वेदी ओह जीवन संस्कृति क तुलनो सभ्य समाज का जीवन संस्कृति से करत बाड़े ।

भीम का साथ हिडिमा का बियाह से,वन में सहयोग सौहार्द के राह प्रशस्त हो जात बा ।दोसरा ओर महाभारत के परिचित पात्र कुन्ती ,युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल सहदेव आदि के क्रिया व्यापार आ युद्ध कौशल के विकसित होखे क अवसर मिलत बा। ई कम बात नइखे कि भीम अइसन कठोर,शुष्क भोजनभट्ट व्यक्ति मे प्रेम, नेह, दया, सेवा आ वात्सल्य रस क धारा बहावे क श्रेय हिडिमा का पूरक चरित्र के जाता। एगो स्थल पर हिडिमा अपना सखी निरिमा से कहत बाड़ी–'हम कुछऊ करीं, बाकि महाराज नियर ना हो सकीं, बाकिर तब्बो मरते दम तक प्रयास जरूर करब कि एह राज के महराज वृकोदर के कमी ना अखरे।' पुत्र घटोत्कच के व्यक्तित्व आ बौद्धिक विकास का बहाने, वन प्रदेश में शिक्षा के प्रसार हो रहल बा। वन क्षेत्र का वर्णन में लेखक अपना बौद्धिक ग्यान, अनुभव आ कल्पनाशीलता के सुघर उपयोग कइले बा–''कुटीर का पाछा फइलल खेत में पसरल, सीति से नहाइल हरियरी देखे लागल। ललछौंही किरनिन के लाली, जौ का पतइन पर टँगाइल ओसबूनन में दिप् दिप बरत रहे।(पृ०145)

बनचरी का कथा के पठनीय बनावे में बनप्रदेश के नैसर्गिक प्राकृतिक सुषमा आ परिवेश रचना के महत्वपूर्ण भूमिका बा। कथावस्तु के सजावे में शिल्प के महत्वपूर्ण भूमिका होला। एमे लेखक कुशलता के परिचय देत बा । सृष्टि संचालन में नारी के कम योगदान नइखे। सुख दुख, कठिनाई झेले में ऊ कवनो रूप मे पीछे नइखी, एकर सबूत स्वयं हिडिमा बाड़ी। मंत्री उत्तुंग से ऊ कहत बाड़ी –'आगा चाहे जवन होखे काका बाकि हमके अपना महाराज पर अभिमान बा। ऊ अधर्म आ अन्याय का विरुद्ध पहिलहूँ लड़त भिड़त रहले, बाकिर एगो स्त्री का अपमान आ स्वाभिमान खातिर ऊ आगा बढ़ि के सबसे पहिले ताल ठोकले। ई हमरा खातिर गरब करे वाली बात बा।' (पृ०170)

महाभारत में हिडिमा का अन्तःप्रदेश ––भावुकता ,संवेदनशीलता आ निश्छलता के अइसन चित्रण नइखे भइल, इहाँ उपन्यासकार का सूक्ष्म दृष्टि का कारन भइल बा उनका कलम से ई बन चरी अमर बन गइल बाड़ी। हिडिमा

का व्यक्तित्व के अनेक पक्ष उद्घाटित हो गइल बा ——यौवन में मातल अल्हड़ वनचरी, निश्छल प्रेमिका, समर्पित पत्नी, ममतामयी आ सुन्दर जीवन के आकांक्षी, सामाजिक जीवन का समरसता के प्रतीक हिडिमा अपना कर्मठता आ प्रयास से वन–जीवन के काया पलटत लउकत बाड़ी ।

डा० अशोक द्विवेदी मूलतःएगो सहृदय कवि हउवन । हिडिमा के व्यक्तित्व उरेहे का सँगे सँग उनकर कलम गद्य का ओर बढ़ल बा। पात्रन के जीवन के छोट–छोट भाव आ घटना उनसे नइखे छूटल। भावानुरूप सार्थक संवाद बा। हिडिमा का कारन संगठित होत शक्तिशाली समुदाय के समर्थन होता आवश्यकतानुसार कथा विन्यास में आचार्य चांडक, मंत्री उत्तुंग,सेनानायक दांडी आ पुंडरक आदि के उल्लेख आइल बा। भोजपुरी उपन्यास होते हुए, लेखक हिन्दी का तत्सम शब्द प्रयोग करे में कवनो संकोच नइखन कइले। भाषा प्रसंगानुकूल बा। लेखक का शिल्प से तरासल, भीम के काठ –व्यक्तित्व हिडिमा प्रेम से कोमल बन गइल बा। 'बनचरी' भोजपुरी उपन्यास श्रृंखला में अपना विशिष्ट विषय आ शिल्प का कारन मूल्यवान रचना कहल जाई।

,&1@601] cojyhikd] 1DVj 22@2] }kjdk] ubZ fnYyh

किताब–चर्चा

लालित्य भरल 'घमावन'

विजयशंकर पाण्डेय

^?kekou(¼fucU/k laxzg½% vk'kkjkuh yky vrqY; ifCyds'ku 7@25 egkohj xyh valkjh jksM] nfj;kxat] ubZ fnYyh&110002

डॉ0 आशा रानी लाल के ललित निबंध संग्रह 'घमावन' में कुल 17 निबंध बाड़न सऽ। क्रम से – 'घमावन', 'जवान बुढ़ापा, सोच–सोच में फरक होला, देवभूमि, राज बनल खोंता, एगो ईया रहीं, हमके हीन मत समझीं, भिच्छा, बतकुच्चन, भोजपुरी कऽ बढ़न्ती, दोगला क जवानी, बेटी निर्दोस ना होली, जान–परान, ओइसन ईया त लउकते नइखीं, कचरा, ई कुल होते जात रहेला, नाँवे में चिन्हासी लुकाइल रहेला।

घमावन में आशा रानी लाल गाँव क पुरान मरजादा आ जीवन संस्कृति, क बखान बहुत अनोखे ढंग से कइले बाड़ी। गाँव में टोल–मुहल्ला क औरत लोग कइसे एक जगह बइठ के जाड़ा के दिन में घर गृहस्थी क काम करत रहेलिन आ आपस में बातो–बातो करत रहेलिन। परोक्ष रूप से ए निबंध संग्रह 'घमावन; में अब क लइकन लोगन के शिक्षा दिहल गयल बा कि मरजादा से कइसे रहे के चाही। कइसे गाँव में सामूहिक परिवार रहत–रहल। ओघरी जे बूढ़ पुरनिया रहल ओही क शासन हुकुम चलत रहे। ओकर पूरे परिवार में प्रतिष्ठा रहे। ऊ पढ़ल–लिखल ना रहे, तबो ओनके आदर में कवनो कमी न रहे। गाँव क बूढ़ पुरनिया अब के लइकन क व्यवहार देख के बड़ा अचरज करत बाड़िन। बिद्वान लेखिका बहुत सहज आ लालित्य के साथ बात–चीत के माध्यम से बहुत बड़ी बात कह गइल बाड़ी। जवने के बहुत सरसरी निगाह से देखल जाई त ई न पता चली कि लेखिका क भाव का हौ?

'कचरा' के छोड़ के, जियादातर निबंध बात–चीत के माध्यम से कहल गइल बा। चाहे अन्य पुरुष द्वारा बयान कइल गइल बा। गूढ़ बात के बहुत सरलता से कह दिहल उनकर खूबी बा। ज्ञान बर्धन के गुरुता से बिद्वान लेखिका परहेज कइले बाड़िन। कवनो बात सीधे न कहके, कवनो ईया क उदाहरण लेके कहले बाड़िन। औरतन के बात चीत के झरोखे से जवन बात कहल चाहत बाड़ी ऊ भाव झाँकत बा। ई लेखिका के सोच आ कलम का कमाल बा।

ई सब निबंधन के जेतने ध्यान से पढ़ल जाई ओतने आनन्द आई। जिनिगी के ऊँच दर्शन के बड़ा सरलता से कहल गइल बा। कहीं–कहीं लेखिका बहुत विनोद पूर्ण वाक्य लिखले बाड़ी जवन उनका पैनी दृष्टि क परिचायक हौ। आप आपन हँसी रोक न पइहन जब पढ़िहन कि 'कोई कुतिया पर एकै कुकुर कातिक के महीना में आपन अधिकार जमा लेला'। कुतिया के प्रतीक में रख के कुछ आउर बात कहल चाहत बाड़ी। कहीं न कहीं कुतिया के ई तकलीफ मरम के बेधत जरूर हौ।

नारी मन के द्वन्द्व आ पीड़ा अइसे मनोहर तरीके से कहल गइल बा कि सम्बेदनशील अदिमी के आँख में लोर जरूर आ जाई। ए सन्दर्भ में हमार इशारा निबंध संख्या 12 'बेटी निर्दोष ना होली' पर बा। बिचार कइल जाय कि ओह निर्दोष लइकी पर का बीतत होई, जब ओकर भाई आ ओकर बापू ओकरे चरित्र पर सन्देह करत होइहें। एकर पीड़ा लेखिका के शब्दन से परलिक्षित होत हौ। "हमरा बुझाता कि एगो बेटी अपना कपारे पर कलंक क मोटरी

लिहले जनमेले आ जिन्दगी भर ओके ढोवत..... रहेले। 'जवान–बुढ़ापा' में बूढ़ पुरनियन पर बहुत अच्छा प्रहसन बा। कि "ईया गरियइबो करेलिन आ कहेलिन कि" हम कहाँ गरियावत बानी रे मलछिनियाँ! ई बड़ा छहंतरी बाटे! कवनो शिल्पकार के तरह कुशल आशा रानी लाल, शब्दन, वाक्यन के गढ़ि–गढ़ि के रखले बाड़िन जब ले पाठक ओके खुद न पढ़ी, हमार समीक्षा पढ़िके ऊ न जाने पाई, जवन पुस्तक में बा। बहुत कुछ स्थानाभाव के कारण हम कह नाहीं पावत हईं।

'भिच्छा' में फिदनी नाम के महिला के गरीबी क चरचा भइल हौ। लेखिका ए निबंध के माध्यम से कहल चाहत हई कि अनपढ़ औरतो केतना चालाक होलिन! ग्रीबी केतना बुरी चीज होले कि मनुष्य पइसा खातिर अपने बाल बच्चन तक के बेच देला "फिदनी" अपने सात–आठ साल के बच्ची के "अपना गरीबी के तरजूई पर, अपने नासमझ बेटी के तउल दिहलस।"

आशारानी जी बहुत सहजता से अपना बत कुच्चन में बड़ी से बड़ी बात कह दिहले बाड़ी। संग्रह में अइसन भोजपुरी शब्दन क प्रयोग भइल बा कि हमके लेखिका के ऋणी होखे के चाहीं। ई ठेठ मौलिक शब्द बाड़ें सऽ, जवन लुप्त हो रहल बाड़े। घरकच, बतबला, पतुकी, उद्खल्लर, टिटिमा, बिलल्ला, धगरिन, सिरजल, गबरघिचोर, छहंतरी, जइसन बहुत ठेठ शब्द बाड़न। लेखिका जगह–जगह बुद्धिमता से मुहावरो कऽ प्रयोग कइले बाड़िन। "कहवाँ राजा भोज कहवाँ गँगुवा तेली, 'आन्हर कुकुर बतासे भोंके, अछरंग क पेवन,' इत्यादि।

आशारानी लाल भोजपुरी भाषा के अपना परान के तरह रखले बाड़ी। 'अब त अइसन ईया लउकते नइखीं जइसे बापू माने–महात्मा गाँधी, गुरूदेव में रबीन्द्रनाथ टैगोर, ओइसे नारी–भोजपुरी साहित्य माने– डॉ0 आशारानी लाल। ई केहू के कृपा चाहे, भिच्छा कऽ मोहताज नाहीं हई। अपनी प्रतिभा के बल पर राज करत हइन। नामै में चिन्हासी होला।

हमार त हालत ओही बच्चा के तरह हो गइल बा, जवन अपने मतारी क दूध पियत रहेला, छाती में दूध नाहीं रहत तबो पकड़ले रहेला। मन में जवन भाव बा ऊ कुल कहा नइखे पावत पुस्तक में कहीं–कहीं प्रेस के त्रुटि देखे के मिलल। लिखे क स्वच्छन्दता नाहीं बा, गूंगा के तरह मीठे फल के रस के विषय में वर्णन नाहीं कर सकत हईं। जइसे केहू कहले हौ कि "मै बलि–बलि जाऊँ रे तोरे रंगरेजवा" ओइसहीं हमरो हाल बा। जवान बुढ़ापा के तरह आशारानी बनल रहसु। जेके घमावन लेबे के बा, ऊ घमावन लेई, नसीब में देवभूमि कऽ दर्शन करे के बा, ऊ दरसन करी, जीवन अइसन जीहीं कि लोग ईहै कहैं कि एगो ईया रहलिन, डॉ0 आशारानी लाल।

xqtu dfV;k] ukjk;.kh fogkj dkyksuh] fpÙkbZiqj] lqUnj okjk.klh&221005

भाव–भगति के भजन

फतेह चन्द बेचैन

^Hkxoku ds Hktu*&¼fujxqu lxqu Hktu lxzg½ Hkxoku flag HkkLdj&
çdk'kd&vf[ky Hkkjrh; Hkk"kk lkfgR; lEesyu] fcgkjA

भास्कर जी भोजपुरी के जानल पहिचानल लेखक हईं। लोक धर्म आ लोक साहित्य का वाचिक सम्पदा के अनुसंधान आ संरक्षण पर भगवान सिंह भास्कर के श्रमसाध्य रचनात्मक काम खातिर भगवान सिंह जी के भोजपुरी समाज में सराहना मिलल बा ।एही क्रम में ,लोक भाव–भूमि पर रचल उनका भजन के ई संग्रह 'भगवान के भजन' हमरा सामने बा ।

भारतीय साहित्य का सन्त काव्य परंपरा के अनुश्रवन करत प्रेम –भक्ति के निर्गुन आ सगुन चिन्तन धारा के प्रभाव लोक जीवन पर एतना गहिर पड़ल कि समय का लाख बदलाव का बादो ओके लोक हृदय से मेटावल ना जा सकल । जीवन संघर्ष में आकुल व्याकुल जन निराश जन के सहारा आ बल भगवती आ भगवाने का नाँव सुमिरन आ भजन में मिलल ।

नाम सुमिरन क सर्वसुलभ तरीका का रूप में भजन, लोक कंठ क हार बनल । एही के धेयान राखत भास्कर क ई भजन संकलन बाटे ।

सरस्वती माई का कृपा प्रसाद आ अनुकंपा से ग्यानी, महाग्यानी बनल बाल्मीकि ,कालिदास, सूरदास, तुलसीदास, कबीर, मीरा,रसखान ,नरसी मेहता आदि सैकड़न सन्तन आ भक्त कवियन के नाँव सुमिरन त एह किताब मे बटले बा, संसार के नश्वरता आ मोह जंजाल से मुक्ति क राह तलासत भजनो बा ।निराकार आ साकार दूनो रूप में लोकपूजित समस्त देबी देवता (शिव शंकर ,दुर्गा ,लक्ष्मी ,सरस्वती ,राम, कृष्ण ,हनुमान आदि) के भजन बा ।

भक्ति भाव में सनल ई भजन संकलन थाकल –हारल ,निराश आ दुखी मन के गावे –गुनगुनाए आ शान्ति पावे क माध्यम बनी ,अइसन उमेद बा । आपो सब भास्कर जी ई भजन पढ़ीं आ आनन्द लीं । ••

फागुन के रंग

✍ श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल

(एक) **फगुवा**

बगराइल बसंत आयो द्वारे, सबहि के पुकारे।
खोलहु द्वार, खोलहु बर कामिनी।
अँगड़ाइ लेइ ऊठति धरती, नव जीवन, नव रस धारे।।
सबहि के पुकारे।
जे हतभाग्य से सूतल रहिहें, आँखि मूनि अन्हियारे।
तन्द्रा तेजि, उठहु, चलि आवहु, संग पुरवहु राग हमारे।।
सबहि के पुकारे।
ऋतु मधुमास आगमन जानि के, पुलक उठे तरु सारे।
आवहु पाहुन मोरे ढिग बइठहु, हम ठाढे बाँह पसारे।।
सबहि के पुकारे।
मलयानिल कर परस पाइ कुसुमावलि खिले भिनुसारे।
झरि पंखुरि मकरंद बिखरि गइलें, हरषित प्रेम पियारे।।
सबहि के पुकारे।
चुभुकि–चुभुकि रस पिये भँवरा कलियन के पट टारे।
पुनि–पुनि जात पुनि चलि आवत, वाको होइ गये ओठ ठवारे।।
सबहि के पुकारे।
रूप–गंध–रस मेला लागल राग–रंग फौवारे।
खेलहु, बेलसहु सबहिं भुवन भरि, मेटसु दुख दर्द सारे।।
सबहि के पुकारे।

(दू) **उलारा**

अजब कइले जाये हो, गजब कइले जाये,
फागुन मस्त बयरिया।

भौंह नचाइ सैन करि भागत,
मटकी मरले जाये, सुटुकी मरले जाये।।
फागुन मस्त बयरिया।।

इत आवत, उत घात लगावत,
छिऊँकि कटले जाये, ओषध सटले जाये।।
फागुन मस्त बयरिया।।

करे बरजोरी, कहल नहीं मानत,
अँगिया छुअले जाये, बहियाँ धइले जाये।।
फागुन मस्त बयरिया।।

पंचक बान चढ़ाइ के मारत,
जियरा हतले जाये, हियरा मत ले जाये।।
फागुन मस्त बयरिया।।

■ 18@552] i;nf{k.kk] mek uxj nf{k.kh]
lhlh jkM] nofj;k&274001

अगिला अंकः
'हमार गाँव' पर विशेषांक
अपना गाँव आ ओकरा अस्मिता पर वैचारिक निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण आ ललित निबंध के साथ गाँव पर केन्द्रित कविता 1 जून 16 तक स्पीड पोस्ट/मेल से टाइप करके भेजीं।
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

होरी रे रसिया.....!

[रूप-रंग-राग-रस-गंध के प्रतीति करावे वाला बसन्त के उत्सव, फागुन में 'होली' के उत्सव बन जाला। बदलत समय-सन्दर्भ में; परम्परा टूट रहल बा आ उत्सव के ऊ रस-सिक्त करे वाला राग-रंग औपचारिक हो गइल बा। तब्बो फगुवा में फगुवाइल मन 'फाग' 'डफ' आ 'होरी' सुने खातिर ललचेला। होरी के गीत प्रायः झूमर का धुन आ दादरा का ठेकापर गवाला। कहीं कहीं धीपचन्दी दादरा का ठेका से शुरू होके कँहरवा हो जाला। फाग के छोट-छोट श्रृंगारिका पदन के पहिले धीमे-धीमे, फेर मध्यम आ द्रुत (तेज) गति से बार-बार गावल जाला। 'पाती' परिवार का ओर से अपना भोजपुरिहा भाइयन खातिर परंपरा आ विश्वास के भूंइ पर कुछ मंगलकारी-लोकगीत दिहल जा रहल बा।]

(एक)

आजु सदाशिव खेलत होरी (टेक)
जटा-जूट में गंग विराजें अंग भभूत रमो री ! १ !

वाहन बैल ललाट चंद्रमा मृगछाला अरु झोरी
तीन आँखि सुन्दर चमकेला, सरप गले लिपटो री।
आजु सदाशिव खेलत होरी ! २ !

अद्‌भुत रूप उमा लखि दउरी सखियाँ संग करोरी
हँसत, लजत, मुसुकात चंद्रमा सबहिं सिद्धि इक ठौरी।
आजु सदाशिव खेलत होरी ! ३ !

लेइ गुलाल संभु पर छिरिकैं, रँग में तन-मन बोरी
भइल लाल सब देह शंभु के गण सब करत ठिठोरी।
आजु सदाशिव खेलत होरी ! ४ !

(दू)

आजु बिरिज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया !

उड़त गुलाल लाल भए बादर/केसर रँग में बोरी रे रसिया!
बांजत गुलाल मृदंग साँझ डफ/और मँजीरन जोरी रे रसिया!

फेंट गुलाल हाथ पिचुकारी/मारत भरि भरि, झोरी रे रसिया!
इत सों आए कुँवर कन्हइया/उत सों कुँवरि किसोरी रे रसिया!

नन्द गाँव के जुरे सखा सब/बरसाने की गोरी रे रसिया।
दोउ मिलि फाग परसपर खेलें/कहि कहि होरी-होरी रे रसिया।
आज बिरिज में होरी रे रसिया !

(तीन)

होरी खेलें रघुबीरा/अवध में होरी खेलें रघुवीरा।
केकर हाथ कनक पिचकारी केकरे हाथे अबीरा ?
आरे केकरे हाथ अबीरा/अवध में होरी खेलें रघुवीरा।

राम का हाथ कनक पिचकारी/ लछुमन हाथे अबीरा।
केकर भींजे केसरिया जामा/भीजेला केकर चीरा
आरे भीजेला केकर चीरा/अवध में होरी खेलें..

.

राम क भींजे केसरिया जामा/सीता के भींजेला चीरा
अवध में होरी खेलें रघुवीरा !

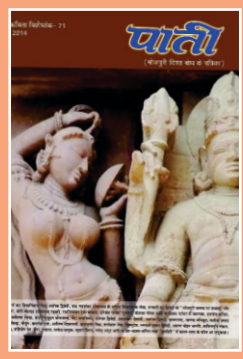

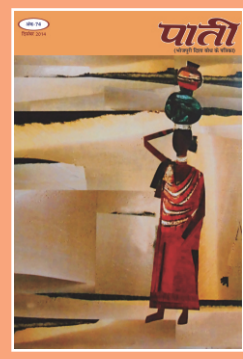

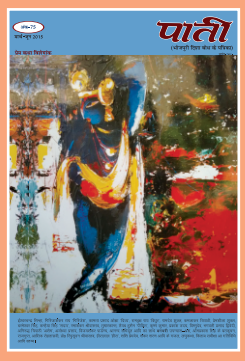

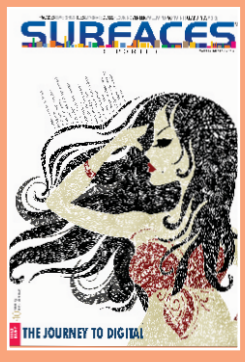

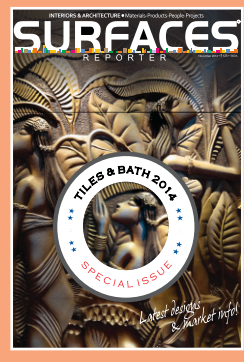

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक–सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ १११८, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-१९ से प्रकाशित।